कला-इतिहास के आयाम

लेखक
प्रो० रमेशचन्द्र गुप्त
(हिस्टोरिकल कांग्रेस कॉमेमोरेशन पक्वासा स्वर्णपदक विजेता,
नागपुर यूनिवर्सिटी)

सहायक
दीप नारायण पाण्डेय एवं मधुसूदन गुप्त

उर्मिला पब्लिकेशन्स
दिल्ली (भारत)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकाशक :

उर्मिला पब्लिकेशन्स
सी-३०२, सन्तोषी माता मन्दिर
सर्वोदय गली, पश्चिमी करावलनगर
दिल्ली-११००९४

वितरक :

उर्मिला बुक सर्विस
मेन रोड (पुस्ता) बन्शी सिंह मार्किट
पश्चिमी करावलनगर
दिल्ली-११००९४

प्रथम संस्करण : १९९१

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : १८०.००

मुद्रक :

पङ्कज प्रिंटर्स द्वारा आई०के० प्रिंटर्स, विजय पार्क
दिल्ली-११००५३

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आमुख

१५,००० वर्ष पुराने पाषाणयुगीन कंदरा चित्र 'चीनी अश्व' नामक कलाकृति से आरंभ होनेवाला कला का इतिहास 'कौरस (६०० ई०पू०)' 'द क्रीटियस बॉय', 'डोरिकोरस' व 'डाईंगगाल' जैसी कालजयी कलाकृतियों के विभिन्न दौरों से गुजरता हुआ वर्तमान दौर में प्रवेश करता है। कला का यह विस्तीर्ण, व्यापक और अथाह इतिहास, द्विआयामी त्रिआयामी कलाकृतियों का बहुआयामी इतिहास है। इसका निर्माण करने वाली कलाकृतियों में जहाँ स्वयं कलाकृतियों के विविध आयाम दिखाई देते हैं वहीं उसमें कलाकार, युग, परिवेश और समाज की मानसिकता व प्रभाव भी गर्भित रहते हैं इनका साक्षात्कार करने के लिए उतनी ही 'व्यापक' व 'सूक्ष्म दृष्टि' चाहिये।

प्रस्तुत पुस्तक में हमने यह बताने का यत्न किया है कि कला—कलाकृति—कलाकार—कलात्मक परिवेश और उनके रचना-काल में परस्पर क्या अंतर्सम्बंध है? कला—जो कलाकार व समाज की अंतर्क्रियाओं व घटनाओं को प्रतिबिम्बित करती हैं, कलाकृति के रूप में क्या-क्या सम्प्रेषित करती है?

वस्तुतः कला है समस्या के समाधान की मुक्ति। जहाँ समस्या का समाधान हो वहीं कला की सृष्टि होती है चाहे वह समस्या चित्र बनाने की हो शिल्पकारी की या कोई तकनीकी समस्या। जैसे एक समस्या थी 'वर्जिन मेरी' कृति बनाने की। पर्मिजीनिनो व सिमैब्यू ने इसका समाधान अपने-अपने ढंग से निकाला। इन दोनों कृतियों पर समाज, परिवेश, शैली व युग का कैसा रंग चढ़ा है, प्रस्तुत पुस्तक में इसका स्पष्ट वर्णन है।

कलाकृति बनती है, रेखा, रंग, आकार, स्नानादि अवयवों से जिनका कलाकृति में एक गर्भित अर्थ होता है। एक अध्याय में इन्हीं अवयवों के गर्भित अर्थों को उद्घाटित करने का प्रयास है। कृति में निहित एकता, व्यवस्था, गति, संतुलन व लय तथा विविधता-विधान, जैसे सिद्धांतों के पीछे मंतव्य को अभिव्यक्त किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक कलाकृति और कलाकार को समझने में आपकी सहायता तो करेगी ही, विभिन्न सिद्धांतों व गर्भितार्थों से युक्त कलाकृति की रचना को भी प्रेरित करेगी।

कलाकृति की रचना करते समय आवश्यक नहीं कि कलाकार के मस्तिष्क

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में उसकी स्पष्ट रूप-रेखा हो—सम्भव है जिसे बिम्बित करने की उसने योजना बनायी हो बनते-बनते कोई और रूप ग्रहण कर लें। इसका बहुत कुछ सम्बन्ध कलाकार और कलाकृति की रचना के जिम्मेदार परिवेश, काल इत्यादि से होता है। इसीलिए कलाकृति को बहुत से व्यक्ति रहस्यमयी वस्तु मानते हैं। अनेक बार कृति कलाकार से भी बड़ी हो जाती है, जो कलाकार को कालजयी बना देती है। वह ऐसे रहस्य उद्घाटित करती है जिन्हें सूक्ष्म दृष्टि का स्वामी ही जान सकता है।

इस पुस्तक को पढ़ते हुये वह मानसिक क्षमता प्राप्त हो सकती है जिसे 'सूक्ष्म दृष्टि' कहा जाता है—आप कला-इतिहासकारों द्वारा प्रयुक्त चिन्तन-विधि से अवगत हो सकते हैं।

कला के सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध कलाकार का मत है कि कला वह नहीं होती जिसे यत्नपूर्वक रचा जाए बल्कि कलाकार की तूलिका कैनवास पर स्वयंमेव जिधर से गुजरे वहीं कला का सृजन हो—तभी कलाकार सिद्धहस्त माना जाता है। किन्तु यह भी सत्य है कि कलाकार मस्तिष्क में दृश्यमान जगत के अपने अनुभवों का विशाल संसार धारण किये होता है इसलिये कृति में सायास या अनायास अर्थ आ ही जाता है। कलाकृति चाहे जितनी रहस्यमय हो किन्तु होती तो वह आँख हाथ और दिमाग की उपज ही है। इसलिये उसका विश्लेषण उतना कठिन नहीं होता जितना की समझा जाता है। आवश्यकता मात्र अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की होती है। यदि पढ़ने की समझ हो तो कलाकृति की अपनी भाषा होती है—चित्रमय भाषा—जो कलाकार के अंतर्जगत् को उजागर करती हैं, बाह्यजगत् की विलक्षणता विकृति और सौंदर्य को वाणी देती हैं।

किसी कलाकृति का अवलोकन करना या किसी वास्तुकला का साक्षी बनना सरल व एकमार्गीय कार्य नहीं होता। कृति अनेक अंतर्क्रियाओं का समूह होती है जो कृति के निर्माण काल से अवलोकन काल तक घटित होती रहती है। अवलोकन के समय दर्शक व रचनाकार दोनों की पृष्ठभूमि और स्वभाव के बीच एक जटिल अंतर्क्रिया होती है जिसके कारण कलाकृति कालांतर तक बदलती रहती है।

कलाकृतियों में न सिर्फ कला का इतिहास समाहित रहता है वरन् वह उस इतिहास को भी उजागर करती है जो विश्व की ऐतिहासिक घटनाओं से गढ़ा गया है। ऐसी कलाकृतियां वे धार्मिक-पौराणिक कथाएं कहती है जहाँ आकर मानव इतिहास करवट लेता है। कला के इतिहास में ऐसे बिम्बों की रचना हुई है जो विचारयुक्त आकृतियों की सहायता से समाज की बुनियादी व परिवर्तित धारणाओं व आदर्शों को प्रस्तुत करते हैं।

कला के इतिहास को मोड़ देने में विविध शैलियों की अहम भूमिका होती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। जहाँ साधारण शैली में एक विशेष कालावधि या संस्कृति के स्थान—कलाकार—काल वर्गीकरण की व्याख्या की जाती है, वहीं विशिष्ट शैली कलाकार की व्यक्तिगत शैली होती है जैसे रेंब्रांड की व्यक्तिगत शैली 'द रिटर्न आफ द प्रोडिगल सन' में परिलक्षित होती है जो उनकी पेंटिंग की विलक्षणता व मनोविज्ञान को उद्‌घाटित करती है। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी ही कुछ कृतियों का विश्लेषण है।

इस लघु आकारीय पुस्तक में अपने ढंग से कला के हजारों वर्ष पुराने इतिहास को समेटने की कोशिश में किसी एक विषय के छूटने या उसके सम्बन्ध में मतभेद होने की भी संभावना है जिसके संदर्भ में आपके तर्कसंगत सुझावों का स्वागत है। 'कला-इतिहास के आयाम' नामक पुस्तक के रूप में हमारे इस अकिंचन प्रयास को स्वीकार करते हुये तत्सम्बन्धी त्रुटियों से अवगत करायें, ताकि पुस्तक को अधिक उत्कृष्ट बनाया जा सके।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रकाशकीय

कला-इतिहास नामक पुस्तक को प्रकाशित करने हेतु हमारे अभिन्न मित्र सहपाठी ईश्वर शरण डिग्री कालेज, इलाहाबाद उ०प्र० के जो समप्रति श्री गंगा नाथ झा, केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ आजाद पार्क, इलाहाबाद उ०प्र० में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। श्री रामानन्द थपलियाल एम०ए [संस्कृत प्राचीन इतिहास] साहित्याचार्य, बी० लिब० एसी० का मैं आभारी हूं। लेखक ने कलात्मक ढंग द्वारा बात कर इस पुस्तक की चर्चा की एवं प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षा के क्षेत्र में उन समस्त गुरुजनों का जो कि (ईश्वर शरण डिग्री कालेज) इलाहाबाद उ०प्र० में शिक्षा के साथ-साथ हृदय-आशीर्वाद भी प्राप्त कर चुका हूँ ऋणी हूँ। गुरुजनों ने शिक्षा से आशीर्वाद प्रदान किये, मैं उसी का अनुकरण कर समस्त समय शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकों में ही लगाना चाहता हूँ। आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि गुरुजन पुस्तक पढ़ने के उपरान्त अवश्य प्रसन्न होंगे एवं सदैव एक शिष्य के रूप में आशीर्वाद देते रहेंगे। मैं प्राचार्य के साथ-साथ इस कालेज के पुस्तकालयाध्यक्ष (श्री के०एन० सिन्हा, ९० ए/१०१३ बी बाघम्बरी गद्दी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश) का भी ऋणी हूँ जो कि अध्ययन हेतु मुझे दुर्लभ पुस्तकें पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त सामान्य पुस्तकें भी प्रदान करते रहे। प्रूफ देखने में मेरी पुत्री कु० दीपमाला पाण्डेय जो मात्र १० वर्ष की है एवं धर्मपत्नी श्रीमती उर्मिला पाण्डेय का पूर्ण सहयोग रहा है। आशा है पाठक गण पुस्तक में हुई त्रुटियों को ध्यान में रखते हुए सूचित करेंगे जिससे नये संस्करण में सुधार किया जा सके। पुस्तक प्रकाशन क्षेत्र में हमारे परम मित्र एवं चचेरे भाई श्रीकान्त पाण्डेय का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने काफी समय एवं सहयोग से मुझे प्रोत्साहित करते रहे हैं एवं 'पंकज प्रिंटर्स' के श्री राजेन्द्र तिवारी जी का मैं अधिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने हर तरफ से मेरे मार्ग में प्रकाशन क्षेत्र के समस्त कार्य को अपनी कठोरतम परिश्रम द्वारा रुकावट नहीं आने दिये। इसके साथ मैं समस्त पाठक गणों से भी अनुरोध करता हूँ कि पुस्तक आप सभी को रुचिकर लगेगी एवं त्रुटियों के लिए मुझे सूचित करेंगे। क्षमा हेतु।

दीपनारायण पाण्डेय

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

पिछले कुछ वर्षों से हमारे समाज में आधुनिक या समकालीन कला के प्रति एक आकर्षण बढ़ा है। नई आर्ट गैलरियाँ खुली हैं और कलाकृतियों की खरीद-बिक्री भी बढ़ी है। पर जाहिर है कि यह दुनिया कुल समाज के अनुपात में बहुत छोटी-सी है। कितने लोग ऐसे हैं जो कला संग्रहालयों और कला दीर्घाओं में जाते होंगे या अपने घरों को समकालीन कला से सुसज्जित कर सकते होंगे।

हमें जो कुछ सुनने-पढ़ने को मिलता है, उससे यह कम महत्वपूर्ण नहीं कि हमें देखने को क्या मिलता है। दिखाई पड़ने वाले परिवेश का कितना गहरा असर होता है, इसे हम नात्सियों के चरम उदाहरण से समझ सकते हैं। हिटलर कालीन जर्मनी के वास्तुशिल्प और चीजों की बंजर या एकायामी सज्जा आदि ने लोगों की मानसिकता को दूर तक प्रभावित किया था।

समाज में इसीलिए चीजों की सज्जा और लगातार देखने को मिलनेवाली सामग्री पर बराबर एक गहरा सोच-विचार होना चाहिए। जो चीजें हमें देखने को मिलती हैं, उनके सामाजिक, अर्थिक, व्यावसायिक और हाँ, कई बार राज-नैतिक आशय भी होते हैं। और ये आशय सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के अनुसार बदलते भी रहते हैं। इसीलिए यह देखना जरूरी है कि हमें देखने को दरअसल क्या मिल रहा है।

यही देखना तकनीकी परिभाषा में कला-समीक्षा बन जाता है और बदलते संदर्भों के अनुसार कलाकृति के आशयों में होने वाले परिवर्तन कला-इतिहास के आयाम बन जाते हैं।

कला की दुनिया बहुत बड़ी है। यदि आपने त्रैवार्षिकी अंतर्राष्ट्रीय कला-प्रदर्शनी देखी होगी तो यह एहसास आपको जरूर हुआ होगा। आज कला की दुनिया केवल इसी लिहाज से बड़ी नहीं लगती कि दुनिया के तमाम देशों में अब रंग, कागज, कैनवास, स्याही व पेंसिल के अलावा अन्य ढेरों की तरह रचना-सामग्री से सैकड़ों-हजारों की संख्या में कलाकारी हो रही है, बड़ी वह इस हिसाब से भी लगती है कि संग्रहालयों, कला-दीर्घाओं, कला-संस्थाओं, कला-महाविद्यालयों आदि का जाल बीसवीं शताब्दी के आखिरी वर्षों तक बहुत फैल चुका है। इसकी सूचना हमें त्रैवार्षिकी जैसी प्रदर्शनियों में भी बार-बार मिलती है, जब कला-कमिश्नरों के परिचय के रूप में हम विभिन्न संग्रहालयों, कला-संस्थाओं और

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दुनिया के कई विश्वविद्यालयों के कला-विभागों के नाम भी पढ़ते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कला-प्रदर्शनियों में जिन्हें कमिश्नर कह कर पुकारा जाता है, वे अपने-अपने देशों के ऐसे कला विशेषज्ञ होते हैं जो अपने देश से चुने गए कलाकारों पर व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ लिखते हैं। कलाकारों के चयन में भी हिस्सा लेते हैं। इस तरह कला-समीक्षा और कला-इतिहास 'देखने' की दुनिया का एक संगठित हिस्सा बन गए हैं।

संदर्भों और आशयों के परिवर्तनों के साथ अब पश्चिम में 'आधुनिकोत्तर' (Post Modern Art) दौर की चर्चा शुरू हो गई है। इस समय स्वयं पश्चिम की कला-स्थिति तरह-तरह के कला-प्रयोग कर के थक चुकी लगती है। विभिन्न प्रकार की रचना-सामग्री और इलेक्ट्रोनिक उपकरणों से तैयार की गई कला विश्व-कला को प्रभावित करने में विफल रही है। कैनवास और कागज पर की जानेवाली कला का युग समाप्त नहीं हुआ है। और अमूर्तन (obstract) से नया कुछ निकाल पाना पश्चिम के लिए भी असंभव हुआ है। पश्चिम के कई देश कुछ एकदम नया और चौंकाऊ करने के लिए अभी भी हाथ-पैर मार रहे हैं। लेकिन आधुनिकोत्तर दौर 'आधुनिक' से निकलने की एक छटपटाहट भर लगता है। स्वयं यूरोप के बड़े कला आंदोलनों की अनुगूंज समाप्त नहीं है और इंप्रेश-निज्म, एक्स्प्रेशनिज्म, क्यूबिज्म, फॉबिज्म, सुररियलिज्म, तथा अमेरिकी पॉप-आप और ज्यामितीय प्रयोगों को बिलकुल भुला देना यूरोपीय, अमेरिकी कला-कारों के लिए सहज नहीं लग रहा है। उनकी कला में इन आंदोलनों के तत्त्व कहीं न कहीं से उभर ही आते हैं और नए काम की चाहे जैसी शब्दावडंबरी व्याख्याएं की जाएं, कोई बड़ा परिवर्तन नज़र नहीं आ रहा है।

इसका मतलब यह नहीं कि कला में कुछ नया घटित ही नहीं हो रहा है। दरअसल, करीब से देखने पर हमें कई कलाकारों के काम में अभिव्यक्ति की एक नई छटपटाहट और बेचैनी दिखाई पड़ेगी। ज्यादातर देशों के काम में हमें मनुष्य-चिंता, जीव-जंतुओं की चिंता और पर्यावरणीय च्निता समान रूप से परिलक्षित होती है। दरअसल, आधुनिक और समकालीन कला के पक्ष में यह कहना मुनासिब होगा कि उसमें दुनिया की हर छोटी-बड़ी चीज से रिश्ता कायम करने की कोशिश रही है। कृतियाँ हमें कई बार अच्छी न भी लगें, या वे कला की कसौटियों पर खरी न उतरें, तो भी हम अक्सर यही पाते हैं कि वे हमारी 'देखने' की संवेदना का विकास कर रही हैं।

यह भी आकस्मिक नहीं है कि विश्व-कला में बहुतेरे कलाकार अपने काम में 'कोलाज' के तत्त्वों का इस्तेमाल कर रहे हैं। आज जिस तरह का बिखराव चारों ओर है, और कई बार चीजें हमारे पास जिस तरह टुकड़ों-टुकड़ों में पहुंचती हैं, उसमें 'कोलाज' शैली ही चीजों को समेटने का काम कई बार कर सकती है। लेकिन जो कलाकार 'कोलाज' तत्त्वों का इस्तेमाल कर रहे हैं, वे एक नई सूझ-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बूझ की जरूरत भी महसूस कर रहे हैं। मसलन त्रैवार्षिकी में प्रदर्शित एक ब्रितानी कलाकार गिलियन आयस ने अपने पुरस्कृत चित्र 'मकर संक्रांति' में पतंगें चिपकाई थीं, लेकिन चित्र के शेष हिस्सों को और स्वयं पतंगों को अपने हाथों से रंग भी प्रदान किए थे।

समकालीन कला में तरह-तरह की रचना सामग्री और विविध शैलियों की जो एक बाढ़ सी है, उसे सहानुभूति से देखने की जरूरत है। कभी-कभी काम महज 'चौंकाने' के लिए किया जाता है। किंतु किसी अनूठे और अभूतपूर्व काम को देखते हुए पहली नजर में कला-समीक्षक को ऐसी अशंका हो सकती है। ऐसी हालत में कृति ठहर कर देखने की और धीरज से जाँचने की माँग करती है।

कलाकृति हमसे एक संवाद चाहती है। उसका मकसद केवल गुदगुदाना या फुरफुरी पैदा करना भर नहीं होता। मसलन् एक जापानी कलाकार मिरन फुकूदा के काम को लें। पहली नजर में उनके शोख और चटख रंग आँखों को चुभते हैं और आड़े-तिरछे कटे-पिटे रूपाकार सहज ही ग्राह्य नहीं लगते। लेकिन जब हम उनमें श्रमिकों, किसानों, मैदानों, पहाड़ों की एक झलक पाते हैं और उन्हीं के साथ किसी प्रयोगशाला के उपकरणों और ध्वंस के साक्ष्य भी, तो हमें यह पहचानते देर नहीं लगती कि बात विज्ञान के ध्वंसात्मक रूप की हो रही है।

कला की भाषा सार्वभौमिक मानी जाती है। इसमें किसी 'अनुवादक' के सहारे की ज़रूरत नहीं होती। कलाकृति के रूप में जो कुछ प्रदर्शित होता है, उसे किसी भी देश-समाज का व्यक्ति देख और समझ सकता है। लेकिन यह भी सच है कि कोई भी कलाकृति संदर्भ रहित नहीं होती। जब दर्शक कोई कलाकृति देखता है तो उसकी दिलचस्पी यह जानने में भी होती है कि वह किस देश की है, कलाकार की आयु क्या है? किसी देश का नाम आते ही हमें उस देश की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति का भी ध्यान आता है और उसकी कला-परंपराओं का भी।

इसी तरह किसी कलाकृति को हम उसकी रचना सामग्री के संदर्भ में भी देखते हैं। किसी खास विधा के संदर्भ में भी। कैनवास पर बनी हुई कृति का अपना एक संदर्भ होता है, कागज पर बनी हुई कृति का अपना एक संदर्भ होता है और कोई कृति ग्राफिक्स माध्यम की है तो उसका भी अपना एक अलग संदर्भ होता है। यही बात मूर्तिशिल्पों पर भी लागू होती है।

फिर तैलरंग, एक्रिलिक रंग, पेस्टल और क्रेयान रंगों का भी एक संदर्भ होता है, पेंसिल और स्याही का भी। और यह तो हम सबसे पहले देखते हैं कि किसी कलाकृति में क्या बना हुआ है। जो कुछ बना हुआ है, उसके हिसाब से भी उसे किसी संदर्भ में रखने की कोशिश करते हैं।

आधुनिक कला में एक और चीज घटित हुई है यह है—किसी कलाकृति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में एक साथ कई संदर्भों का मौजूद होना। मसलन किसी देश का कलाकार किसी दूसरे देश की कला से प्रभावित हो सकता है। और केवल कला से ही क्यों, वह किसी मित्र देश-समाज की किसी भी चीज से प्रभावित हो सकता है। उसकी जगहों से, उसके रीति-रिवाजों से या जीवन शैली से। वह वहाँ प्रचलित रंगों का इस्तेमाल भी कर सकता है। उपरोक्त 'मकर-संक्रांति' इसका उदाहरण है। इसमें गिलियन आयर्स ने भारतीय पतंगें चिपकाई हैं। यानी एक संदर्भ तो यह हुआ कि वे ब्रितानी हैं, दूसरा यह कि वह राजस्थान के रंगों और जीवन से प्रभावित हुई हैं। जाहिर है कि हम उनके काम को संदर्भ जाने बिना भी देख सकते हैं, पर अगर हम उपर्युक्त दोनों संदर्भ जान लेंगे, तो उनके काम को बेहतर ढंग से 'सराह' सकेंगे। अतः हम पाते हैं कि कला की भाषा चाहे जितनी सार्वभौमिक हो, उसके कुछ निजी संदर्भ भी होते हैं।

ये निजी संदर्भ कला से कभी समाप्त नहीं होंगे। अगर ऐसा हुआ, कला और कलाकृति के निजी संदर्भ, और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अगर समाप्त हुए, तो यह एक दुःखद बात होगी। अगर कलाकृति किसी अंधी गली में पहुंच कर भटक जाती है, तो फिर वह अपना कोई भी, कैसा भी संदर्भ कैसे बना पायेगी। संस्कृतियों और कला-परंपराओं के बीच आवाजाही की बात तो ठीक है, लेकिन यह आवाजाही ऐसी और इतनी ज्यादा भी नहीं होनी चाहिए कि कलाकृति अपने कथ्य और अपनी भाषा की पहचान ही खो बैठे।

आधुनिक या समकालीन कला भाषा का भी कोई एक ही रूप नहीं है। यह स्थिति कला के वैविध्य का कारण भी बनती है और हमें विभिन्न तरह के रचनात्मक सरोकार भी नज़र आते हैं। अमूर्तन अब उतार पर है। विश्वकला में आकृति एक नये विश्वास के साथ उभर रही है। प्रयोग भी उभर रहे हैं। आकृति की यह वापिसी या उसकी पुनः प्रतिष्ठा उल्लेखनीय बन जाती है, क्योंकि पश्चिम में पचास और साठ के दशक में ही नहीं, बाद के दशकों में भी 'मिनिमल' और अमूर्तन का दौर किसी न किसी रूप में हावी रहा है। विश्व के अन्य देशों में भी 'अमूर्तन' से ही कुछ नया निकालने की कोशिशें होती रही हैं। लेकिन वर्तमान विश्व-स्थिति में मनुष्य, प्रकृति और पर्यावरण की जो नई चिंताएं उभरी हैं, उनसे कलाकार कैसे अछूते रह सकते हैं?

'इंस्टालेशन' आकृति की वापसी को ही चरितार्थ करते हैं। किसी पेड़ के नीचे पत्थरों का रखा जाना, किसी कोने-कतरे में कोई अकेला पहिया टिका होना, या घरेलू चीजों का सुविधा के लिए किसी खास अंदाज में सजा दिया जाना, 'इंस्टालेशन' है। किसी ऊंची इमारत के बाहर बना बल्लियों-बाँस का मचान और ऊपर चढ़ता हुआ रास्ता। कपड़ा प्रेस करने की इस्तरी पर कील-काँटे जोड़ देना। दैनंदिन की उपयोगी/अनुपयोगी चीजों में कलात्मक अनुभव की रूपंकारता देखना शुरू करना•••। यह सब पारंपरिक अभिव्यक्ति के विरोध में हुआ है। कोलाज,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जक, स्कल्पचर, विभिन्न वस्तुओं को विशिष्ट क्रम देकर 'इन्स्टालेशन' के जरिए रूपंकर प्रस्तुति की नई परम्परा अब पश्चिमी देशों और जापान आदि में भी जड़ पकड़ चुकी है। 'इन्स्टालेशन' में कलाकार अपनी परम्परा से कट कर सहज रूप में चीजों से एक नया रिश्ता और एक नई सौंदर्य-चेतना स्थापित करता है। 'इन्स्टालेशन' के जरिए अपनी बात कहने वाला कलाकार, अपनी संवेदना के जरिए कला की बात को नए संदर्भ देता है।

विश्व-कला के बीच आवाजाही बहुत ज्यादा बढ़ी है और शैलियों की सीमाएं भी तेजी से टूटी हैं। ऐसी स्थिति में कई बार किसी कलाकृति के साथ एक सीधा रिश्ता सहज ही नहीं बन पाता। कला अब दर्शक से भी एक चौकन्नेपन की, तैयारी की मांग करने लगी है। पश्चिमी कला की ही बात करें तो उस जमाने से हम कितना दूर आ चुके हैं, जहाँ पिकासो, ब्राक, मीरो, डाली, मूर, मोदिग्लानि, आदि की कला 'जटिल' के साथ हमें सरल भी लगती थी। और हमारे लिए उसे याद 'रख' पाना भी सहज होता था। पर आज न तो वैसे बड़े नाम हैं, न काम की कोई शैलीबद्ध पहचान है। कला परिदृश्य दरअसल इस हद तक खुल चुका है कि कोई चीज कहीं से भी शुरू हो सकती है।

कला अगर अपने को निरंतर 'नया' करना चाहती है तो इसके कारण हैं। माना जाता है कि कानों को पुरानी ध्वनियाँ ही ज्यादा अच्छी लगती हैं लेकिन आँखें बराबर कुछ नया देखना चाहती हैं। 'नया देखना' इसीलिए जरूरी नहीं हो जाता कि पुराने दृश्य और बिम्ब उक्ताहट पैदा करने लगते हैं। 'नया देखना' दरअसल इसलिए भी जरूरी हो जाता है कि नई-पुरानी चीजों को नए अर्थ दिए जा सकें। आधुनिक और समकालीन कला अगर नए प्रयोगों और नई युक्तियों की ओर बढ़ती ही गई है तो इसका कारण यही रहा है कि पुरानी युक्तियों और अभिव्यक्तियों से काम नहीं चलता है। आधुनिक कला ने दरअसल यह संभव किया है कि हम किसी भी चीज से, किसी भी प्रसंग से, किसी भी रचना सामग्री से 'कला' पैदा कर सकें। कला के 'नए' आशयों की यह मात्रा अपने आप में नई नहीं है बल्कि कला-इतिहास का अभिन्न अंग रही है। प्रस्तुत कृति इसी यात्रा के विभिन्न पड़ावों से हमारा परिचय कराती है।

रामानन्द थपलियाल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनुक्रमणिका

I. विषय-प्रवेश १-२७

'कला' की परिभाषा

कलाकृति : क्या देखें ?

कलाकृति के कार्य

'शैली' क्या है ?

'रूप' (Form) क्या है ?

दृष्टिक युक्तियां (Visual Devices)

कलाकृति की विषय-वस्तु व अंतर्वस्तु (सार्थकता)

जानकारी प्राप्त करने का दूसरा मार्ग

परम्पराएं और प्रकार

कला-शैली का विकास

'लक्षण' (Characteristics) क्या है ?

II. संचित जानकारी पर कार्य २८-४१

कलाकृति का वर्णन व विश्लेषण

अप्रसिद्ध कृति पर जानकारी जुटाना

III. याददाश्त तेज करने के उपाय ४२-४७

याद रखने की दो विधियां

IV. 'शोधलेख' का निबंध कैसे लिखें ? ४८-५०

V. कला के अंग (आकृति के घटक) ५१-५९

चित्रों में कला-तत्त्वों के प्रभाव

VI. कलाकृति की संरचना के सिद्धांत ६०-६४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

VII. कलाकृति संबंधी जानकारी व उसकी समीक्षा ६५-७६
अभ्यास—1
,, —2
,, —3
,, —4
,, —5
उत्तर :

—o—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय-प्रवेश

कला का इतिहास तकरीबन २०००० वर्ष पुराना है। इतने लम्बे समय के इतिहास का अध्ययन करने में आपका कम-से-कम आधा जीवन काल तो नष्ट हो सकता है और बदले में आपको मिलेगा—इतिहास से सम्बंधित सामग्री का अथाह समुद्र और उलझनों का भंडार, किन्तु यदि आप कलाकृतियों को रहस्यमयी और अनूठी वस्तु न मानकर उसे उसके सामाम्य अर्थ में देखते हैं तो आपका काम आसान हो जाता है। यह छोटी-सी पुस्तक कलाकृति के ऐसे ही सामान्य पक्षों पर केन्द्रित है।

यह पुस्तक दो प्रकार से कला-इतिहास के आयाम जानने में आपकी मदद करेगी।

प्रथम, किसी कलाकृति में क्या देखा जाए ?

दूसरे, प्राप्त जानकारी को कैसे सूचित करें ? उसका वर्णन किस प्रकार करें ?

जहाँ प्रथम खंड में कला इतिहास की बुनियादी जानकारी संकलित करने की विधि बतायी गयी है, वहीं दूसरे खंड में संकलित जानकारी को प्रकट करने के नियम बताये गये हैं।

इस पुस्तक में बुनियादी शब्दों की परिभाषाएँ और कला-इतिहासकारों द्वारा प्रयुक्त चिन्तन-विधि का भी वर्णन है, जिन्हें पढ़कर आप कला-इतिहास व कलाकार्यों से जुड़ी आवश्यक जानकारी याद रखने की क्षमता प्राप्त कर लेंगे।

आखिर कला इतिहास के विषय में जानने की सार्थकता क्या है ? इसका लाभ क्या है ? क्या इसका हमारे दैनिक जीवन से कोई सरोकार है ?

जी हाँ, सरोकार है। आपने छपाई में, बिलबोर्डों पर और टी०वी० पर अनेक चमत्कारों का प्रयोग देखा होगा, वे सभी चमत्कार (विशेष प्रभाव) कलाकृति के विशाल इतिहास में कहीं न कहीं, किसी न किसी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रूप में पहले जरूर रहा है। जब आप कला-इतिहास के आयाम पढ़ते हुये, कलाकृतियों के अर्थ जानना सीख लेंगे [तो आप स्वयं किसी कलाकृति या कलात्मक कार्य को अर्थपूर्ण बनाना भी सीख जाएंगे और इसके लिये जरूरी चिन्तन का वह स्तर भी प्राप्त कर लेंगे। दृश्यमान जगत् के प्रति आप अधिक सजग हो जाएंगे, उसका विश्लेषण व व्याख्या करने की कला प्राप्त कर लेंगे जो रोजमर्रा की घटनाओं में काम आ सकती है।

कलाकृति के विषय में ठीक-ठीक निर्णय करके संतोष मिलता है और उसमें निहित विचारों की खोज करने पर मिलने वाला आनन्द व रहस्योद्घाटन करने वाली अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कला-इतिहास के अध्ययन को सार्थक बनाता है।

जिस व्यक्ति ने कुछ भी बनाया हो, वह कला के विषय में व्यावहारिक ज्ञान जरूर रखता है। कला की परिभाषा चाहे जितनी जटिल हो पर है तो वह हाथ, आँख व दिमाग की ही उपज। यदि आप यह जानते हैं कि वस्तुएं बनती कैसे हैं और दुनिया कैसे काम करती है तो कला को समझने के लिये इतनी जानकारी पर्याप्त होगी। वस्तुतः कला उतनी विचित्र नहीं होती है, जितनी आप समझते हैं, (कभी-कभी तो वह कल्पना मे भी अधिक जटिल हो सकती है) विशिष्ट कलाकृतियाँ कई बार हमें हमारे अनुभवों की सीमा बताती हैं। यदि ऐसी कलाकृतियां हमारे अपने समय-स्थान से कहीं अन्यत्र समय-स्थान पर बनीं हो तो वह मूल्यों, आस्थाओं व दृष्टिकोण को नये परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं।

प्रत्येक कलाकृति विभिन्न लोगों को भिन्न-भिन्न बातें कहती हैं, यहाँ तक कला-इतिहासकार भी कलाकृति की प्रत्येक बात पर पूर्णतया एकमत नहीं होते। परन्तु वे कलाकृति के अनेक पक्षों पर काफी हद तक सहमत रहते हैं—जैसे, कलाकृति कैसी बनी है, ? कैसी दीखती है ? वह कब और कहाँ बनी है ? उक्त तथ्य अनेक विश्लेषणों को सीमित करते हैं।

कला इतिहास के महासागर का मंथन करने के लिये सामान्यतः विशालकाय, मँहगी-मँहगी पुस्तकों से माथापच्ची करनी होगी। इन्हें पढ़ते हुये आपको विकट आत्मानुशासन कायम रखकर उसमें चित्रित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनेक बिम्बों और असंख्य विचारों को याद रखना होगा, जो बड़ी टेढ़ी खीर है। किन्तु ध्यान रखें कि इन मोटी-मोटी पुस्तकों की मोटाई उनमें मौजूद असंख्य चित्रों व उनके 'अनूदित' वर्णनों के कारण है। यदि आप स्वयं अपना अनुवाद करें तो पुस्तक का विशाल हिस्सा मात्र समीक्षा की वस्तु रह जाएगा। इसके अलावा, कला-इतिहास के कुछ ऐसे आदर्श पुस्तक में दिये गये हैं जो आपको इसके आयामों से सम्बंधित हजारों निजी-विम्बों और विचारों को जानने की कुंजी सौंप देंगे। यदि आप इन आदर्शों को जान जाते हैं और उन्हें अपनी व्यावहारिक जानकारी से जोड़ते हैं तो अनिवार्य सामग्री और विचार अपने मस्तिष्क में कैद करना और आसान हो जाएगा।

वस्तुतः 'देखना' ही स्वयं में एक श्रमसाध्य और रचनात्मक कार्य है। दैनिक जीवन में देखी गयी प्रत्येक वस्तु हमारे अर्जित स्वभाव के द्वारा कमोवेश विरूपित रूप में दीखती है, विशुद्ध रूप में नहीं। हमारे आधुनिक युग में सिनेमा, इश्तिहार व पत्रिकाएँ ऐसे-ऐसे बिम्ब प्रस्तुत करते हैं जो भ्रामक होते हैं। वस्तुओं को विशुद्ध रूप में ग्रहण करना भी बड़े साहस का कार्य है।

'कला' की परिभाषा

निजी कलाकृति बेहद जटिल वस्तु होती है (चित्र-१) जो कला की परिभाषा को अधिक जटिल बनाती है। फिर भी जब हम 'कला' शब्द का प्रयोग करते हैं तो आमतौर पर हम समझ जाते हैं कि हम किस विषय पर बात कर रहे हैं। यहाँ कला की चार उपयोगी परिभाएँ प्रस्तुत हैं—

कला : दृश्य (Visual) भाषा के रूप में कार्य करने वाले दृश्य-तत्वों के विन्यास के रूप में—

यह सबसे सरल परिभाषा है। कलाकृति (कला की वस्तु या वस्तु-कला का कोई कार्य) दृश्य तत्वों का एक संभावित विन्यास है। परन्तु यह परिभाषा अपूर्ण है क्योंकि यह कला को दृश्य अनुभव के अन्य स्रोतों से अलग नहीं करती, जैसे प्रकृति भी दृश्य-तत्वों का ही विन्यास है, क्योंकि आँखों के लिये समूचा दृश्य-अनुभव विभिन्न रूप से प्रदर्शित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रेखाओं, रंगों, मूल्यों (हल्के व गहरे), आकार, बनावट और स्थान तक सीमित होता है। चित्रकला व वास्तुकला में इन तत्वों का प्रयोग विविध विन्यासों में किया जाता है। जिससे एक ऐसी संकेन्द्रित शक्ति पैदा होती है जो यह बताती है कि हम क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं और क्या कार्य करते हैं। इस दृष्टि से कला हमसे सदा दृश्य-भाषा में 'बोलती' है। इसकी दिलचस्प बात यह है कि यह शब्दों से भी परे बहुत-कुछ कह जाती है, शब्दों में अभिव्यक्त न होने पर भी इसका प्रभाव कम नहीं होता।

कला : उद्देश्य की पूर्ति के लिये कलाकार की विशेष पसंद के रूप में—

जैसा कि पहले बताया गया है कला प्रकृति से भिन्न है। जो कला-कृतियां प्रकृति से बहुत-कुछ मेल खाती हैं वह भी कलाकार की पसंद, उसके किसी उद्देश्य या दृष्टिकोण से निर्देशित होकर चित्र-रूप धारण करती है। यह एक प्रकार की पुनः प्रस्तुति होती है।

किन्तु यह परिभाषा कलाकृतियों और जननिर्मित अन्य वस्तुओं में भेद नहीं करती। जबकि सत्य यह है कि छोटी-छोटी मशीनों से लेकर मास्टरपीस तक की समस्त चीजों में कुछ न कुछ विलक्षण गुण होता है, यही गुण उसे भिन्नता प्रदान करता है। सभी वस्तुओं में एक चीज आम होती है और वह है उनके निर्माण के लिये जरूरी 'विचार-प्रक्रिया'। कला मानवीय पसन्द की उपज होती है इसलिये वह बोधगम्य होती है। यह मानवीय पसन्द उसकी आवश्यकताओं और उद्देश्यों पर टिकी होती है। अतः कलाकृति की रचना, एक वस्तु या भाषा के रूप में किसी न किसी मकसद के मद्देनजर की जाती है।

कला : अन्तर्क्रियाओं व घटनाओं के समूहों के रूप में—

कला को महज कोई वस्तु—जैसे चित्रकारी या वस्तुओं का कोई वर्ग – जैसे वास्तुकला ही नहीं मानना चाहिये—उसे अन्तर्क्रियाओं का समूह मानना चाहिये (कला की उपरोक्त दोनों परिभषाएँ इसके अनु-कूल है। पहली परिभाषा का सम्बन्ध निजी तत्व-शक्तियों की बीच की अन्तक्रिया से है तो दूसरी का सम्बन्ध कलाकार की आकांक्षा और उसके सामने आने वाली सीमाओं की अन्तर्क्रिया से है) सबसे स्पष्ट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अन्तर्क्रिया घटित होती है, कलाकृति और दर्शक के बीच में। ध्यान रहे कि किसी कलाकृति को देखना, आसान या एकमार्गीय कार्य नहीं है। वह एक ऐसी जटिल अन्तर्क्रिया होती है जो समक्ष मौजूद कलाकृति की निहित-शक्ति तथा मूल व समकालीन परिवेश की निर्माता-शक्ति एवं दर्शक व कलाकार की पृष्ठभूमि और प्रवृत्ति या झुकाव के बीच घटती है। कुछ अन्तर्क्रियाएं कलाकृति के जीवनपर्यन्त बदलती रहती हैं। अतः कलाकृति प्रत्येक अवलोकन पर अन्तर्क्रियात्मक होती है, रचनात्मक होती है।

कला : मानवीय-मानस के दस्तावेज के रूप में—

कलाकृति एक वस्तु होती है—कला इतिहासकारों के निष्कर्ष बहुधा इन्हीं वस्तुओं से प्रमाणित होते हैं। उनकी दृष्टि से कलाकृति की व्याख्या 'सूचना-सूत्र' या दस्तावेज के रूप में की जा सकती है। उसके दृश्य व परिस्थिति सम्बन्धी तथ्य उसी प्रकार पढ़े जा सकते हैं, जैसे कोई दस्तावेज पढ़ा जाता है। कोई अकेला दस्तावेज मात्र आंशिक जानकारी देता है, कला-इतिहासकार कला की कहानी रचने के लिये कलाकृतियों के समूह को एक शैली के रूप में देखते हैं। कला का इतिहास प्रायः उनकी शैलियों के बदलते अवलोकन का वर्णन करता है। वह कला के स्वरूप को रचने वाले छोटे-बड़े निर्णय और घटनाओं की आधी सच्ची आधी काल्पनिक कहानी होता है।

अर्थात्, कला इस बात का प्रमाण होती है, कि लोग किस तरह निर्णय लेते हैं, अर्थ रचते हैं। वह मानव-मस्तिष्क की कुछ अत्यन्त जटिल प्रक्रियाओं की साक्षी होती है।

कलाकृति : क्या देखें ?

कलाकृति में से ही जानकारी एकत्र करने के लिये उससे सम्बन्धित तीन भिन्न किन्तु एक दूसरे से जुड़े विषयों के प्रश्नों पर विचार करना होगा। इन प्रश्नों के आधार पर जानकारी प्राप्त करने के लिये आपको अधिक व्यापक विचारों की जाँच करनी होगी। इनमें से बहुत से विवरण अनावश्यक होते हैं, उनसे अधिक महत्वपूर्ण विवरणों पर विस्तृत विचार करना जरूरी होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकृति किसने बनायी थी, कब और कहाँ बनायी थी ? उसके बारे में और कौन-सी परिस्थितियाँ आपको ज्ञात है ? उसका प्रयोग कैसे किया गया था ? इन प्रश्नों के उत्तर कलाकृति के तथ्य की जानकारी देंगे।

आकृति-निर्माण के जुड़े प्रश्न कलाकृति के स्वरूप को उजागर करेंगे। आपको देखना है कि उसके दृश्य-तथ्य (visual facts) क्या है ? कलाकृति के निर्माण में किस सामग्री और तकनीक का प्रयोग हुआ है ? उसका विन्यास कैसे किया गया है ?

कलाकृति में विम्ब-योजना पर प्रकाश डालने वाले प्रश्न हैं : कलाकृति कौन से बिम्ब प्रस्तुत करती है, कौन-सी कल्पना-प्रदर्शित करती है ? उसमें व्यक्त भावनाएं कौन-सी हैं ? क्या किसी प्रतीक का प्रयोग किया गया है ? यदि हाँ, तो कौन-सा ?

कलाकृति से जुड़े अन्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना भी उपयोगी होगा। कलाकृति सामान्य रूप में तथा उसमें निहित विवरणों की दृष्टि से जैसे वह दिखायी देती वैसी क्यों है ? प्रत्येक कलाकृति प्रायः किसी मकसद से बनायी जाती है इस कृति का क्या मकसद है ? अन्य कलाकृतियों से उस कलाकृति की, आकृति व बिम्ब-निर्माण की दृष्टि से क्या तुलना है ?

कलाकृति की ऐतिहासिक समझ प्राप्त करने के लिये तथ्य के प्रश्न पर विचार करना अधिक महत्वपूर्ण है; यह सबसे बुनियादी प्रश्न होता है। एक व्यक्ति जिसे तथ्य समझे, दूसरे के लिये वह कल्पना हो सकती है किन्तु कुछ जानकारी के विषय पर अधिकांश लोग सहमत होते हैं। कलाकृति की रचना का 'काल' व 'स्थान' सम्बन्धी तथ्य, उस कलाकृति को, किसी एक कालक्रम में, अन्य कलाकृतियों से अलग करते हैं। व्यापक-सहमति प्राप्त ऐसे तथ्य अन्य अनेक प्रकार की जानकारी देते हैं—जैसे कलाकृति की दशा क्या है ? उसके आयाम कौन से हैं ? उसका भुगतान किसने किया ? कलाकार ने उसके बारे में क्या कहा था ? उसका मौलिक प्रयोग किस प्रकार किया गया था !

कलाकृति के कार्य

अधिकांश पूर्व-आधुनिक कलाकृतियाँ, समाज की वास्तविक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आवश्यकता की पूर्ति के लिये की जाती थी। हालाँकि उपयोगी कलाकृति का विचार बीसवीं सदी के सन्दर्भ में विवादास्पद हो सकता है। कलाकृतियों के चार मूलभूत कार्य हैं। आधुनिक कला में पांचवें कार्य का सुझाव भी दिया गया है।

१. अभिलेख (Record) बनाने के लिए—जहाँ कहीं किसी एकाधिक कारण से किसी वस्तु को सुरक्षित रखने की जरूरत पड़ी, कला ने उसके स्थान पर रखे जाने योग्य चित्रों की रचना की। इसका एक नमूना है—मानचित्र (Map) जिसे अभिलेख के रूप में प्रयोग किया जाता है।

२. दृष्टांत देने के लिये—कला ने ऐसे कल्पना-बिम्बों और आकृतियों का सृजन किया है—जिसका सम्पूर्ण या कुछ अंश कोई कहानी सुनाते अथवा अभिलेख-बद्ध की जाने योग्य घटनाओं को प्रदर्शित करने में हो सकता है। समूची धर्मसंबंधी कला का विशाल भाग इसका नमूना है।

३. नयी धारणाओं व आस्थाओं को व्यक्त करने के लिये—कला ने ऐसी कल्पना-सृष्टि की जिसने वैचारिक आकृतियों की सहायता से समाज की बुनियादी धारणाओं व सर्वमान्य आदर्शों को प्रस्तुत किया है··· । उसने जनमानस को नये और भिन्न मतों के प्रति सहमत कराने के लिये भी अनेक बिम्बों की रचना की है।

४. सौंदर्य बढ़ाने के लिये—कला ने अपनी रंग-बिरंगी छटा बिखेर कर नेत्रों को प्रसन्नता, मस्तिष्क को आनन्द और विश्व को सुंदरता प्रदान की है। आकृति, विन्यास, रंग, गुण या अलंकार के विशिष्ट संयोजन, दिये गये समाज के इस उद्देश्य को पूरा करते हैं। यह संयोजन इस पर निर्भर रहते हैं कि समाज को कला से किस उदाहरण, धारणा या प्रेरणा की आशा है।

५. यथार्थ को पुनः परिभाषित करना—"वर्तमान कला का ध्येय यथार्थ की खोज कर उसे परिभाषित करना। उसका सम्बन्ध ऐसी गतिविधियों से है जो पहले कभी दार्शनिकों, पादरियों, मनीषियों, विद्वानों से जुड़ी थी और आज भी जुड़ी है। कला का यह कार्य अब 'छायाकार, चित्रकार, डिजाइनर, कार्टूनिस्ट, करने लगे हैं। बेशक वे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यथार्थ को भी लेते हैं किन्तु प्राचीन कलाकारों की तरह नहीं—जो यथार्थ को स्वयं न खोजकर, परिभाषित न कर सीधे-सीधे आकर्षक, विश्वसनीय और मूर्त रूप में रख देते थे, चाहे इससे उसकी कोई भी परिभाषा उभरे। मसलन 'दी स्क्रीन' में मुंच यथार्थ को मनोवैज्ञानिक व भावात्मक मानते प्रतीत होते हैं। यह एक विषयगत (Subjective) दृष्टिकोण है, उन्होंने ऐसा दृष्टिकोण विकसित किया जो यथार्थ की कतई नयी परिभाषा थी और वह प्रचलित नहीं थी।

शैली क्या है ?

कला इतिहासकारों द्वारा प्रयुक्त शब्द 'शैली' एक जटिल विचार का नाम है, आमतौर पर यह किसी कार्य को करने का एक तरीका है। और स्पष्ट कहा जाए तो कला में शैली उन विभेदात्मक (विभाजक) लक्षणों को कहते हैं जो दर्शक को, एक के साथ दूसरी कृति का सम्बन्ध जोड़ने में मदद करते हैं...यह एक ऐसी संज्ञा है जिसके अंतर्गत कृतियों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

शैली दो प्रकार की होती है। प्रथम, साधारण शैली—ऐसे लक्षण जो कृतियों को काल-अवधि, संस्कृति या शैली से जोड़े—यथा, 'काल—स्थान—कलाकार— 'वर्गीकरण। दूसरी विशिष्ट शैली जो कलाकार की अपनी निजी शैली होती है। [आकृति-१]

सामान्य पक्ष कौन से हैं ?

१. स्वरूप (Form) या व्यापक अर्थ में कलाकृति 'कैसी' बनी है, उसमें कला के कौन-से तत्व या संघटक सिद्धांतों का प्रयोग हुआ है। किस तकनीक को अपनाया गया है; उसमें दृश्य-प्रकृति का क्या प्रभाव दिखायी देता है। कलाकृति का 'स्वरूप' उसे किसी शैली-विशेष से जोड़ता है।

२. विषय-वस्तु—या कार्य जो किया गया हो। चित्र की विषय-वस्तु को अनेक शाखाओं में विभक्त किया जा सकता है—जैसे धार्मिक, पौराणिक, रूपक, रूप-चित्रण, स्थिर-चित्रांकन, प्राकृतिक दृश्य तथा दैनिक जीवन के दृश्य। गूढ़ या चित्र-इतर विषय वस्तु को, कलाकार की मंशा या रुचि से उत्पन्न कथ्य अथवा मुख्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आकृतियों के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है। इसी तरह वास्तुकला की विषयवस्तु का आधार कोई ईमारत विशेष हो सकती है।

३. सार्थिकता या कलाकृति क्यों बनायी गयी है? इसमें, कला-सम्बन्धी वातावरण एवं कलाकार के मनोविज्ञान के प्रभाव सम्मिलित हैं। यह ऐसे मुख्य दो धारक हैं जो बताते हैं कि कोई कलाकृति 'क्यों' बनी है। या जैसी नजर आती है वैसी क्यों है? कृति के अर्थ व सार्थकता का निर्माण सामान्य और व्यक्तिगत दृष्टिकोण, मूल्य और आस्थाएं करती हैं। यह सब उस रचना में विद्यमान रहता है।

'दी रिटर्न आफ दी प्रोडिगल सन' (खर्चीले पुत्र की वापसी) शीर्षक वाली रेम्ब्रां की कृति से उनकी शैली पर विचार करो। जब कला इतिहासकार उनकी शैली की चर्चा करते हैं तो उनका आशय, उनके (रेम्ब्रांट थे) पसंदीदा विषय, उभारी गयी आकृतियों, व व्यक्त अर्थ के संदर्भ में उनकी पेंटिंग की विलक्षण एवं खास विशेषताओं से होता है। इसलिये उनकी शैली के वर्णनमें उनकी आकृतियों का उल्लेख पायेंगे। उनका सामंजस्यपूर्ण, संतुलन, नाना रंगों की रचना और प्रकाश-योजना के जरिये उन्होंने जो विविधता उत्पन्न की है, उसका उल्लेख पायेंगे। कुछ ऐसे विषय भी उल्लेखनीय हैं जो उनके समय के उच्च-पेंटरों के पसंद के थे जैसे व्यक्तिगत रूप-चित्रण। हालैंड के कुछ चित्रकारों की तरह उन्होंने धार्मिक भावना व्यक्त करने वाले चित्र भी उन्होंने बनाये थे। उनके उस महौल के प्रभाव की चर्चा मिलेगी जिसने उनके जीवन को रूप दिया, उनके कार्य पर प्रभाव डाला। जिस प्रकार से 'उच्च प्रोटेस्टेंट का दृष्टिकोण धार्मिक कथाओं में मनुष्य के महत्व को उभारना है उसी प्रकार रेम्बेंट की प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान दिव्यता में बढ़ती दिलचस्पो का जिक्र मिलेगा—फिर चाहे वह १७वीं सदी के गरीब और उपेक्षित लोग ही क्यों न हों।

रूप (Form) क्या है?

कलाकृति के रूप सम्बन्धी पक्ष से, अर्थात् वह 'कैसी' बनी है इस प्रश्न के उत्तर से महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। चूंकि स्वरूप, कलाकृति को शैली-विशेष के अंतर्गत रखने के लिये भरोसेमंद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सूच देता है, यह शब्द व्यापक रूप से प्रयुक्त होता है अतः इसकी कुछ और स्पष्ट परिभाषा जरूरी है।

संकीर्णतम अर्थ में रूप आकृति का पर्याय है—जो इस खण्ड में वर्णित एक कलातत्व भी है।

व्यापक अर्थ में, इसका अर्थ है कलाकृति के दृश्य-घटकों में मौजूद ऐसा 'सम्बन्ध' जो उसे विशिष्ट रूप प्रदान करते हैं। मसलन, गोया का 'दी थर्ड ऑफ मई, १८०८' में आन्तरिक विवरण देने की बजाय आकृतियों की बाह्य-रेखा पर अधिक बल दिया गया है। इस कृति में सामान्य स्पॉट-लाइट, सशक्त विकर्ण—गति एवं नाना किस्म की सामान्य विषमताएं (Contracts) इस्तेमाल की गयी है। यह सभी दृश्य-घटक तथा उनके सम्बन्ध (कलातत्व व संघटन के सिद्धान्त) इस पेंटिंग के (Form) 'स्वरूप' हैं।

रूप या आकृति के घटक (Components of forms)

कला के तत्व—कला के छः तत्व हैं—रेखा, रंग, मूल्य, आकार, बनावट और स्थान। यह दोनों तत्व नेत्रों द्वारा ग्राह्य सबसे मूलभूत घटक हैं। (इनका वर्णन अगले पृष्ठों में अन्यत्र किया गया है)।

दृष्टि युक्तियाँ (Visual Devices)

चित्रों प्रभाव उत्पन्न करने वाली युक्तियाँ—

कला-तत्वों एवं संघटक-सिद्धान्तों से सम्बन्धित वे युक्तियाँ जो कलाकृति का 'प्रभाव' उत्पन्न करती हैं और उसके विश्लेषण में मार्गदर्शक होती है, दृष्टिक-युक्ति कहलाती है। यह उन दृष्टिक पक्षों (कला-तत्व का बिम्ब) के संयोजन का नाम है जिनका विन्यास विशेष प्रभाव या प्रभाव-समूह उत्पन्न करने के लिये किया जाता है। यह साधारण हो सकती है जैसे गति या भावना का प्रभाव पैदा करने के लिये तिरछी विकर्ण रेखाओं का प्रयोग करना, या फिर जटिल हो सकती है—जैसे कुछ नियमों के अन्तर्गत नाना रूप से संयोजित तत्वों से बने रैखिक या प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण की प्रणाली। इस युक्ति के प्रभाव भी जटिल होते हैं। मसलन, लियानार्दो का यथार्थचित्रण 'लास्ट सपर', कृति में स्थान का भ्रम, मनोवैज्ञानिक बल तथा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संघटनात्मक केन्द्र उत्पन्न करता है।

इन युक्तियों के चार अहम सिद्धान्त हैं; समीपता, समानता, निरन्तरता व संवरण।

१. समीपता (Proximity) चित्र में एक-दूसरे के निकट स्थित ऐसे पक्ष जो एक समूह का बोध दें। लियोनार्दो के 'लास्ट सपर' में अनुयायियों का समूह इसी सिद्धान्त का एक उदाहरण है।

२. समानता—चित्र के ऐसे एक समान पक्ष जो किसी सम्बन्ध का बोध दें। लियोनार्दो के 'लास्ट सपर' में ईसा के सिर पर स्थित घुमावदार कंगूरा (यह आभामंडल का प्रभाव धारण किये है) उनसे न सिर्फ समीपता के कारण जुड़ा है वरन् उसकी लम्बाई भी उनके (ईसा के) फैले हाथों के बराबर है।

३. निरन्तरता (Continuety)—चित्र के ऐसे बाधा रहित पक्ष जिनसे रेखा का बोध होता है। 'लास्ट सपर' में दीवाल से कुछ हटकर बने किनारे के पैनल अपनी नोकों पर से एक रेखा बनाते हैं, जो हमारी दृष्टि को ईसा की ओर ले जाती है।

४. संवरण (Closure)—चित्र के अधिक समीपस्थ रेस पक्ष को पूर्णता का बोध देने वाली सम्पूर्ण आकृति या बाह्य रेखा को पूर्ण करते हैं। लास्ट सपर के पैनल के नोकों पर बनने वाली रेखा एवं चित्र की चोटी पर स्थित किनारी से एक त्रिकोण-सा बनता है। इस त्रिकोण से एक तीर का बोध होता है जिसकी नोक ईसा की ओर इशारा करती है।

चित्र की इन युक्तियों के कार्य

१. रूप सम्बन्धी कार्य—कलाकृति के विन्यास में चित्रों की इन युक्तियों की एक खास भूमिका होती है। लियोनार्दो के 'लास्ट सपर' में किया गया चित्रण, दर्शक को चित्र केन्द्र बिन्दु की ओर ले जाने वाली युक्ति रखता है क्योंकि इस यथार्थ चित्रण के एक अंश का समापन बिंदु ईसा के सिर के पीछे स्थित है और वही मुख्य विषय है। यह इस दृष्टिक-उपाय का रचनात्मक पहलू है।

२. विश्लेषण-कार्य में उपयोगी—यह युक्तियां विश्लेषण को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

निर्देशित करने वाले प्रभावों और भावों के चित्रण में एक भूमिका निभाती है। ईसा के शीश को केन्द्रित करने वाला चित्रण, उनके अनुयायियों की भिन्न-भिन्न मुद्राओं के आगे ईसा की शान्त मुद्रा, का चित्रण इस पेंटिंग में एक खास प्रभाव पैदा करता है। और यही इन युक्तियों का प्रभावशाली पक्ष है।

कलाकृति का मसाला

तरह-तरह के बिम्बों में चित्रित घटनाएं कलाकृति का मसाला होती हैं। यह मसाला या विषय-वस्तु अनेक प्रकार की हो सकती है। वैसे इनके प्रमुख रूप हैं। धार्मिक, पौराणिक, रूपक, रूप-चित्रण, स्थिर जीवन, प्राकृतिक-दृश्य तथा दैनिक जीवन के दृश्य। प्रत्येक वर्ग के कुछ मानक लक्षण हा सकते हैं जो चिरकाल तक कायम रहते हैं। मसलन ग्योटो के 'लेमेंटेशन' में ईसा की माता द्वारा नीला लबादा धारण करना।

विषय-वस्तु के पहलू

प्रमुख—किसी बिम्ब के तथ्य व चित्र सम्बन्धी पक्षों का स्पष्ट रूप—मसलन, महिला। खिन्न महिला—या चित्र-इतर कलाकृति में रेखा ऊर्जस्वी रेखा।

गौण या पारम्परिक विषय वस्तु—इसमें किसी वस्तु या बिम्ब की विशिष्ट पहचान करना होता है। इसके लिये नाना प्रकार के पारम्परिक चिह्न, प्रतीक एवं प्रतीकात्मक लक्षणों का ज्ञान होना आवश्यक है। जैसे सिमैव्यू की कृति 'मेंडोना एथ्रोड···' में महिला का नीला लबादा, उसका आभामंडल, गोद में बालक ईसा और उसकी मुद्रा तक उसके मेरी होने का प्रमाण देती है। इसकी पहचान के लिये कथ्य की जानकारी होना जरूरी है।

हमने कलाकृति में से ही प्राप्त होने वाली जानकारी का उल्लेख किया। इस प्रकार की जानकारी एकत्र करके आप पिछले खंड में रखे गये प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं किन्तु विश्लेषण के प्रश्न चित्रों से अलग जानकारी प्राप्त करनी पड़ेगी—कलाकार और उनके परिवेश (माहौल) की जानकारी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आपको जानना होगा कि कलाकार किस काल में और कहाँ का रहने वाला था, उसके जीवन की दूसरी स्थितियाँ क्या थीं, वह किस प्रकार सोचता था, उसकी रुचि, मूल्य, आस्था व नजरिया क्या था, प्रशिक्षण कैसा मिला था और उसने किस सीमाओं में बंधकर कार्य किया था।

कलाकार की अपने बारे में किस प्रकार की छवि थी ? जिस माहौल में वह रहता था उसके बारे में उसकी क्या राय थी ?

कलाकार ने अपने कलात्मक माहौल को कैसे प्रभावित किया कालांतर में उसके विचार क्यों और कैसे बदले ?

माहौल से जुड़े सवाल

कलात्मक माहौल का अर्थ संकीर्ण रूप में कलाकार की कार्यशाला या संस्था और व्यापक रूप में उसके समाज या संस्कृति से लगाया जा सकता है।

इसमें देखना होता है कि माहौल के भौतिक लक्षण क्या थे ? वह कहाँ पर स्थित था ? वह कब पनपा और कब तक क़ायम रहा ?

उसका नियन्त्रण करने वाली सरकार का रूप क्या था ? उसका आर्थिक ढाँचा कैसा था ? कौन-सा धर्म प्रचलित था ? कालांतर में यह सब कैसे बदला ?

समाज की नजर में आम कलाकार और खास कलाकार की क्या छवि थी ? समाज की अपनी छवि कैसी थी ?

माहौल ने वही कलाकृति क्यों रची थी ? उसने कलाकार को कैसे ढाला ? उसमें बदलाव कैसे आया ?

कलाकृति की अन्तर्वस्तु (Content)

कलाकार और उसके माहौल से जुड़े सवालों का सम्बन्ध शैली के इस तीसरे पहलू 'अन्तर्वस्तु' से मानी कृति का निर्माण क्यों किया गया है, इससे है। [आकृति-७]

यह कलाकृति का वह महत्व होता है, जो कुछ तो सांशय और कुछ उस प्रसंग का प्रतिबिम्ब होता है ; जिसमें कृति की रचना होती है। यह कलाकृति के आन्तरिक व बाहरी प्रभाव उसके रूप, विषय-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वस्तु एवं अर्थ को प्रभावित करता है। इसका आशय उन विचारों से भी है जो कृति से स्वयं प्रवाहित होते हैं और जो समकालीन कृतियों का या बाद के विषयों का विश्लेषण करने पर उत्पन्न होते हैं। 'लास्ट सपर' अन्तर्वस्तु के सभी स्तर दर्शाता है : अन्तर्वस्तु के पक्ष—

आन्तरिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव

(अ) कलाकार का खास नजरिया, मूल्य व आस्थाएं—लियोनार्दो की कलाकृतियों के रूप और विषय देखने पर आपको एक ऐसे व्यक्ति की छवि मिलेगी जिसने अचूक माप, गणित की गणना और प्रकृति को प्रत्यक्ष देख-परख कर उन्हें प्रस्तुत किया था। उन्होंने प्रकृति को ज्ञान का अन्तिम-स्रोत माना। उनके इस ज्ञान ने व्यावहारिक ज्ञान से संगम करके उन्हें कलाकार के साथ अभियंता भी बना दिया।

(ब) कलाकार की विशेष मंशा—लियोनार्दो का सर्वोपरि लक्ष्य या मानवीय आत्मा की आकांक्षा को व्यक्त करना और प्रकृति की एकता की खोज करना। उन्होंने अपने संरक्षक स्कोर्जा को खुश करने के लिए मिलन से संत मारिया डेली ग्रेजी के मठ के भोजन-कक्ष को 'लास्ट सपर' से अलंकृत किया। वह प्रायः सामग्री और क्षण को व्यक्त करने में नये-नये तरीकों का इस्तेमाल करते थे, और करना चाहते थे।

(स) कलाकार पर अतीत और वर्तमान का प्रभाव, प्रशिक्षण व रुचि—लियोनार्दो का प्रशिक्षण वेमोचियों की कार्यशाला में (फ्लोरेंस) हुआ था। यहाँ पर अध्ययन करते हुये उन्होंने कास्टेम्नो के 'लास्ट सपर' को देखा होगा। यह कृति भी एक भोजन कक्ष में लगी है और बाद में बनी लियोनार्दो थी मुख्य कृति के लक्षणों से मेल खाती है।

माहौल से उत्पन्न बाहरी प्रभाव

(अ) जलवायु और भूगोल, आसपास के क्षेत्र का विस्तार, उनकी समीपता—लियोनार्दो ने इटली में कार्य किया था जो आल्प्स के द्वारा शेष यूरोप से भौगोलिक दृष्टि से कटा हुआ था। लियोनार्दो

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जैसे दूसरे इतालवी कलाकारों की आजाद-खयाली इसी आजादी की उपज हो सकती है।

(ब) समाज का ढाँचा—(यानी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संगठन)—लियोनार्दो का इटली 'लास्ट सपर' की रचना के समय (१४६५-६८) राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त अस्थिर था। उस समय लियोनार्दो एक शाही माहौल में मिलन के ड्यूक के लिये कार्य करते थे।

(स) सांस्कृतिक आवश्यकता—यह उद्देश्य व कार्यों में रूपांतरित हो जाती है। धार्मिक व दार्शनिक मान्यताओं से जुड़ती है। इटली में रिनेंसा (पुनर्जागृति) काल में ऐसा स्पर्धात्मक दृष्टिकोण व्याप्त था जिसने कला में उत्कृष्टता, शोभाव, आविष्कार के गुणों को उभारा। जब मिलन के ड्यूक ने संत मारिया डेली ग्रेजी स्थल को अपना दरबारी चर्च व खानदान का कब्रिस्तान निश्चित किया तो वहाँ के भोजन कक्ष को सजाने की आवश्यकता हुई तब 'लास्ट सपर' का सृजन किया गया।

(द) अतीत की परम्परा का असर—लियोनार्दो पर धार्मिक कथ्य के मानवीकरण ने, १५वीं सदी के विचारों व सामग्री के सयिक के रूप ने और प्राचीनता को नयापन देने के कलाकार के नये रूप का काफी असर पड़ा था।

प्रथा, समानांतरता और प्रगति को चित्रांकित करने वाली कलाकृति का विश्लेषण—लियोनार्दो के लास्ट सपर को देखने पर, उसके बाद सैकड़ों साल तक बारोक-काल द्वारा विकसित अनेक गुणों से साक्षात्कार होता है। उन्होंने (लियोनार्दो ने) अपनी पसंद के विषय को व्यक्त करने में कोई कसर न छोड़ी। अपनी कल्पना की अग्नि और परख करने की शक्ति लेकर उन्होंने मानवीय वस्तुओं के माध्यम से दिव्य-वस्तुओं की स्तुति की। इस चित्र के विश्लेषण में वह नहीं देखा गया जो लियोनार्दो ने प्रस्तुत किया या बल्कि वह देखा गया जिसका अर्थ बाद में निकाला गया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जानकारी प्राप्त करने का दूसरा मार्ग तुलना

किसी कलाकृति, कालाकार व उसके माहौल को समझने के लिये, सम्बन्धित कलाकृतियों कलाकारों व उनके माहौल से उसकी तुलना कीजिये—यह जानकारी हासिल करने का दूसरा तरीका है। दो या अधिक कलाकृतियों, कलाकारों व परिवेशों के बीच अनेक कारण सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। मसलन, कलाकृति का रूप या बिम्ब, उसके कलाकार की रुचि, उसके माहौल से जुड़ी धार्मिक मान्यता। *तुलना का सबसे महत्वपूर्ण घटक है, काल व स्थान।* इन पर आधारित तुलना अतीत की शैली के अनेक रूप प्रस्तुत करती है साथ ही ऐसी सूचनाएं भी देती है जो आगे शोध करने और अंतिम विश्लेषण करने में मार्गदर्शक होती है। एक ही स्थान के भिन्न-भिन्न कलाकारों, कलाकृतियों व वातावरण की तुलना से पारम्परिक व प्रचलित (Trenes) आदर्शों का ज्ञान होता है। इनकी सहायता से आप दूर तक फैले ऐतिहासिक रिकार्ड से कुछ अर्थ निकाल सकते हैं। उसके बाद इतिहास को विभिन्न ऐतिहासिक-कालों में बाँट सकते हैं। जब प्रथाएं और प्रचलन किसी मौलिक रूप से बदलते हैं तो वहाँ एक काल समाप्त होकर दूसरा शुरू होता है। इन ऐतिहासिक कालों की तुलना करने पर भिन्न-भिन्न परम्पराओं व प्रचलनों की जानकारी होती है, जो उन कालों को परिभाषित करके उनका वर्णन देते हैं, उन्हें परिचायक लक्षण देते हैं। इस तरह समकालीन किन्तु अलग-अलग स्थान के कलाकार, उनकी कृतियों व उनके माहौल का अंभेद करने पर जो लक्षण ज्ञात होते हैं उनसे प्रादेशिक परम्पराओं की व्याख्या और उनका वर्णन मिलता है।

परम्परा क्या है ?

परम्परा, या परिपाटी, किसी कार्य को करने का सर्वमान्य तरीका है। इसके उदाहरण हैं वेशभूषा, लेखन के मान्य ढंग, सभ्य समाज के तौर-तरीके। इन्हें समाज ने स्वीकार्य व ठीक मानकर ग्रहण किया है। समाज के अधिकांश सदस्य इनको अच्छी तरह जानते-समझते हैं। कला की परम्परा में व्यापक कार्य और कल्पना करने का स्वभाव मौजूद होता है यह सीधे-सीधे सामान्य परम्परा या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सांस्कृतिक परम्परा का रूप ले लेता है ?

परम्पराएं कितने प्रकार की होती हैं ?

परम्पराएं ३ प्रकार की होती हैं, रूप सम्बन्धी, विषय-वस्तु सम्बन्धी एवं संस्कृति सम्बन्धी—

१. रूप सम्बन्धी परम्परा—(प्ररूपीय)—ऐसी मानक व नियम-बद्ध चित्रात्मक युक्तियां जो अक्सर लम्बे समय तक नहीं बदलती, रूप सम्बन्धी परम्परा कहलाती है। कला में परम्पराकरण आविष्कार के विपरीत होता है। परम्पराकृत कृति को या उसके पक्षों को रूप सम्बन्धी, योजना या शैली से जुड़े रूप में ग्रहण किया जाता है। रूप सम्बन्धी परम्पराएं आमतौर पर दृश्यमान जगत के बदलाव को व्यक्त करती हैं। उनके सरल रूप को व्यक्त करती हैं। वह काल-विशेष व स्थान विशेष की मान्यताएं और समझ के अनुसार होता है। कलाकार जो कुछ जानता या मानता है उसे वह अपने समाज से साझा करता है। इसीलिये रचे गये बिम्बों में परम्पराओं की झलक होती है यह अपने आरम्भिक दर्शकों की समझ में आ जाते हैं चाहे वह बिम्ब, छायाचित्र से कितना ही भिन्न क्यों न हो। इसके उदाहरण के तौर पर 'विक्टरी स्टील ऑफ नारम-सिन' कृति में नारम-सिन और उसके सैनिकों की मुद्राएं देखिये। उन्हें एक परम्पराकृत मुद्रा में दर्शाया गया है। यह अस्वाभाविक मुद्रा वह नहीं थी जो प्रायः धारण की जाती है बल्कि यह मानवाकृति को व्यक्त करने का, दीर्घकाल से बहु-प्रचलित ढंग था। आधुनिक गूढ़ार्थी कला में भी परम्पराएं पनपी हैं। पिकासो की कृति 'गुर्निका' में जिस तरह से आँखों को विरूपण व स्थान परिवर्तन से एक अलग रूप दिया गया है उस तरह का शारीरिक-अंगों का विरूपण व स्थानान्तरण प्रदर्शित करके मानवा-कृति को गूढ़-अर्थ देने की विधि बहुत प्रसिद्ध हुई थी। हालांकि आधु-निक कला की रूप-सम्बन्धी परम्परा को समाज पूरी तरह समझ नहीं पाता वह कलाप्रेमी अधिकांश लोगों के लिये बोधगम्य होती है। यही लोग परम्परा के रूप में उनका स्तर बनाये रखते हैं :

२. विषय-वस्तु सम्बन्धी परम्परा—(Iconographic Con-vention) जैसे रूप सम्बन्धी परम्परा बताती है कि किसी खास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलात्मक माहौल में वस्तु को मानक रूप 'कैसे' दिया जाता है उसी तरह विषय वस्तु की परम्परा बताती है कि मानक रूप किस वस्तु को दिया गया है। कलाकृति में प्रदर्शित बिम्ब, क्रियाएं, प्रतीक व भावों को भी मानक-रूप दिया जा सकता है और वे कालान्तर तक जीवित रह सकते हैं। ऐसे बिम्ब, क्रियाएं, प्रतीक और भावनाएं 'लोकप्रिय' या 'पारम्परिक' कहलाती हैं। थामस नास्त कृत 'सांता क्लाज' की छवि इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। यही छवि १६वीं सदी से कायम है। यह एक स्थूलकाय बूढ़े आदमी (बिम्ब) की लोकप्रिय व पारम्परिक आकृति है। यह आदमी सफेद दाढ़ी धारण किये, एक उड़ने वाली स्लेज गाड़ी पर सवार होकर (प्रतीक, धुंध में से प्रकट होता है, रास्तेभर हँसता हुआ (भावनाएं) और उपहार बाँटता हुआ (क्रिया) नजर आता है। यह छवि परम्परा-कृत विषय है।

३. संस्कृति से सम्बन्धित परम्पराएं—प्रचलित विचार, दृष्टिकोण, मूल्य, मान्यताएं व रूचि भी परम्परा का एक रूप है। वह बता सकती है कि किसी खास माहौल में निर्मित वस्तु वैसी 'क्यों' है जैसी वह दीखती है। सांस्कृतिक परम्परा, प्ररूपीय व विषय-वस्तु सम्बन्धी परम्पराओं की तरह स्पष्ट दिखायी नहीं देतीं, बल्कि यह विश्लेषण की वस्तु होती है। विभिन्न कलात्मक माहोल की भिन्न-भिन्न परम्पराएं, रिवाज व मान्यताएं होती हैं जो पनपने वाली चित्र सम्बन्धी परम्पराओं पर असर डालती हैं और उन्हें दीर्घायु प्रदान करती हैं। थामस नात्स का सांताक्लाज लोगों के मानस में सख्ती से जमी ऐसी छवि है जो आज एक अत्यन्त सफल व्यवसायिक प्रतीक बन चुकी है। हमारी पूँजीवादी परम्परा ने सांता की आयु और बढ़ा दी है।

कला की शैलियों का विकास

शैली के सभी तत्व बदलते रहते हैं मात्र उसका 'परम्परागत' पहलू नहीं बदलता। यदि आप किसी कलाकृति को लम्बे समय तक एक कलात्मक माहौल में देखते रहे तो आपको उसके रूप, विषय या अन्तर्वस्तु से जुड़े अनेक पहलू सूक्ष्म रूप से बदलते नजर आयेंगे। इस प्रवृत्ति को शैली का विकास कहते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विकासात्मक परिवर्तन रूप व बिम्ब-निर्माण दोनों ही में कालांतर तक होते रहते हैं। ऐसे परिवर्तन मानसिकता के विशेष परिवर्तन को उजागर करते हैं। इसका वर्णन चार प्रकार से करते हैं। प्रत्येक में, अनेक परिवर्तनों को उनके समग्र रूप में सरल करके (Generalize) या उनकी यान्त्रिकता पर गौर करके उन्हें समझने की विधि बतायी गयी है। शैली के विकास का वर्णन करने के लिये हम एक योजना बनाते हैं जिसके अन्तर्गत स्पष्ट दिखने वाले परिवर्तन के सापेक्ष परिवर्तन की जाँच करते हैं, फिर विकास की दिशा बताते हैं और परिवर्तन का क्रम बनाते हैं। दूसरी योजना मेंपरिवर्तन को स्पष्ट दिशा देने वाले कारकों (Factors) पर गौर करते हैं और परिवर्तन की प्रक्रिया में विकास के प्रभाव का वर्णन करते हैं। किन्तु इनसे, रचना कार्य में लगे कलाकार के रचनात्मक विचार उतने नहीं उभरते जितने कि रची गयी कलाकृति में दिखने वाले बदलाव के अर्थ निकालने से उभरते हैं। अन्य योजना में, कलाकृति के रूप व बिम्ब-निर्माण के बदलाव के समझने के लिये सीधे कलाकार के विचारों को ही जाना जाता है। इस योजना में कलाकार की मानसिकता या दृष्टिकोण के आधार पर परिवर्तन को वर्गीकृत किया जाता है फिर उन्हें तर्कसंगत रूप से जुड़े विकास के चरण के रूप में देखा जाता है। चौथी योजना में, रचना-कार्य को समस्या-समाधान कार्य मानकर व समस्या की बदलती प्रक्रिया को परिवर्तन की प्रक्रिया मानकर कालांतर में कलाकृति के वदलते रूप का वर्णन किया जाता है। यह चार योजनाएं, ऐसी अन्योन्याश्रित प्रक्रियाओं को बताती हैं जो संदर्भ के नये पैटर्न प्रस्तुत करती है। यह योजनाएं यह बताने में मददगार होती हैं कि कोई कलाकृति वैसी क्यों है जैसी वह नजर आती है।

शैलियों के विकास की वर्णन-योजना

१. दिशा के संदर्भ में शैली का विकास—यह योजना मात्र स्पष्ट अंतिम परिणामों का संदर्भ देकर शैली के विकास का वर्णन करती है। विकास के आरम्भ में सबसे कम व्यक्त रुचि का और विकास के अन्त में रची गयी कृति में सबसे अधिक व्यक्त प्रधान रुचियों का वर्णन करती है। उसके बाद कला इतिहासकार देखते हैं कि झुकाव किन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्पष्ट परिणामों व रुचियों की ओर है और तब विकास की दिशा निर्धारित करते हैं। जैसे शैली सम्बन्धी वर्गीकरण देखा जाए तो, बाद की कलाकृतियाँ पहले से अधिक प्रकृति-प्रेम तथा जीवन-समरूपता व भावनाओं को अधिक उजागर करती हैं। जैसा कि एक कृति "विर्जिन मेरी एंड हर ग्रीफ" (विषय वस्तु का विकास) में व्यक्त है। उसमें मानव-शरीर की बनावट व मानवीय भावों में बढ़ती दिलचस्पी का ज्ञान होता है। इस उदाहरण में प्रदर्शित शैली सामान्य है, इसे हम सांस्कृतिक विकास की संज्ञा देते हैं, यदि शैली विशिष्ट (व्यक्तिगत) हो तो उसे व्यक्तिगत विकास का नाम देंगे।

प्रभाव की दृष्टि से शैली का विकास—शैलियों के विकास का वर्णन प्रभावों के संदर्भ में भी किया जा सकता है। यह प्रभाव शैली के विकास की सामान्य दिशा तय करते हैं। चूंकि ऐतिहासिक घटनाएं प्राय: बहुत जटिल होती हैं और उनमें संलग्न शक्तियों को निश्चितता से नहीं जाना जा सकता है अतः इतिहासकार ऐसे कारणों की बात नहीं करते फिर भी हम कुछ ऐसे प्रभाव-क्रमों (पैटर्न) को पहचान सकते हैं जो अपेक्षाकृत अधिक बदलाव लाते हैं। प्रभाव के चार प्रमुख कारक शैली के विकास पर असर डालते हैं। उन्हें लक्षण भी प्रदान करते हैं।

(अ) समकालीन माहौल—यह कभी भी और कहीं का भी हो सकता है, इस कारक में भौतिक सामाजिक व मनोवैज्ञानिक माहौल के साथ-साथ भूतकालीन व समकालीन प्रवृत्तियों से उत्पन्न होने वाले प्रभाव शामिल हैं।

(ब) कार्य—इस कारक में शामिल है कलाकृति या शैली का प्रयोग एवं जिस समाज में वह कलाकृति बनी है उसके प्रति उसकी (कृति) सार्थकता।

(स) कलाकार का व्यक्तिगत योगदान—इस कारक में सम्मिलित है एक खास तेवर से उभरे प्रभाव का व्यक्तिगत संश्लेषण (Synthesis), कार्य के प्रति निजी प्रतिक्रिया, कलाकृति की भौतिक (Physical) सीमा, कलाकार की दक्षता और खास रुचि।

(द) प्रारूप (design) बनाना—निश्चित कलात्मक माहौल,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कृतियाँ व कलाकारों की शैली का वर्णन दिये जाने पर अनेक प्रारूप बनाए जा सकते हैं, फिर भी कुछ प्रारूप दूर से ज्यादा सरल, ठीक, ग्राह्य और प्रभावी होते हैं।

उदाहरण के लिये, गिट्टों के 'लेमेंटेशन' की तुलना लियोनार्दो के लास्ट सपर से कीजिये। हम कह सकते हैं कि ये कलाकृतियां बाद के गोथिक काल (या आरम्भिक दिनेसां) से लेकर उच्च 'दिनेसां'-काल के बोच हुये इतालवी शैली के विकास को व्यक्त करती हैं। और एक आदर्श प्रकृतिवाद की ओर झुके इस विकास का वर्णन करने के लिये हम उन ऐतिहासिक घटनाओं का भी हवाला दे सकते हैं जो विकास को प्रकृतिवाद की दिशा में मोड़ने के लिये जिम्मेदार है। हम लियोनार्दो की, गणित में गहरी दिलचस्पी और सजगता की भी चर्चा कर सकते हैं—जो गोटो के मुकाबले कहीं ज्यादा थी। उनकी यह सजगता उन आदर्शों के प्रति थी जिन्होंने विकास-प्रक्रिया को सामंजस्यपूर्ण संतुलित व आदर्शवादी बिम्बों के निर्माण की दिशा में मोड़ा।

३. मानसिकता या दृष्टिकोण के संदर्भ में शैली का विकास—इतिहासकार प्रायः चार दृष्टिकोणों की व्याख्या करते हैं – इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण काल-विशेष के कलाकार की शैली में खासतौर पर मौजूद है। ये दृष्टिकोण विकास क्रम के साथ-साथ लम्बे समय तक अनेक स्थानों पर ऐतिहासिक शैलियों में नजर आते हैं।

(अ) संस्कार से जुड़ा दृष्टिकोण (The ritualistic approach) यह दृष्टिकोण किसी विषय के सरल व स्पष्ट रूप से व्यक्त प्रतीकात्मक जरूरी और कालजयी पहलुओं पर जोर देता है। इसमें ऐसी चिरकालीन मान्यताएं शामिल हैं जो विवाद से परे और न बदलने वाली होती हैं। यह सरल, अपरिष्कृत व नये रूप में व्यक्त होते हैं। वे छायाचित्र (Photographic) सम्बन्धी चित्रण की दृष्टि से कुछ हद तक घटाये या बढ़ाये जा सकते हैं। कला इतिहासकार प्रायः संस्कारगत (धार्मिक कृत्य-सम्बन्धी) कलाकृतियों को 'प्रागैतिहासिक' या 'प्राचीन' कृति का नाम देते हैं। यह शब्द कला-निर्माण की मात्र अविकसित प्राम्भिक प्रकृति को व्यक्त करते हैं। यह दृष्टिकोण उस कला का निर्माण करता है, जो समाज में बहु-प्रचलित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आस्थाओं या धारणाओं को चित्रांकित करती है।

(ब) बोध से जुड़ा दृष्टिकोण—यह दृष्टिकोण प्रत्यक्ष या ध्यान से अध्ययन करने के बाद किसी विषय के देखे गये पक्षों को उभारता है। रूप की दृष्टि से दृष्टिकोण चित्र की युक्ति-विशेष या विशेष रचना-सम्बन्धी प्रणाली को महत्व नहीं देती बल्कि विन्यास के सतही-विवरणों के प्रति रुचि प्रदर्शित करता है, [विषय-वस्तु के लिहाज से यह दृष्टिकोण वैज्ञानिकता दर्शाता है] वस्तुनिष्ठ तथा भौतिक गुणों को उभारता है। यह व्यावहारिकता एवं अन्य समय-स्थानादि तथ्यों का मूल्यांकन करता है।

(स) क्लासिकल दृष्टिकोण—यह दृष्टिकोण किसी विषय के विधिपूर्वक व संगत रूप से प्रदर्शित सर्वव्यापी एवं कालजयी पक्षों पर बल देता है। यह नियमित, सामान्यीकृत, पूर्व-धारित आदर्श के सम्मुख देखे गये पक्षों को संतुलित करता है। आकृतियों के संदर्भ में, यह विन्यास, सामंजस्य सरलता, व्यवस्था, स्थायित्व या स्पष्टता और प्रायः रेखाओं पर बल देता है। विषय-वस्तु के संदर्भ में यह यूनानी देवता अपोलो के प्रतीकों से अङ्कित बौद्धिकता व तार्किकता पर जोर देता है और समाज की व्यवस्था, पाबंदियां, कुलीनता तथा चरित्र का मूल्यांकन करता है।

(द) भावना से जुड़ा दृष्टिकोण—(जिसे बारोक 'रूमानी' का नाम देते हैं) यह दृष्टिकोण किसी कलाकार की अपने विषय का काल के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया को उभारता है। क्लासिकता के विपरीत भावनात्मक दृष्टिकोण किसी विषय के भावातीत व व्यक्तिगत पक्षों की तलाश करता है। रूप की दृष्टि से यह, संघटन, विविधता, विसंगति, विस्तार तथा गति पर और कई बार रंग पर भी बल देता है। अन्तर्वस्तु के सन्दर्भ में, यह दृष्टिकोण 'देव डायनीसॉस' जैसे प्रतीकों से व्यक्त भावना को उभारता है। सहानुभूति, नाटकीयता, गहरी संवेदना उत्पन्न करते हुए व्यक्तिगत आजादी का मूल्यांकन करता है।

प्राचीन यूनानी शिल्पकला का विकास इस योजना का स्पष्ट नमूना पेश करता है। 'कौरस' (ca 600 ई० पू०), 'दी क्रीटियस बॉय'

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'डोरिफोरस' तथा 'डाईंग गाल' उपरोक्त योजना के चार दौरों को व्यक्त करते हैं। इस उदाहरण को देखते हुये आप पायेंगे कि विषय अनिवार्य रूप से एक-सा रहता है—नग्न पुरुष, पारम्परिक प्राचीन यूनानी विषय। मात्र आकृति की आकार-रचना बदलती है। इस बदलाव को कला इतिहासकार मानसिकता या दृष्टिकोण के बदलाव का सूचक मानते हैं। प्रायः यह आकृतियां अपेक्षाकृत अधिक विवरणों से युक्त, भिन्न रूप वालो और अधिक सक्रिय नजर आती है। इससे पता चलता है कि पहले से अधिक सटीक (त्रुटिहीन) विवरण और गति देने की योग्यता हासिल करने के लिये ज्ञान के अधिक फैले हुये आधार की जरूरत होती है, विकसित तकनीकी कला-कौशल की नहीं। इस विकास योजना में, कला इतिहासकार, कला-विकास को, उस कलात्मक माहौल के विभिन्न पक्षों को दर्शाने वाला एक 'वेरोमीटर' मानते हैं, जो नष्ट हो चुका है। इस प्रकार कला का ज्ञान-वर्धन चलता रहता है और कलाकार के पसन्द के विषय अनेक बातों में बढ़े हुये ज्ञान का परिचय देते हैं। उपरोक्त उदाहरण में, मानव शरीर की संरचना का और उसका विवरण कैसे दिया जाए इसकी पहले से अच्छी समझ, मानसिक व प्राकृतिक जगत् की बेहतर अन्तर्दृष्टि को अच्छा बोध कराती है।

भावनात्मक दृष्टिकोण को समझने के लिये 'दी डाईंग गॉल' नामक कृति को देखते हैं।

'गॉल' की मुखमुद्रा हमारे पिछले सभी नमूनों से अधिक संवेदनाएं प्रदर्शित करती है—यह विषय के भावना सम्बन्धी लक्षण को उभारता है।

गॉल की भुजा मानो आखरी विध्वंस को तत्काल रास्ता दे रही हो। क्रियाओं के एक सिलसिले में एक छोटी-सी क्रिया व्यक्त करना, इस दृष्टिकोण में आदर्श माना जाता है। यह विषय के भावातीत पक्ष को उभारता है।

'गॉल' का मुख पिछले उदाहरणों से अलग सशक्त लक्षणों वाला है। उसकी भौंहे और रूखे केश, तथा मुख व शरीर का समूचा अनुपात कवीलाई लोगों का आदर्श-रूप प्रस्तुत करता है। यह यूनानियों से बिल्कुल भिन्न है। इसमें विषय के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को खोजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गया है।

चित्र के व्यक्तिगत रूप को उभारने वाले विवरण चित्र में विविधता को बढ़ाते हैं और थोड़ा विस्तार भी देते हैं। आकृति के छुपे विकर्ण से क्रियाओं में गति का बोध होता है। यह गति की स्पष्ट भावना उत्पन्न करता है। यदि मरणासन्न 'गॉल' के आस पास संघर्षरत आकृतियों का मूल-समूह बना रहता तो चित्र में अपेक्षाकृत अधिक गति और विषमता (Contrast) आ जाती। यह चित्र की "विविधता, विषमता, फैलाव व गति को उभारता है।"

'गॉल' की भाव-भंगिमा भावनात्मक प्रभाव से ओतप्रोत है। इसको कलाकार ने स्पष्ट विवरण जैसे—उसके शरीर से बहता हुआ खून—चित्रित किये हैं। यह कलाकृति हमें एक कहानी की ओर इशारा करती है। यह हमारे सामने पेरगामम के हेलनवादी साम्राज्य पर विनाशकारी आक्रमण, युद्ध-विभीषिका, उसकी त्रासदी और तबाही का नजारा पेश करती है। और उसकी नाटकीयता में हमें जकड़-सी लेती है। इस प्रकार यह चित्र हममें सहानुभूति, नाटकीयता, गहन संवेदना, आवेग के भावों-भावनाओं को उत्पन्न करता है उन्हें आकृष्ट करता है।

४. समस्या के हल के संदर्भ में शैली का विकास—कुछ इतिहासकार कलाकृतियों को आवश्यकता, उद्देश्य और सम्बन्ध की समस्या के समाधान के अर्थ में देखते हैं। प्रत्येक महत्वपूर्ण कलाकृति को वे कोई ऐतिहासिक घटना और किसी न किसी समस्या का दुर्गम समाधान समझते हैं। उसी समस्या का दूसरा हल शायद सामने मौजूद हल के आधार पर खोजा जाएगा। परन्तु समाधानों के इकट्ठा होने से साथ साथ समस्या भी बदलती जाती है। समस्या सिर्फ इन्हीं से नहीं बदलती बल्कि कलात्मक माहौल और नये प्रभावों की रचना पर असर डालने वाले सामाजिक परिवर्तनों से भी बदलती है। हालांकि ये परिवर्तन अनिश्चित होते हैं फिर भी एक क्रम मौजूद रहता है। पिछले हल की तकनीक सरल, अत्यंत मितव्ययी व स्पष्ट व्यक्त होते हैं। जबकि बाद के हल महंगे, कठिन, काल्पनिक, जटिल, गूढ़ हो सकते हैं। पिछले समाधान समस्या के समग्र रूप पर केन्द्रित होते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

उदाहरण के तौर पर 'विर्जिन मेरी' के बिल्कुल भिन्न दो चित्रों को देखो--एक की रचना पर्मिजीनिनों ने और दूसरे की रचना सिमैब्यू ने की हैं। प्रस्तुत चित्र अन्तर्वस्तु भी 'ईसा की मृत्यु और पुनर्जन्म के गिर्द घूमता, चर्च का उपदेश और स्वर्ग में प्रवेश की उज्ज्वल आशा जो मेरी के रूप में है (मुक्ति पथ के रूप में) चित्र में मेंडोना और बालक मूल रूप से भक्तिभाव पूर्ण छवि प्रस्तुत करते हैं। छवि के इन पक्षों को चित्रित करने की समस्या दोनों कलाकारों के सामने आयी थी। किन्तु पर्मिजीनिनो के संस्करण के चित्रण के समय तक बहुत कुछ बदल गया था। दो अहम् परिवर्तन आये थे—प्रोटेस्टेंट का पुनर्निर्माण और धर्मनिरपेक्ष संपत्ति व सत्ता का उदय। इन परिवर्तनों के कारण उस चित्र का निर्माण करना अब सरल नहीं रहा था और यह भी आशंका थी कि दर्शक इस चित्र को पिछले सैद्धांतिक चित्र की तरह चुपचाप ग्रहण नहीं करेंगे। दोनों के चित्रों की तुलना करने पर, बदलती हुई समस्या के प्रति पर्मिजीनिनों जो प्रतिक्रिया चित्र में व्यक्त करते हैं वह उपरोक्त नक्शे से मेल खाती है।

अब हम दोनों चित्रों की परस्पर तुलना करके इस चित्रांकन की समस्या के प्रारम्भिक व पश्चातवर्ती समाधानों का जायजा लेते हैं।

सिमैब्यू द्वारा चित्रित मूल कृति में प्रस्तुत प्रारंभिक समाधान के रूप हमें निम्नलिखित बातें दिखाई देती हैं।

यह कृति तकनीकी रूप से सरल है। सामंजस्यपूर्ण आकृतियों को व्यक्त करती है, स्थिरता प्रदर्शित करती है। बाज, सिंहासन, वेशभूषा के रूप में मानकीकृत बिम्ब की रचना की गयी है। सिर व मुद्राएं स्थापित व फार्मूला के अनुसार हैं। चित्र में आकृति रेखाएं तीखी व सरल है अन्य विवरण बहुत स्पष्ट है।

चित्र में अभिव्यक्ति स्पष्ट है जो बताती है कि 'विर्जिन मेरी अत्यन्त दुःखी है कि उसे अपने पुत्र का बलिदान करना होगा, और युवक ईसा, आशीर्वाद देने की मुद्रा धारण किये हुये हैं।

प्रस्तुत चित्र में स्वर्ग का दृश्य बनाया गया। यह सिंहासन व देवदूत को देखकर मालूम होता है—ईसा स्वर्ग सभी के लिये संभव बताते हैं। पैगम्बर (सिंहासन से नीचे) इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं। (उन्होंने बलिदान व मुक्ति की भविष्यवाणी की थी)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उधर पर्मिजनीनिनो चित्रित बाद की 'विर्जिन मेरी' कृति में प्रस्तुत पश्चातवर्ती समाधान के रूप में निम्नलिखित बातें दिखाई देती हैं।

बाद की यह कृति तकनीकी रूप से 'गूढ़', 'कठिन' व 'काल्पनिक' हैं। इतनी असामंजस्यपूर्ण है कि पूर्वानुमान लगाना कठिन है। दृश्य में अधिक गति है। विवरणों में बहुत अन्तर है। आकृतियां भिन्न मुद्राओं वाली और कम नियमित हैं। आकृति रेखाएं (Contours) भी पहले से भिन्न है जो स्पष्ट भी है और अस्पष्ट भी। इस चित्र के अनेक विवरण अस्पष्ट हैं।

चित्र में अभिव्यक्ति 'गूढ़' है। मेडोना की भावनाएं अस्पष्ट हैं जिनसे ज्ञान नहीं होता कि वह प्रसन्न है या दुखी है। बालक—ईसा की मुद्रा अस्पष्ट है—वह गति में है या स्थिर है—स्पष्ट नहीं होता। चित्र में दृश्य कहाँ का है? स्पष्ट नहीं होता कि वह बाहर का है, भीतर का है, स्वर्ग का है या पृथ्वी का ? भविष्यवक्ता छोटा-सा है जो अस्पष्ट रूप से खड़ी विशालकाय मेडोना के समक्ष बेहद विषमता दर्शाता है और इस चित्रांकित व्याख्या की अस्पष्टता को बढ़ाता है।

'लक्षण' क्या चीज है ?

एक ही स्थान के कलाकार, कलाकृतियां और माहौल अलग-अलग परम्पराओं और झुकाव को व्यक्त करते हैं। विशिष्ट स्थान व समय को उसका 'लक्षण' देते हैं।

'लक्षण' एक निश्चित समय व स्थान की अधिकांश कलाकृतियां कलाकारों व माहौल में मौजूद गुण, विशेषताओं और विचारों को कहते हैं। यह विभेदक होते हैं। यह, शैली, कलाकार एवं संस्कृति के वर्गों का वर्णन करते हैं। अज्ञात कृतियों, कलाकार व माहौल के वर्गीकरण में मार्गदर्शक होते हैं। इसके उदाहरण हैं—परम्पराए (यह नित्य और सामान्यतः सत्य होती हैं) और शैली का विकास (जो बदलता रहता है और उन्नत सत्य होता है)। दूसरे तरह का लक्षण कलाकृति, कलाकार व कलात्मक माहौल को अतीत से अलग करने वाले नये पहलुओं पर गौर करता है। यह लक्षण विचित्र रूप से सत्य कृतियों, कलाकारों व माहौल से सम्बन्धित होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकृति के लक्षण—(इन्हें दृश्य-लक्षण या शैली के लक्षण भी कहते हैं) इन्हें आँखों से देखा जाता है और उंगलियों से बताया जा सकता है। यहाँ पर इनके दायरे में पिछली कलाकृतियों से उत्पन्न प्रभाव, रूप (Form), विषय-विशेष एवं बिम्ब-निर्माण कार्य आते हैं। इस लक्षण में ऐसी विशेषताओं को शामिल किया जाता है जो किसी वर्ग या व्यक्तिगत शैली के सूचक-चिह्न होते हैं।

कलाकारों के लक्षण (निजी लक्षण)—यह लक्षण कलाकृतियों की आकृतियों और विषयों से जाने जा सकते हैं, किन्तु इन्हें मात्र ज्ञान-चक्षुओं से ही अप्रत्यक्ष तौर पर देखा जा सकता है। अर्थात् विश्लेषण के जरिए ही इनको ज्ञात कर सकते हैं। इसमें किसी कलाकार के मनोविज्ञान, तेवर, खास दृष्टिकोण, मूल्य, आस्थाएं, दिलचस्पी व मंशा - जुड़े पहलू आते हैं। ऐसे पहलू भी शामिल किये जाते हैं जो किसी ऐसे विशेष माहौल का निर्माण करते हैं जिनसे कलाकार का व्यक्तित्व, उसके तेवर प्रभावित होते हैं। इनमें कलाकार विशेष को प्रभावित करने वाले प्रभावशाली विचार, लोग या संस्थाएं भी शामिल हैं।

कलात्मक माहौल के लक्षण—यह भी कलाकृति के रूप व विषय से ज्ञात हो सकते हैं; किन्तु इनको जानने के लिये विश्लेषण करना जरूरी है। लोगों के जीवन और उनसे निर्मित वस्तुओं को शक्ल देने वाले पहलू इसमें आते हैं। ऐसा ही एक नमूना है—माहौल—भौतिक वातावरण (अर्थात् भूगोल व जलवायु) एवं सामाजिक माहौल (यानी समाज का ढाँचा, उसकी सरकार. आर्थिक व्यवस्था एवं धर्म)। दूसरा पहलू है- प्रचलित मनोविज्ञान (आम विचारधारा, मूल्य, मत एवं आकांक्षाएं) इस लक्षण में किसी निश्चित समय व स्थान को अन्य से अलग करने वाले विचार, लोग व संस्थाएं भी शामिल हैं। (चित्र २)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

संचित जानकारी पर कार्य

जानकारी जुटा लेने के बाद उस पर कार्य करने से पहले यह जानना जरूरी है कि कला-इतिहासकार किस ढंग से कार्य करते हैं। कुछ हद तक आप इनके ढंग से परिचित ही होंगे। कला-इतिहास सम्बन्धी निष्कर्ष तक पहुँचने के लिये, अपनी निश्चित मान्यताएं, कौशल और तरीके हैं।

पहले हम देखें कि अध्ययन के क्षेत्र में कला इतिहास की परिभाषा क्या है।

कला इतिहास का अध्ययन के क्षेत्र के रूप में इतिहास से बहुत करीबी रिश्ता है। यह दोनों ही विज्ञान, तकनीक, मनोविज्ञान, राजनीतिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा धर्म के विकास-क्रम को प्रदर्शित करते हैं। इन्हें अनेक रूप में बताया जा सकता है–स्वयं अतीत के रूप में (काल) या अतीत की घटनाओं के रूप में (क्रियाएं) अथवा अतीत व अतीत की घटनाओं के ब्योरे के रूप में। इन ब्योरों के अध्ययन के रूप में या फिर संकलित तथ्यों को संभावित घटनाओं से जोड़ने वाली कहानी के रूप में। बहरहाल इतिहास व कला-इतिहास एक ही उद्देश्य को पूरा करते हैं। अर्थात् सबसे पहले जानकारी हासिल करना फिर उद्देश्यानुसार उस पर कार्य करना। उसके पश्चात् ऐसे निष्कर्ष निकालना जिन पर व्यापक सहमति मिल सकती है—और उसका वर्णन करना। इस लिहाज से कला का इतिहास कला की आलोचना या उसकी प्रशंसा का ब्योरा नहीं होता, इन दोनों से भिन्न होता है। 'आलोचना' में कलाकृति की गुणवत्ता को बताने वाले विचार होते हैं और 'प्रशंसा' में कला का आनंद उठाने पर जोर दिया जाता है। किन्तु कला-इतिहास की कुछ शाखाओं के लिये गुणवत्ता की परख करना जरूरी होता है, जिससे एक ऐसी समझ मिलती है जो कला के आनन्द को और बढ़ाती है। वह कला इतिहास

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की केन्द्रीय गतिविधियों को छूती हैं और वे गतिविधियां हैं—

सूचना (जानकारी) जुटाना, उनमें क्रम स्थापित करना, उनका विश्लेषण करना और फिर मिलने वाले तथ्यों व अन्तर्दृष्टि का स्पष्ट, सटीक व उद्देश्यपूर्ण रूप से प्रकट करना !

कला इतिहासकार और कार्य की मान्यताएं

१. कलाकृति जानकारी प्राप्त करने का पहला स्रोत होती हैं। वे ऐसे चित्रात्मक तथ्य देती हैं जो विश्लेषण की नींव का कार्य करते हैं (आकृति व विषय)

२. इन तथ्यों को वर्गीकृत करके अधिक स्पष्ट किया जाता है। वर्गीकरण, कलाकृति के रूप, विषय व अन्तर्वस्तु के निर्धारण में मार्गदर्शक होते हैं। सबसे महत्वपूर्ण वर्गीकरण तीन हैं—

(क) काल-- कालक्रम के अनुसार कलाकृति को रखना

(ख) स्थान—कलाकृति को सामान्य संदर्भ व माहौल में देखना

(ग) कलाकार (शैली)—कलाकृति को दृष्टिकोण मूल्य, आस्था तथा रुचि से जोड़ना

३. एक ही समय-स्थान के कलाकृतियों की शैली की कुछ विशेषताएं एक सी होती हैं (आकृति/ या विषयवस्तु की विशेषता)

४. कलाकृति की आकृतियों व अन्तर्वस्तु का सम्बन्ध चोलीदामन का होता है।

५. आकृतियों में या बिम्ब-रचना में बदलाव मानसिकता के या कलात्मक माहौल के बदलाव को व्यक्त करते हैं !

६. गन्तव्य या कथ्य का निर्धारण करते समय यह मानकर चलें कि लोग तर्कसंगत रूप से व्यवहार करते हैं और उनके प्रयास समझे जा सकते हैं।

कार्य का क्रम

१. पहचान करना—

(अ) कलाकृति और उससे जुड़े चित्र-इतर दस्तावेजों की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहचान

(ब) कलाकृति के आकृति (Form) से जुड़े गुणों का बोध

२. वर्णन करना—आकृति (रूप) व विषयवस्तु के वर्णन के लिये स्पष्ट व सटीक भाषा का प्रयोग।

३. व्याख्या करना—

(अ) कलाकृति की अन्तर्वस्तु, (Content) जो आकृति व विषयवस्तु में मौजूद है, उसका निर्धारण करना

(ब) शैली का निर्माण करने वाले, कलाकृतियों के बीच के सम्बन्धों को समझना।

४. बाह्य सामग्रो का प्रयोग करना—व्याख्या को और स्पष्ट करने के लिये, कलाकृति के बारे में अतिरिक्त जानकारी देने वाले अनुबन्ध, पत्रादि बाह्य सामग्री का प्रयोग।

५. विश्लेषण और संश्लेषण (Synthesis) करना—कलाकृति, उसके कलात्मक माहौल और रचनाकार के मनोविज्ञान की खोज।

६. मूल्यांकन करना—कलाकृति की गुणवत्ता व महत्व के बारे में निर्णय देना।

कलाकृतियों का वर्णन कैसे करें ?

व्याख्या के अधिक जटिल प्रश्नों का सामना करने से पहले कला इतिहासकार सबसे पहले देखी गयी प्रत्येक बात को शब्दों में ढालते जाते हैं। यह सबसे बुनियादी कार्य है। कलाकृति का वर्णन करते समय इन प्रश्नों के आधार पर सावधानी पूर्वक ठीक-ठीक तथ्य जुटाने चाहिये।

कलाकृति के तथ्य जुटाने के लिये हमें देखना होगा कि उसका निर्माण कब हुआ था; कहाँ पर और किसने किया था? उससे जुड़ी और कौन-सी परिस्थितियाँ ज्ञात हैं; उसका (कलाकृति का) प्रयोग किस तरह किया गया था?

कलाकृति के 'रूप' के बारे में, जानना होगा कि उसके 'दिखने वाले' (दृश्य) तथ्य क्या हैं; उसके निर्माण में किस सामग्री का प्रयोग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुआ है, उसकी सजावट कैसे की गयी है कौन-सी युक्तियों (दृश्य) का प्रयोग किया गया है।

तीसरे प्रकार के प्रश्न बिम्ब-निर्माण से जुड़े होते हैं, जैसे—कलाकृति किन बिम्बों को प्रदर्शित करती है, उसमें कौन भावनाएं व्यक्त की गयी हैं, कौन से प्रतीक अपनाए गये हैं।

इस वर्णन से संचित प्राथमिक तथ्य, विश्लेषण कार्य में मार्गदर्शक होते हैं। कलाकार व कलात्मक परिवेश के वर्णन में अनेकानेक तथ्यों की जानकारी जरूरी हो सकती है जबकि कलाकृति के वर्णन में कुछ बुनियादी नियमों को ही देखा जाता है। [चित्र-३]

कलाकृतियों का वर्णन

(अ) वर्णन के पहलू और स्तर—कलाकृतियों के वर्णन के दो पहलू होने चाहिये—(१) तथ्य का व (२) व्यंजक (अर्थात् रेखा/बेतरतीब रेखाएं) व (युवक/प्रसन्न युवक) दो स्तर होने चाहिये—१. बिम्ब का (अर्थात् प्रसन्न युवक) तथा रूप सम्बन्धी (अर्थात् कँटी-छँटी बेतरतीब रेखाएँ)।

(ब) वर्णन करने में मार्गदर्शक-सिद्धांत।

१. कलाकृति की रचना की तिथि, मूलस्थान, माध्यम, आकार और दशा। उसके उपयोग जैसी अन्य ज्ञान जानकारी लिखें।

२. कलाकृति की प्रमुख विशेषता से गौण विशेषता तक, साधारण क्रियाओं व भावों से पर्याप्त विवरण तक, एवं बिम्ब निर्माण (व्यक्त) से प्रस्तुत रूप, (अर्थात् कल्पना को कैसे पेश किया गया है) तक की जानकारी पर कार्य करते हुये क्रमशः आगे बढ़ते जाएं।

३. कलाकृति में स्थान (Space), स्थानन (Placement) व खास हिस्सों की संख्या बताएं। स्थान बताते समय बताएं कि वे हिस्से दर्शक की दायीं ओर हैं या बायीं ओर।

४. कलाकृति की मुख्य सभी विशेषताओं को ऐसा लक्षण दें कि आपके शब्दों से कलाकृति का ठीक-ठीक मानस-चित्र पुनः

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बनाया जा सके। कृति के प्रभाव पर सबसे ज्यादा स्थान घेरने वाली विशेषता मुख्य विशेषता होती है।

आप जानना चाहेंगे कि हम किसी कलाकृति से मिली जानकारी को कैसे क्रमबद्ध करेंगे? इसको समझने के लिये 'दी क्रीटियस बॉय' के ताने-बाने को देखें। [चित्र-४]

कलाकृति का विश्लेषण कैसे करें?

कलाकृति के विश्लेषण के दो रास्ते हैं। एक रास्ता यह है कि आप कलाकृतियों के तथ्य, सामान्य नियम, परिभाषा, मूल्य व उसके कला-कौशल के बीच सम्बन्ध स्थापित करें। दूसरा रास्ता यह है कि आप दो या दो से अधिक वस्तुओं के बीच कोई सम्बन्ध देखें। इन सम्बन्धों को जानने के लिये तीन विधियाँ अपनायी जाती हैं। कलाकृति में निहित अर्थ निकालना। २. कलाकृतियों को सामान्य नियमों के अन्तर्गत रखना। ३. कलाकृतियों की तुलना करना।

कलाकृति के विश्लेषण के लिए हमें अनेक बातें जानना होता है। कलाकृति में विद्यमान अर्थ के बारे में जानने के लिये देखें कि कलाकृति या उसकी शैली अपने विषय (अर्थात् उपयोग, उद्देश्य, रचनाकार की मानसिकता या अपने आम माहौल) के बारे में क्या कहती हैं? कोई विशेष ऐतिहासिक तथ्य या घटना, उनकी आकृति (बिम्ब) उपयोग या अन्तर्वस्तु के बारे में क्या बताती हैं?

कलाकृति को सामान्य नियमों के अन्तर्गत रखने वाली बातें जानने के लिये देखें कि कलाकृति की शैली के दृश्य-लक्षण या साँस्कृतिक या निजी लक्षण क्या हैं? कौन से लक्षण शैली के विकास को इंगित करते हैं? उसके पारम्परिक पहलू कौन से हैं? शैली की विचित्र बात क्या है?

कलाकृतियों और शैलियों की तुलना के लिये देखें कि उनके रूप (बिम्ब, कार्य, अन्तर्वस्तु, परम्परा, सामान्य नजरिया, या कलात्मक माहौल) की दृष्टि से उनकी (कलाकृति व शैली विशेष की) अन्य कलाकृतियों व शैलियों से तुलना करने पर क्या मालूम होता है? कलाकार के व्यक्तिगत लक्षणों की किस तरह तुलना की जा सकती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है ? किसी कलात्मक माहौल से किन्हीं सांस्कृतिक लक्षणों की नजर से तुलना करने पर क्या ज्ञात होता है ?

इन्हें समझने के लिये हम एक उदाहरण लेते हैं। हमें यह ज्ञात करना है और बताना है कि 'चीनी अश्व' नामक कलाकृति (या कोई दूसरा चित्र जो प्राचीनकाल का पाषाण-युग का गुफा-चित्र हो), अपने कलाकार या कलात्मक माहौल के बारे में क्या बताती है।

कलाकृति की व्याख्या करते समय हम उसके निहितार्थ जानेंगे और उनका सामान्यीकरण (Generalisation) करेंगे। उसका स्वरूप इस प्रकार होगा।

उसके चित्रात्मक व परिस्थिति से जुड़े तथ्य क्या हैं ?

यह कृति १५०००-१०००० ई०पू० की है। बस्तियों से दूर बनी गुफाओं में यह विद्यमान है। इसमें अधिकतर पशुओं के चित्र हैं, मुद्राओं में मानक-बिम्बों की रचना की गयी है (सभी मुखमुद्राएं) हैं। इसमें सशक्त जीवंत विवरण व बनावट चित्रित की गयी हैं। इसमें कोई संघटन-विन्यास नहीं अर्थात् चित्रात्मक आकृति या स्थान (Space) का कोई सम्बन्ध विद्यमान नहीं हैं।

इसके कारण-सम्बन्ध, भौतिक व अन्य अनिवार्य सहसम्बन्ध कौन से हैं ?

यह चित्र तब का है जब मानव-जाति विकास की आदिम अवस्था में थी (क्रो-मेग्नन जाति)। पशुओं के चित्रों से ज्ञात होता है कि तब का समाज सम्भवतः कबीलाई था जो आखेट करके भोजन जुटाता था। यह एक सशक्त पारम्परिक समाज था जिसका अपना निजी अस्तित्व नहीं था। कलाकार के उम्दा और प्रकृति-प्रेमी होने का संकेत मिलता है।

इस कृति में कौन से मानसिक, एवं सम्भावित सम्बन्धों की झलक मिलती है ?

इसके द्वारा संप्रेषित संकेत से पता चलता है कि तब अंधविश्वास और विलक्षण-समारोहों का अस्तित्व था जो संभवतः संस्कारों के दायरे में होते थे। पशुओं व आखेट के चित्रों से समाज की जीवन-यापन में रुचि व्यक्त होती है। समाज के भीतर श्रम-विभाजन होता था। यह कृति एक ही बार प्रयुक्त हुई थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

'सामान्यीकरण' (अर्थात् कलाकृति को सामान्य नियमों के अंतर्गत रखने) से सम्बन्धित सवालों के जवाब किस प्रकार से दें ?

इसके सवालों का जवाब देने के लिये आपको यह तय करना होगा कि क्या कलाकृति, कलाकार और माहौल में विशेषताएं मौजूद हैं। सवालों में अक्सर उनके किसी एक पहलू का सामान्यीकरण करने को या फिर उसका समर्थन या विरोध करने वाले प्रमाण जानने को कहा जाता है। ठोस सामान्यीकरण को 'लक्षण' कहा जाता है। कला-इतिहास में तीन लक्षण-विवरण (Statements of characteristics) बनाये जाते हैं। १. सामान्यतः सत्य (प्रायः अपरिवर्तित परम्परागत) पहलू बताने वाले विवरण; २. उन्नत सत्य (बदलने वाले और विकासात्मक) पहलू बताने वाले विवरण और ३. विचित्र सत्य का ब्योरा देने वाले विवरण (अर्थात् पिछली कृतियों से भिन्न पहलू)।

सामान्यीकरण पर आधारित सवालों के जवाब देने के लिये सबसे पहले देखें कि सवाल का सरोकार किस स्तर के सामान्यीकरण से है। क्या सवाल दिखने वाले लक्षणों का है या निजी अथवा सांस्कृतिक लक्षणों का है।

एक सवाल लेते हैं, गोथिक शिल्प कला के दिखने वाले लक्षण कौन से हैं ? स्पष्ट है पहले आप इन कृतियों के दृश्य-पक्षों की सूची बनाएंगे। फिर पर्याप्त जानकारी जुटाने के बाद इस सवाल से जुड़े विवरण पाने के लिये अपनी पाठ्यपुस्तक या दूसरे सूत्रों की समीक्षा करेंगे। इस समीक्षा और निरीक्षण को इस प्रकार व्यवस्थित करेंगे—उन्नत सत्य (विकासशील) विचित्र सत्य (विभेदक), व सामान्य सत्य (पारम्परिक)। आप इस बात की निश्चित जाँच कर लें कि आपने जिन पहलुओं का वर्णन किया है वे कृति में व्यापक रूप से हैं या नहीं। सामान्यीकरण ठोस हुआ है या नहीं।

इसे समझने के लिये उदाहरण स्वरूप एक प्रश्न लेते हैं कि गोथिक शिल्पकला के दृश्य (दिखाने वाले) लक्षण कौन से हैं ?

इसने सामान्यीकरण की रचना और इसकी अन्य कृतियों से इस प्रकार तुलना करेंगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोथिक शिल्पाकृति—सरलीकरण व तुलना

दृश्य-लक्षण	पारम्परिक—जो प्रायः अपरिवर्तित रहता है	विकासशील—जो परिवर्तित होता रहता है	विलक्षण—जो विगत से भिन्न होता है
कार्य (उपयोग)	'बाइबल ऑफ दी पूअर' की तरह चर्च-वास्तुकला से अभिन्न रूप से जुड़ा	प्रगतिशील (बढ़ती हुई) जटिल धार्मिकता का प्रदर्शन	
विषय व बिम्ब-निर्माण	बलिदान व मुक्ति के क्रिस्तानी बिम्ब	पतन की बजाय मुक्ति की ओर उन्मुख प्रतीक एवं विषय : आकृतियों की मुद्रा व भाव-भंगिमा से नज़र आता है कि वे अधिक भावनात्मक है	रिवाज (dogma) तक सीमित नहीं है बल्कि सात स्वतंत्र कलाओं और मानव-श्रम जैसी नवीनता से युक्त हैं
आकृतियां		बढ़ता हुआ प्रकृतिवाद; (आकृति के अनुपात, गतियों व विवरणों में व्यक्त): लगातार त्रिआयामी बनती जाती है (वास्तुकला से युक्त) आकृति बनाने में ज्यामिती का बढ़ता प्रयोग-कृत्रिम फार्मूले-प्रकृतिवाद का विरूपण	
दृश्य-प्रकृति के प्रभाव			हस्तलिपि के उदाहरण - अंगीकृत करने की बजाय वास्तविक नमूनों का प्रत्यक्ष अवलोकन - दरबारी कला का प्रभाव

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकृति की तुलना पर आधारित विश्लेषण के सवालों के जवाब देना।

वर्णन करना—इन सवालों में, आपको यह तय करने को कहा जाता है कि कलाकृतियों, कलाकार, उनके कलात्मक माहौल, एक से हैं। भिन्न हैं या विरोधी हैं। इनमें से किस सम्बन्ध का आप विवेचन कर सकते हैं। अपने मूल्यांकन के समर्थन में प्रमाण भी देने होते हैं। कई बार यह बता दिया जाता है कि आप अपनी व्याख्या, कृति के किस पक्ष के आधार पर करें। जैसे अमुक-अमुक के अर्थ में इन वस्तुओं की तुलना करो। यदि प्रश्न में न दिया हो तो आप स्वयं तय करें कि किस पक्ष की जाँच की जाए।

जवाब देने का ढंग—सबसे पहले यह देखें कि सवाल में किस पहलू की तुलना करने को कहा गया है। क्या आपको किसी कलाकृति, कलाकार, या उनके माहौल की तुलना करना है या उनके विभिन्न पक्षों की तुलना करना है? जैसे—मैसेशियो की कृति 'ट्रिनिटी' और "आइसनहेम एल्टरपीस" के "क्रास पर बने ईसा" (ग्रूनवाल्डकृत) की आकृति, बिम्ब व अन्तर्वस्तु की दृष्टि से तुलना करो। सवाल में बताया गया है कि तुलना व्यापक है। उसमें आकृति, बिम्ब-निर्माण एवं अन्तर्वस्तु के आम पहलुओं पर गौर करने को तो कहा गया है किन्तु केवल उन पर, जो सबसे महत्वपूर्ण हैं। इसे आप सावधानी से अवलोकन करने पर ही तय कर सकते हैं। उसके बाद आप इस पुस्तक से, अपनी पाठ्यपुस्तक से या दूसरे स्रोतों से सम्बद्ध अंश लेते हुये, सम्भावित विचार करने योग्य पक्षों की सूची बनाकर कार्य शुरू कर सकते हैं? आपके निबन्ध में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष वही होंगे जिन पर आप बहुत कुछ कह सकते हैं। इन अवलोकनों को, तुलनात्मक संबंध देखते हुये वर्गीकृत करें और बताएं कि वे एक जैसे हैं, भिन्न हैं असम्बद्ध हैं या परस्पर विरोधी हैं। ज्यादातर मामलों में आपका काम समानता और भिन्नता की सूची से चल जाता है।

सवाल था, मैसेशियो की कृति 'ट्रिनिटी' और ग्रूनवाल्ड के 'आइसनहेम एल्टरपीस' में सलीब पर बनी ईसा की तस्वीर की आकृति, बिम्ब, व अन्तर्वस्तु की दृष्टि से किस प्रकार तुलना की जा सकती है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस सवाल के जवाब में आप का विश्लेषण कुछ इस प्रकार होगा—

बिम्ब-निर्माण (Imagery)

मैसेशियो की कृति 'ट्रिनिटी'	ग्रूनवील्ड की कृति 'आइसनहेम एल्टर-पीस'
१. तथ्य के पहलू : लगभग निर्वस्त्र, केन्द्रीय आकृति पूर्णता लिये हैं, वह शांतिपूर्वक सलीब को उठाये हुये हैं। उसकी ओर कोई भी प्रतिक्रिया नहीं बताता।	लगभग निर्वस्त्र आकृति, अधिक सक्रिय, गंठी हुई मांसपेशियां, छोटे-छोटे घावों से ढँकी है; केंद्रीय आकृति की ओर कुछ प्रतिक्रिया।
२. अभिव्यक्ति के पहलू : अधिक शांत, नियंत्रित मुद्राओं वाली ध्यानमग्न छवि।	अधिक ऐंठी हुई भावभंगिमा, अधिक सशक्त मुद्राएं व भाव (दुःख)
३. पारम्परिक पहलू : दो संरक्षक, ईश्वर : जगत् पिता, पवित्रात्माधारी कपोत भी उस आंतरिक विन्यास में मौजूद है, जिसमें यूनानी-रोमन वास्तुकला के अनेक नमूने बने हैं।	संत जॉन ईसाई (तत्त्व : हाथ, पैर और सलीब)। मेरी मैग्डेलन (तत्त्व : लेप, मर्तबान) गल्गोथा, धुँध भरे प्राकृतिक दृश्य में मौजूद हैं।
समानता तथ्य संबंधी पहलू आकृतियों की समान संख्या, सभी वस्त्र पहने है किन्तु केंद्र में स्थित व्यक्ति मात्र कौपीन पहने हुये हैं, निर्वस्त्र हैं।	समानता पारम्परिक पहलू दोनों में ईसामसीह विद्यमान है : (तत्त्व : सलीब, कंटकाकीर्ण ताज़) संत जॉन, ईसाई धर्मोपदेशक और मेरी सलीब पर चढ़ाते समय पारम्परिक रूप से उपस्थित थी।

यदि आपको महत्वपूर्ण लगता है तो आप अन्य सम्भावित तुलनात्मक सम्बन्ध (समरूप, असम्बद्ध, विरोधी) देखकर और जानकारी जोड़ सकते हैं। कौन से सम्बन्ध सबसे अहम हैं और उनके प्रमाण क्या हैं। इसे केवल आप ही तय करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आकृति (Form)

(मैसेशियो)	(ग्रूनबाल्ड)
समानता सामान्य विन्यास का पहलू : आकृतियों को एक समान रूप से और सामंजस्य के साथ रखा गया है (दोनों तरफ की आकृतियों के साथ केंद्रीय सलीब)	समानता प्रकाश योजना (मान value) का पहलू : छाया-प्रकाश व्यवस्था में मौजूद सभी आकृतियाँ आयतन का भ्रम उत्पन्न करती हैं, विश्वसनीय विवरण देकर भ्रम बढ़ाया गया है, प्रकाश सामने से आता है।
सामान्य विन्यास का पक्ष : आकृतियों का विन्यास गहराई में, बोधगम्य विन्यास में कुछ दूर कुछ पास।	समान पार्श्वभूमि—समतल में आकृतियों का विन्यास बाद में।
अनुपात : आकृतियां एक-दूसरे की समानुपाती हैं।	आकृतियां एक-दूसरे की समानुपाती नहीं हैं (ईसा का आकार बड़ा है) न ही प्राकृतिक रूप से समानुपाती है (ईसा का शरीर अतिरंजित व विरूपित है)।
प्रकाश-योजना (मूल्य) का पहलू : प्रकाश व्यवस्था अधिक सामान्यीकृत और हल्की है तथा सजावट को अपने दायरे में रखती है।	स्पॉट लाइट अधिक तीखी है, और अधिक विषम है, कुछ सजावट उसके दायरे से बाहर है।
बनावट (texture) का पक्ष : यह अधिक सामान्यीकृत मालूम होती है : भ्रमात्मक बनाबट की बजाय असली बनावट की प्रधानता है।	भ्रमात्मक बनावट है और बहुत भिन्न है (त्वचा, केश व वस्त्र की बनावट भिन्न है)।

अन्तर्वस्तु (Content)—इसकी तुलना करने के लिये आपके सबसे पहले ऊपर दिये गये तथ्यों में से निहित अर्थ निकालना होगा और फिर देखना होगा कि उपरोक्त सामान्यीकरण से उसका मेल कैसे होता है। जैसे—इतालवी और उत्तरी रिनेसां से सम्बन्धित इस उदाहरण के ऊपर दिये गयें सामान्यीकरण और निहितार्थों के साथ भी आप अन्तर्वस्तु की तुलना कर सकते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अप्रसिद्ध कृति पर जानकारी जुटाना

स्वयं कलाकृतियां ही कला-इतिहास के अनेक सवालों के जवाब दे सकती हैं। वह जानकारी का पहला स्रोत होती हैं। किन्तु कुछ सवालों के जवाब उससे नहीं मिल सकते। इसके लिये आपको अपने कला-इतिहास से जुड़े अनुभव और कौशल का प्रयोग करना पड़ेगा। आपको कलाकृति, कलाकार और माहौल के बीच मौजूद सम्बन्धों का उपयोग करना होगा। अप्रसिद्ध जानकारी जुटाने के लिये व्यापक व विस्तृत ज्ञान और योग्यता चाहिये। इन सवालों में जो सवाल नयी समस्या हल करने को कहते हैं, उन पर ज्यादा गौर करना पड़ता है।

प्रस्तुत अप्रसिद्ध कृति पर जानकारी जुटाने के लिये इन बातों पर गौर करें कि उसे शक्ल देने वाले प्रभाव कौन से हैं? या शैली कौन-सी है? उसका सम्बन्ध किस शैली से है? शैली के विकास के किस दौर से है? (वह विकास चाहे आकृति सम्बन्धी हो या संस्कृति सम्बन्धी)।

कलाकृति को कोई विशेष ऐतिहासिक घटना (जैसे सरकार या धर्म की पद्धति बदलना) किस तरह शक्ल देती है?

कलाकार की व्यक्तिगत दशा बदलने पर या उसकी आर्थिक स्थिति या रुचि बदलने से कैसी कलाकृति (या उसकी शैली या उस शैली के विकास) का निर्माण होता है? कलाकृति के उपयोग या रूपाकृति में खास बदलाव बाद की कलाकृतियों को (या बाद के शैली के विकास को) कैसे प्रभावित करता है?

सवालों के जवाब देना

जवाब देने की योजना आप स्वयं बनायें और उसमें अपनी जानकारी और कौशल का प्रयोग स्वतन्त्रता से करें।

कलाकृति या उसके पक्षों को वर्गीकृत करने के लिये आप रूप, सिद्धान्त, परिभाषा, मूल्य एवं कला की समझ को आधार बनायें। दूसरे शब्दों में अज्ञात् जानकारी पर कुछ ज्ञान-सम्बन्ध-क्रम लागू करें।

उपरोक्त सवालों के जवाब देने के लिये आपको कलाकृति,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकार और उसके माहौल के बीच कायम जटिल सम्बन्ध के बारे में अपनी समझ, अपनी वर्णन-कला व विश्लेषण कला का इस्तेमाल करना होगा।

आइये, देखते हैं कि किसी अप्रसिद्ध कृति को उसकी सामान्य शैली के अनुसार वर्गीकृत करने की विधि क्या है ?

(अ) सबसे तीखे या उभारे गये चित्रात्मक-गुणों का वर्णन करो (रूप सम्बन्धी बातें, गठन के सिद्धान्त, चित्रात्मक (या दिखने वाली) युक्तियां, तथ्य और भावों से सम्बन्धित बिम्ब क्रिया, विषय वस्तु, परम्परा और प्रभाव के अन्य चित्रात्मक (दृश्य) स्रोत)

(ब) इन चित्रात्मक (दृश्य) गुणों के सम्भावित निहितार्थों का वर्णन करो (समकालीन या भूतकालीन प्रभाव, स्पष्ट दृष्टिकोण, मूल्य, रुचि, आस्था तथा मंशा—जैसे कोई अर्थव्यवस्था)।

(स) इस वर्णन व निहितार्थ की तुलना आप अन्य ज्ञान कला-वस्तुओं से उनकी सामान्य शैली से या शैली के विकास-क्रम से करें, उसकी समानता देखें, और उस अप्रसिद्ध कलाकृति के मूल समय व स्थान के बारे में निर्णय करें।

(द) उस कलाकृति के बारे में, उसको सामान्य शैली या उस शैली के विकास-क्रम के बारे में संचित अपनी जानकारो से अपने वर्गीकरण की जाँच करें। फिर अन्तर्वस्तु (Content) और प्रभाव के दूसरे पहलुओं की परिकल्पना करें।

सवाल, जिन पर खास गौर करना हो।

इन सवालों में कोई सामान्य सिद्धान्त, परिभाषा, या किसी मूल्य अथवा कौशल के परिणाम बताने को कहा जाता है। अपेक्षा की जाती है कि यह सिद्धान्त परिभाषा, आदि किस दशा में कैसे कार्य करती हैं आपको इसकी जानकारी है। किन्तु इन सवालों के लिये इन्हें नयी परिस्थिति पर लागू करके देखना होगा।

इन सवालों के जवाब—इसके लिये आप को अपनी इतिहास-कला की समस्त, विश्लेषण और वर्णन करने की कला दिखानी होगी।

उदाहरण के लिये एक सवाल लें, कि समुद्र पार के साम्राज्य के विकास कार्य से नये राज्य में प्राचीन मिस्र की कला पर क्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

असर पड़ा ?

इसका जवाब आप इस तरह से दें—

(अ) सबसे पहले, वर्णन करें कि मिस्र का साम्राज्य, कब, कहाँ, कैसे और क्यों विकसित हुआ। उसके बाद नये साम्राज्य की मिस्र-कला के लक्षण बताएं (विगत कलाकृतियों से भिन्न आकृतियां, भिन्न विषय-परम्परा और विकास के बारे में)।

(ब) मिस्र के साम्राज्य के ऐतिहासिक तथ्यों की ओर नये साम्राज्य की कला के निहितार्थों (Implications) की व्याख्या करें। इसमें आप बताएं कि उसके सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक ढाँचे में क्या परिवर्तन आया। धार्मिक अवस्थाओं और प्रचलित दृष्टिकोण में बदलाव के कौन से अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़े। कलात्मक परिवेश (माहौल) के प्रभाव पर कौन से सीधे प्रभाव पड़े।

(स) अन्य सांस्कृतिक प्रसंगों की जो जानकारी आपको मिली हो और विकासशील साम्राज्य द्वारा अन्य समय की कला पर पड़े असर का जो ज्ञान आप प्राप्त कर चुके हों उनके सामान्यीकरण को जाँच कर इनके सम्भावित अर्थों का विस्तार करें।

(द) तात्कालिक (immediate) प्रमाण पर आधारित नये साम्राज्य की कला के लक्षणों की तुलना इन ऐतिहासिक अर्थों से करें और इस संदर्भ में जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित किया हो उसके बारे में निर्णय करें।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

याददाश्त तेज करने के उपाय

जानकारी जुटा लेने के बाद, दिये गये कार्य में उसका प्रयोग करके आप जो खोज करें, उसकी रिपोर्ट देने के लिये, उसे याद रखना अनिवार्य होता है। इस खण्ड में आपको सम्बन्धित जानकारी याद रखने के कुछ उपाय बताये गये हैं और वह मार्गदर्शक सिद्धान्त व क्रम बताये गये हैं जिनका अनुसरण करके आप रिपोर्ट के लिये अच्छा निबन्ध लिख सकते हैं।

आप जानकारी का संकलन व सुरक्षा जितनी अच्छी तरह से करते हैं आपकी याददाश्त उतनी ही अच्छी रहेगी। इस पुस्तक में ज्यादातर कलाकृतियों से ही जानकारी जुटाने का प्रस्ताव किया गया है, किन्तु आपका प्राथमिक सूत्र व पहली मार्गदर्शक होगी आपकी पाठ्यपुस्तक। आप उनका किस तरह प्रयोग करते हैं। यह आपके अध्ययन के शौक पर निर्भर होता है। बहरहाल यहाँ प्रस्तुत है स्मरण-शक्ति बढ़ाने वाली कुछ युक्तियां—

यहाँ एक सूत्र का प्रयोग किया गया है—'सप्रपपुस' (SQ3R)। इसके पाँच चरण हैं—सर्वेक्षण, प्रश्न-निर्माण, पठन, पुनःपठन, समीक्षा।

सर्वेक्षण (Survey)

पुस्तक का सर्वेक्षण करने के लिये, प्रस्तावना, अनुक्रमणिका, तालिका और अध्याय का सारांश पढ़ें। अध्याय के सर्वेक्षण के लिये अध्याय का निचोड़, संक्षिप्त वर्णन, विशेषकर उसके शीर्षक, चित्र व ग्राफ का अध्ययन करें। उन पर सरसरी नजर डालें। इस कार्य में कुछेक मिनट ही लगने चाहिये। अनेक पुस्तकों में अन्त में सारांश दिया जाता है, पठन से पूर्व इसे पढ़ने पर आपको वह सरसरी निगाह (Overview) मिल जाएगी। यह ठीक वैसे ही होता है जैसा कि गन्तव्य तक जाने से पहले नक्शा देखना या फिर कोई चित्र पहेली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हल करने से पहले पूर्ण-चित्र देख लेना। इससे आपको एक ऐसा खाका मिलता है जिसके भीतर आप वह हिस्से रखते जाएं जो जान लें या समझ लें। इससे आपकी पढ़ने की गति बढ़ेगी, समझने में आसानी होगी।

पठन-सामग्री के प्रमुख विचार को व्यक्त करने वाला कोई छोटा-सा शीर्षक अंकित हो तो उस पाठ्य-सामग्री को याद रखना बहुत सुगम हो जाता है। पुस्तकों में प्रकाशित सामग्री को विभिन्न अध्यायों व शीर्षकों के अन्तर्गत रखने का मन्तव्य है प्रत्येक अध्याय के प्रमुख विचार बताना। सामग्री को इकट्ठा कैसे रखा गया है और विषय एक-दूसरे से कैसे जुड़े हैं, यह बताना। शीर्षकों का प्रयोग न करके आप सामग्री को समझने के महत्वपूर्ण सूत्र का लाभ उठाने से चूक जाएंगे।

चित्र व रेखाचित्र को पुस्तक में शामिल करने का मकसद स्थान घेरना, उसे मोटी बनाना या अध्ययन से होने वाली उकताहट को दूर करना नहीं वरन् उनका प्रयोग सामग्री के बारे में आपकी जानकारी और याददाश्त पुख्ता करने के लिये किया जाता है।

प्रश्न रखना

पाठ्य सामग्री के पहले, बीच में या बाद में प्रश्न रखने से सामग्री जानने-समझने और याद रखने में मदद मिलती है। सार व शीर्षकों पर आधारित सवाल स्वयं से पूछिये, इस तरह से आप पढ़ते समय ध्यान देने योग्य बातें जान जायेंगे। पुस्तक या अध्ययन की अधिकांश सामग्री में सवाल नहीं होते, लिहाजा पढ़ते समय स्वयं सवाल बनाकर उनका लाभ उठा सकते हैं। सवाल दिलचस्पी बनाये रखते हैं। कुछ पुस्तकों के अध्याय के अन्त में समीक्षात्मक सवाल होते हैं। अध्याय पढ़ने से पहले आप उन्हें पढ़ें ताकि आप जान सकें कि उसे पढ़ते समय क्या-क्या देखा जाए।

पठन (Reading)

अध्याय को नोट्स लिये बगैर पढ़ें। पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दें। अध्याय में दिया गया सब कुछ पढ़ें। कई बार सारणी, चार्ट, रेखाचित्र

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ्य सामग्री से अधिक जानकारी देते हैं। ध्यान रहे कि सूत्र का यह तीसरा चरण है जबकि अधिकांश पाठकों के लिये यह पहला चरण होता है। और कुछ लोगों के लिये यही इकलौता चरण है। कुछ पाठक (विद्यार्थी) समझते हैं कि उन्होंने पुस्तक पर अपनी दृष्टि घुमा ली तो मानो अध्ययन हो गया। अनेक विद्यार्थियों की आदत होती है कि वे अध्याय पढ़कर उसे रेखांकित कर देते हैं। परीक्षा के लिये पढ़ते समय इसी रेखांकित भाग को ही पढ़ते हैं। इससे समस्या यह उठती है कि पहली बार पढ़ते समय प्रायः आपको पता नहीं होता कि महत्वपूर्ण क्या है और किसका सम्बन्ध किससे है। इस तरह मात्र रेखांकित भाग को पुनः पढ़ने पर बहुत-सी अहम बातें छूट जाती हैं।

रेखांकित करना सरल होता है इसलिये बहुत से छात्र बहुत ज्यादा रेखांकित करते हैं। इस रेखांकन में वे न सिर्फ खास बातें रेखांकित करते हैं बल्कि दोहरायी गयी और विरोधी बातें भी रेखांकित कर बैठते हैं। रेखांकित करने की धुन में उन्हें समझने और याद रखने का प्रयत्न कम कर देते हैं। रेखांकित करने से पहले आप खण्ड के अन्त तक पहुँचने की प्रतीक्षा करें, विचार करें कि खास बातें क्या थीं, फिर केवल मुख्य वाक्यों को ही रेखांकित करें। निरर्थक बातें रेखांकित करने से जानने-सीखने में बाधा ही उत्पन्न होगी।

पुनः पठन (Recite)

शीर्षकों और सुर्खियों के बारे में स्वयं से प्रश्न करते हुये और उनके उत्तर देते हुये सामग्री को पुनः पढ़ें। यह कार्य प्रत्येक खण्ड या अध्याय के बाद करें। इस कार्य को कितना समय देना चाहिये ? इसके लिये आपको अपने कुल अध्ययन के समय का अर्धांश लगाना चाहिये। अपना अधिक समय सम्बन्धित सामग्री पर लगाये सूत्रों—समीकरणों व नियमों की सूची जैसी निरर्थक व असम्बद्ध सामग्री पर नहीं लगाना चाहिये।

समीक्षा (Review)

सर्वेक्षण की तरह इस समीक्षा में भी कुछेक मिनट ही लगने चाहिये। जो कुछ भी आप पुनः पढ़ें, उसकी सरसरी समीक्षा करते चलें और जो न कर पायें उसे नोट करते हुये पुनः सर्वेक्षण करें। स्वयं से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पुनः प्रश्न करें। याद रहे, पुरानी सामग्री को पुनः जानने-समझने में नयी सामग्री से कम श्रम लगता है। (चाहे तब पुरानी सामग्री विस्मृत हो चुकी हो) याद को ताजा रखने के लिये सामग्री को समय-समय पर दोहरा लेना चाहिये।

समीक्षा (पुनः अवलोकन) का सबसे अच्छा समय है (१) अध्ययन के दौरान, प्रत्येक प्रमुख खण्ड को पुनः पढ़ते समय, (२) अध्ययन के तुरन्त बाद व (३) परीक्षा से बिल्कुल पहले। अध्ययन के फौरन बाद की समीक्षा से वह सामग्री आपके मस्तिष्क में सख्ती से बैठ जाएगी और बाद की समीक्षा से भूली हुई बातें पुनः जानना सरल हो जाता है। पढ़ने के तुरन्त बाद और बाद में सप्ताह में एक समीक्षा, पढ़ने के तुरन्त बाद की एक या दो समीक्षाओं से या सप्ताह बाद की दो समीक्षाओं से अधिक प्रभावी होती है।

याद रखना

कलाकृति, कलाकार और माहौल के बारे में संकलित कुछ जानकारी नोट्स के रूप में लिख लें। और शेष जानकारी अपनी याद्दाश्त में सहेज लेंगे। इस तरह आपके लिये कला इतिहास की शैली जैसी प्रकल्पनाओं की जानकारी सुरक्षित रखना सरल हो जाएगा। यदि आप यह जान जाएं कि शैली का सम्बन्ध रूप (कैसे) विषयवस्तु/बिम्ब (क्या) से है तो इन जटिल जानकारियों को संचित करने के लिये वर्गों में विभक्त कर लें और जानकारी की पुनः आवश्यकता होने पर इन वर्गों को ध्यान में रखते हुये विस्तृत जानकारी आप पुनः प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप चित्रकला और वास्तुकला की कृतियों का सम्बन्ध अपने द्वारा बनायी गयी वस्तुओं से जोड़ें तो याद रखना और आसान हो जाता है। अपने अनुभव और सहजबुद्धि को सम्मुख कार्य में लगाये। याद रहे कि रूप चाहे जो हो वह मनुष्य की बुद्धि और हाथ की उपज होती है और उससे अनेक प्रकार से परिचित रहते हैं।

याद रखने की दूसरी विधि

सम्बन्धित जानकारी याद रखने का दूसरा उपाय यह है कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसका चित्रीकरण (Visualization) है। चित्रात्मक कल्पना स्मरणशक्ति को प्रबल बनाती है। चित्रीकरण का तात्पर्य मात्र शब्द को दिमाग में चित्रित करने से नहीं बल्कि उस शब्द से व्यक्त वस्तु को चित्रित करने से है। देखा गया है कि कल्पनाकार, शब्दकारों की तुलना में कहीं ज्यादा सीखते और याद रखते हैं। कल्पनाशक्ति का गुण यह है कि वह सीखने-जानने के कार्य को मजेदार बना देती है। यह विधि वाक्यों, पद्यांशों और अवधारणा को जानने में सहायक होती है।

मान लीजिये, आपको किसी बिम्ब के चार पक्ष याद रखना है, तो आप ऐसा मानसिक बिम्ब बनायें जिसमें यह चार पक्ष तीर या वृत्त से चिह्नांकित हो, या उसे स्मृति में रखने वाले अन्य तरीके से, अंकित हों। प्रायः लोग पहले उन चार पक्षों की सूची बनाते हैं, फिर उन्हें याद करके उम्मीद करते हैं कि ठीक समय पर वह याद आ जाएंगे। शब्दों से याद रखने की विधि स्कूली-विधि है, चित्र विधि इससे ज्यादा अच्छी होती है। चित्रीकरण के उपाय से उन चार पक्षों को याद करना प्रायः याद करने की बजाय सिर्फ वर्णन करने की बात हो जाता है। यदि स्वयं चित्र को याद रखना कठिन हो तो उसे अधिक स्पष्ट बनाने के लिये, कुछ बदला हुआ रूप दें या उसे (विम्ब को) कल्पित क्रिया की योजना का एक हिस्सा बना दें तो याद रखना आपके लिये दिलचस्प खेल हो सकता है।

जिन सवालों में विस्तृत जानकारी याद करना अभीष्ट हो, उनके लिये, इस पुस्तक में प्रस्तुत चार्टों का प्रयोग करके उन्हें चित्रमय बनायें या एक 'विषय-जाल' बनायें। उस जानकारी को लिपिबद्ध करें। (यथासंभव संक्षिप्त रूप में) फिर उसके गिर्द वृत्त बनाएं। उसके बाद दिमाग में आने वाली हर बात लिखते जायें और विषय पर दिमाग को केन्द्रित रखें। प्रत्येक बात वृत्तांकित करें। उन्हें परस्पर या उस विषय से जोड़ें। विचारधारा का प्रवाह आपकी याददाश्त में ऐसी बातें—ऐसे तथ्य जड़ देगा जिन्हें अन्य किसी युक्ति से याद रखना सम्भव न हो। यदि आप कहीं रुक जाएं तो हाशिये में लापरवाही से आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचते रहे, जब तक कि ठीक विचार पुनः दिमाग में आ न जाये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उदाहरण के तौर पर एक सवाल लें कि 'विक्टरी स्टील ऑफ नारम-सिन' कृति का वर्णन किस प्रकार करेंगे ? आप वर्णन के लिये (चित्र -१८) के रेखाचित्र जैसा कुछ बनायेंगे। यदि इसमें सम्बन्धों का निर्धारण स्पष्ट न हो तो (चित्र-१६) की तरह एक 'विषय-जाल' बुनें। बेशक आपका इससे भिन्न होगा। इसे बनाने का कोई एक तरीका नहीं है। यह केवल ऐसे उपाय हैं जो आपके समस्त मानसिक स्रोतों को घेरकर उन्हें प्रकट करते हैं और विचारों को संगठित व विस्तृत रूप देने में मदद करते हैं। (चित्र-५)

शोध-कार्य की रिपोर्ट लिखना

जानकारी जुटाने के बाद उसका प्रयोग करके निष्कर्ष निकालने के पश्चात् कार्य आता है अपनी खोज की लिखित रिपोर्ट प्रस्तुत करने का। इसके लिये विशेष दक्षता की जरूरत होती है। रिपोर्ट ठीक ठीक, स्पष्ट व उद्देश्यपूर्ण हो। यह स्पष्टता आपके निर्णयों और निष्कर्ष निकालने के ढंग पर निर्भर करती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शोध-लेख का निबन्ध कैसे लिखें ?

मार्गदर्शक नियम

निर्णय— अपने नोट्स (टिप्पणियों) को निष्कर्षों और उनके प्रमाणों के रूप में व्यवस्थित करके निश्चित करें कि क्या वर्णन करना चाहते हैं। आप अपनी खोज सामने रखना चाहते हैं या दर्शक (पाठक) या किसी खास दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित करना चाहते हैं। निबन्ध के लिये शीर्षक, भूमिका और शोध लेख तैयार करने में यह निर्णय सहायक सिद्ध होगा।

मानक रूप-रेखा

१. भूमिका—आपकी चुनिन्दा कलाकृति या विषय के बारे में पाठक सब कुछ जानता है यह धारणा मत रखिये। पहले पैरा में अपना विषय, उसके कलाकार, शीर्षक, तिथि व अन्य महत्वपूर्ण बातें अवश्य बताएं। इसी पैरा में आपको शोध-लेख (Thesis) की रचना भी करना है। आपके निबन्ध की प्रत्येक बात सीधे-सीधे या महत्वपूर्ण रूप से शोध लेख से सम्बद्ध होनी चाहिये।

२. मुख्यांश (Body)—

(अ) पुस्तकों व व्याख्यानों से संकलित सम्बद्ध जानकारी का सारांश और सम्बद्ध दृश्य-तथ्यों का वर्णन देकर शोध-लेख से जुड़ी जानकारी की समीक्षा प्रस्तुत करें। विचाराधीन सभी पक्षों को बताने की जरूरत नहीं है। पुस्तकों-व्याख्यानों की प्रत्येक बात प्रस्तुत करने की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह आपको विषय से भटका सकती है। सावधानी पूर्वक निश्चित करें कि शोध-लेख के लिये दृश्य-मान या दृश्य-इतर (non visual) कौन से प्रमाण अधिक प्रासंगिक है—उसे पूर्वांश में सम्मिलित करें।

(ब) शोध-लेख के साथ प्रस्तुत प्रमाण का सम्बन्ध बतायें। इसके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिये विश्लेषण (व्याख्यात्मक) प्रश्नों के जवाब तैयार करने से (सम्बन्धित खण्ड), यहाँ आपको अपने सामान्यीकरण व अवलोकन के दावों को समर्थक खास उदाहरणों व उद्धरणों से जोड़ना होगा।

(स) (ऐच्छिक) उन महत्वपूर्ण मुद्दों की समीक्षा दें जो आगे खोज से तो जुड़े हैं पर निबन्ध के दायरे से बाहर हैं। हो सकता है आपके पास ऐसी दिलचस्प जानकारी हो जो शोध-लेख से बिल्कुल भी सम्बद्ध न हो पर विचारों को चहुंदिश विस्तार दे सके। इन्हें निबन्ध के मुख्यांश या पाद-टिप्पणी में लिखा जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion) या उपसंहार—शोध-लेख का संक्षिप्त वर्णन पुनः करें और अनिवार्य प्रमाण को सारांश में प्रस्तुत करें। जिससे पाठक को इस निबन्ध के अन्त में शोध-लेख का स्पष्ट अनुमान हो जाये और प्रस्तुत प्रमाणों से आश्वस्त हो जाये।

तुलनात्मक निबन्ध लिखने की वैकल्पिक विधि

तुलनात्मक निबन्ध लिखते समय आपको निश्चित करना होगा कि तुलना के लिये कौन से सम्बन्ध सबसे महत्वपूर्ण या सशक्त है। उन्हें उनके समर्थक प्रमाण या परिपुष्टियों से साथ निबन्ध में रखें (तुलना का खण्ड देखें) ऐसे निबन्धों में विचार व प्रमाण व्यवस्थित रखने के तीन उपाय हैं—

उपाय एक—

(अ) तुलना का विषय बतायें।

(ब) दिखने वाले मुख्य सम्बन्धों को पहचानें और दृश्यमान प्रमाण व अन्य परिपुष्टियों से उनकी पुष्टि करें।

(स) दूसरे सम्बन्धों को पहचान कर उनकी भी पुष्टि करें।

(द) अपने शोध-लेख से जुड़े अन्य सम्बन्धों को पहचान कर उनके समर्थक प्रमाण दें।

(इ) उन सम्बन्धों के निष्कर्ष निकालें अर्थात् कृतियों में कैसी तुलना संभव है, कौन से सामान्य नियम उन पर लागू होते हैं या उन सम्बन्धों में निहितार्थ क्या है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उपाय दो—

(अ) तुलना का विषय बतायें।

(ब) एक जैसे सभी सम्बन्धों का विवेचन करें (समर्थक सामग्री देकर)।

(स) भिन्न प्रकार के सम्बन्धों का विवेचन करें एवं समर्थक प्रमाण प्रस्तुत करें।

उपाय तीन—

(अ) तुलना का विषय बतायें।

(ब) सम्बद्ध जानकारी पर जोर देने से प्राप्त सम्बन्ध के एक पहलू का वर्णन करें।

(स) सम्बन्ध के दूसरे पहलू बतायें।

(द) इन दोनों पहलुओं को परस्पर जोड़ने वाला सूत्र पहचानें।

(इ) सम्बन्धों के सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत करें।

ध्यान रहे, चाहे स्पष्ट प्रतीत हों किन्तु उनको स्पष्टतः बताया जाए, अपनी समझ से स्पष्टतः अवगत कराने के लिये समूची तुलनात्मक प्रक्रिया आपको व्यक्त करनी चाहिये, पाठक के अनुमान हेतु उसका कोई अंश नहीं छोड़ना चाहिये ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कला के अंग (आकृति के घटक)

कलाकार अपने कल्पना-संसार को जिन साधनों के जरिये चित्रांकित करता है उनमें कूची और रंग तो सर्वविदित है किन्तु इनके अतिरिक्त भी कला के कुछ अन्य साधन हैं, और वे हैं रेखा, मान, आकार, बनावट और स्थान। यह सभी तत्व आँखों से ग्रहण किये जा सकते हैं। यह तत्व दृश्यमान जगत् के सभी प्रकार के बिम्बों का निर्माण करते हैं, इसलिये इस जग के संघटक कहलाते हैं। यह घटक कलाकार के शस्त्र होते हैं जिनका अपनी इच्छानुसार प्रयोग करके वह अपने कल्पना-जगत के बिम्वों को द्विआयामी और त्रिआयामी रूप प्रदान करता है। वह इन्हें वस्तुपरक रूप में वस्तुओं का वर्णन करने के लिये या उद्देश्यपरक रूप में अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिये प्रयोग कर सकता है। उदाहरण के लिये 'चित्रकार एकिन्स' की कलाकृति "द ग्रास क्लीनिक" में बायीं ओर मौजूद भयाक्रांत महिला की तुलना "मंच" की कृति 'द स्क्रीम' के दृश्य से कीजिये। समस्त कलातत्वों को कलाकार, कलाकृति के पृष्ठ की ओर दर्शक का ध्यान आकृष्ट करने के लिये (सज्जात्मक कार्य में) अथवा गहराई का बोध देने के लिये (शिल्पकला के कार्य में) इस्तेमाल कर सकता है। इसे समझने के लिये 'जस्टीनियन एण्ड अटेंडेंट्स' नामक बिजंटीन चित्रकारी और 'बैटल ऑफ इश्यू' नामक रोमन चित्रकारी में प्रयुक्त प्रकाश योजना की तुलना कीजिए। बिजंटीन (पच्चीकारी) कृति में सज्जात्मक प्रभाव उत्पन्न करने के लिये परावर्ती शीशों के बड़े वर्गों और छाया व प्रकाश की पट्टीदार छटा में छाया का जो सरलीकरण किया गया है वह दर्शनीय है। दूसरी तरफ रोमन पच्चीकारी में शिल्पकारी प्रभाव अधिक मात्रा में विद्यमान है, क्योंकि इसमें संगमरमर के छोटे-छोटे चिप्स का प्रयोग करके, प्रकाश व छाया का विस्तार उत्पन्न किया गया है जिससे आयतन का बोध होता है। इस प्रकार कलातत्वों की प्रकृति और विन्यास योजना के सिद्धान्तों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का ध्यान रखकर भाँति-भाँति के अद्भुत प्रभाव उत्पन्न किये जा सकते हैं। इन कलातत्वों का विवेचन 'रचना के सिद्धान्त' के संदर्भ में निम्नलिखित खण्ड में किया गया है।

कला के तत्व

रेखा, रंग, मान, आकार, बनावट और स्थान—कला के इन छः तत्वों में सर्वप्रथम है रेखा।

रेखा क्या है ?

किसी पृष्ठ पर खींचे गये या सतह पर उत्कीर्ण बारीक चिह्न को रेखा कहते हैं। यह किसी वस्तु की बोधगम्य सीमारेखा के रूप में भी हो सकती है। कई बार अनेक समरूप वस्तुओं को इस प्रकार चित्रित किया जाता है जिससे एक पथ अंकित हो जाता है, इस पथ से एक दिशा का बोध होता है। समरूप वस्तुओं की इस प्रकार की कतार या श्रृंखला के रूप में भी रेखा बन सकती है।

रेखाओं का वर्णन—माप (छोटी, लम्बी आदि); प्रकार (सीधी, वक्र आदि) दिशा (उर्ध्वमुखी या विकर्ण आदि); एवं लक्षण (एक समान या कटी-छंटी आदि) के रूप किया जाता है।

रेखा के संदर्भ में 'किनारी' और 'आकृति रेखा' (Contour) इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 'किनारी' (edge) उस रेखा को कहते हैं जो सम्पूर्ण कलाकृति की वास्तविक सीमा रेखा होती है या जो कलाकृति के दो भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की सीमा का बोध कराती है। क्रियायामी कलाकृति में जो रेखा चित्रित आकृति का बोध कराये, वह 'आकृतिरेखा' कहलाती है। यह रेखा वस्तु या आयतन भी दर्शाती है। इसी संदर्भ में 'बुनावट' (hatching) और 'प्रतिच्छेदी बुनावट' शब्द का प्रयोग किया जाता है। परस्पर निकटवर्ती समांतर रेखाएं खींचने की तकनीक 'बुनावट' कहलाती है। ऐसी समांतर रेखाएं जब एक-दूसरे को काटें तो उसे 'प्रतिच्छेदी-बुनावट' की संज्ञा दी जाती है। ऐसी रेखाओं की रचना करके एक छायांकित क्षेत्र का निर्माण किया जाए तो उससे चित्र में आयतन (volume) का भ्रम पैदा किया जा सकता है। रेखाओं के द्वारा अन्य अनेक प्रकार की बुनावटें की जा सकती हैं। इसका एक नमूना डालर बिल पर अंकित है। इस पर जार्ज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वाशिंगटन का जो अण्डाकार चित्र बना है, उसकी 'किनारी' चित्र के स्थान (space) और गिर्द के कोरे कागज के बीच में स्थित है। वाशिंगटन का मुख थोड़ा दायीं ओर घूमा है। हमारी दायीं ओर उनके चेहरे की बाह्यरेखा 'आकृति रेखा' है। 'बुनावट' उनके चेहरे के पीछे के आयतन का बोध कराती है। चित्र की दायीं ओर प्रकाशित बड़े 'ONE' में भी बुनावट है।

चित्र में रेखा क्या व्यक्त करती है ?

रेखा का द्योतक अर्थ उसके लक्षण या प्रकार से ज्ञात होता है— जैसे कटी-छंटी रेखाएं बेचैनी या उखड़ेपन का बोध कराती हैं। यदि रेखा 'तिरछी' है तो वह गति व भावनाओं को इंगित करती है।

रेखा के सहायक अर्थ का अनुमान, उसके माप, उसकी स्थिति और बहुधा उसके कार्य को देखकर लगाया जाता है। पाश्चात्य-कला में रेखा-योजना के प्रयोग में बुद्धि और तर्क का तत्व भी जुड़ा होता है। रेखा-आकृतियाँ 'धन' चिह्न' या 'क्रॉस' प्रतीक के रूप में विशेष सहायक अर्थ अर्जित कर सकती हैं।

चित्रों में रंग-विन्यास

'रंगीनी' प्रकाश और रंजनकों (Pigment) का एक गुण है। यदि एक त्रिपार्श्व (प्रिज्म) में से सफेद प्रकाश गुजारा जाए तो लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला व बैंगनी रंग का एक वर्णपट (स्पेक्रम) बन जाता है। कौन-सी वस्तु किस रंग की है इसका ज्ञान उनके रंजनकों से ही होता है, यह प्रकाश में वस्तु के रंगों को परावर्तित करते हैं। रंगों के भौतिक गुण भिन्न होते हैं। प्रकाश की दृष्टि से, मुख्य रंग लाल हरा व नीला है, जबकि रंजनकों की दृष्टि से यह लाल, पीला व नीला है। प्रकाश के सभी प्राथमिक रंगों के मिश्रण से सफेद प्रकाश उत्पन्न होता है जबकि रंजनकों के सभी प्राथमिक रंगों के मिश्रण से गहरा धूसर (Gray) बनता है। विशुद्ध सफेद, धूसर (खाकी) और काले रंग उदासीन रंग कहलाते हैं इनमें रंग के गुणों का अभाव होता है।

वर्ण, मान, तापमान व प्रबलता—रंगों के यह चार भौतिक गुण होते हैं। वास्तुकला या शिल्पकला में जहाँ एक रंग का विन्यास किया गया हो उसे एक रंगी (Polychroming) और अनेक रंगों के प्रयोग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को बहुरंगी विन्यास (monochromatic) कहा जाता है। चित्रकारी में केवल वस्तु विशेष के स्थानीय रंगों के विन्यास पर जोर दिया जाता है या इसके अलावा वातावरण के या इर्द-गिर्द के परावर्तित रंगों का प्रभाव भी दर्शाया जा सकता है। रंग गहराई का बोध करा सकते हैं। अत्यंत गरम व तीखे रंग दर्शक को आक्रामक प्रतीत होते हैं जबकि इनके विरोधी रंग सौम्य लगते हैं। गहरे मान वाले रंगों के मुकाबले हल्के मान वाले रंग अधिक सौम्य प्रतीत होते हैं।

चटक रंग (Hue) लाल, नीला और पीला-चटक रंग हैं। लाल व पीले रंग के मिश्रण से नारंगी रंग प्राप्त होता है। मुख्य चटक रंग व उनके द्वितीय रंग के मिश्रण से अनेक मध्य रंग बनते हैं जैसे लाल व नारंगी रंगों के मिश्रण से लाल-नारंगी छटा उत्पन्न होती है। इसका संबंध इस रंग चक्र से स्पष्ट होता है। (आकृति-६)

हरा या नीला और नारंगी-परस्पर विरोधी स्थान पर है—यह रंग पूरक रंग कहलाते हैं। संलग्न रंग, साझे रंग को उत्पन्न करते हैं। जैसे पीला+हरा, हरा या नीला+हरा समरूप रंग हैं।

रंगों का मान क्या है ? (Value)

सभी रंगों का परिवर्तित प्रकाश की मात्रा बताने वाला एक सामान्य मान होता है। यह रंग के हल्केपन या गाढ़ेपन को बताता है—जैसे गाढ़ा व हल्का नीला, नीले रंग के दो मान हैं। उदासीन (सफेद, खाकी या काला) या पूरक रंगों के मिश्रण से रंग का मान घटाया-बढ़ाया जा सकता है। पीले रंग का सामान्य मान सबसे अधिक होता है क्योंकि यह सबसे अधिक प्रकाश परावर्तित करता है। जबकि बैंगनी रंग का मान सबसे कम होता है।

रंगों का 'तापमान' क्या है ?

रंजनकों में नीले और उसके अधीनस्थ मिश्रण ठंडे होते हैं जबकि लाल, पीला व उनके अधीनस्थ मिश्रण गरम होते हैं। तापमान, रंगों की गरमी या ठंडक की मात्रा बताता है। हरे व बैंगनी के द्वितीयक रंग गरम या ठंडे हो सकते हैं, यह मिश्रण की मात्रा पर निर्भर होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रबलता (Intensity) (इसे संतृप्ति या क्रोमा भी कहते हैं) जहाँ मान हल्केपन या गाढ़ेपन को बताता है वहीं प्रबलता रंग के तीखेपन या फीकेपन (dullness) का बोध कराती है। यदि उदासीन रंग का मान, उसके स्वाभाविक मन के बराबर हो तो प्रबलता समाप्त हो जाती है।

रंगों का प्रयोग और उसके अर्थ—

चित्र में भाँति-भाँति के मूड़ व भावों को प्रकट करने के लिये रंगों के मान, तापमान, प्रबलता का प्रयोग किया जाता है। प्रायः हल्के, गरम व भड़कीले रंग उत्साहवर्धक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इनका प्रयोग व्यक्तिगत रुचि के अनुसार अधिक विस्तृत सजावट करने के लिये किया जा सकता है। इनके भौतिक गुणों से चित्र के अधिकांश भाव और अर्थ तो व्यक्त होते ही हैं इनके विन्यास के बीच स्थित संबंध का भी ज्ञान होता है।

रंगों का 'मान' (Value) क्या है ?

किसी पृष्ठ, (सतह) क्षेत्र या रंग के उजलेपन और गाढ़ेपन (darkness) को उसका 'मान' कहते हैं। यह एक ऐसा कला तत्व है जो प्रकाश-योजना के प्रभाव को बताता है मान के प्रयोग से उत्पन्न प्रभाव – कलाकृति में मान को प्रकाश (उच्च मान) से छाया (निम्न मान) की श्रेणी में रखा जा सकता है। इस प्रकार के मान के वितरण को मान-संरचना कहते हैं। वास्तुकला व शिल्पकला में मान-संरचना वास्तविक प्रकाश से उत्पन्न होती है जो भाँति-भाँति की प्रबलता वाली छाया उत्पन्न करता है। इसे प्रकाश-स्रोत की प्रबलता उसकी दिशा और सतह की उत्कीर्णता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जा सकता है, बदला जा सकता है। चित्रकारी व पेंटिंग जैसी द्वितीय कलाकृति में यह निश्चित होती है। चित्रकारी में चित्रित बिम्बों में प्रकाश व छाया के मिश्रित रूप का प्रयोग होता है जिससे वस्तु के आयतन का प्रभाव उत्पन्न होता है। इसे वस्तु की प्रकाशन-छायांकन योजना (chiaroscuro) कहा जाता है। इसके अंतर्गत प्रकाश पुंज से अलग संलग्न छायांकन किया जाता है तो जो प्रकाश पुंज की ओर संकेत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

करता है। प्रायः इसके साथ परावर्तित प्रकाश भी दर्शाया जाता है। प्रकाश स्रोत के सम्मुख वास्तविक छाया अंकित करने से आयतन का बोध दिया जा सकता है जिससे उसके ठोस आकार व वजन का ज्ञान होता है। विधिवत अंशों में छायांकन करने से दूरी का प्रभाव पैदा होता है। यह प्रभाव तब पैदा होता है जब ऐसा छायांकन गहराई के सापेक्ष समाप्त हो जाए। (चित्र-७)

मान का प्रयोग व प्रभाव

वातावरण व मूड़ का बोध देने के लिये अत्यंत निकट की एक जैसी मान-संरचना का प्रयोग किया जाता है। सशक्त व अव्यवस्थित छायांकन सशक्त भावात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। जैसे प्रकाश, पवित्रता व दिव्यता का प्रतीक होता है। ऐसा प्रतीक पारंपरिक रूप से बदल भी सकते हैं।

चित्र में 'आकार' (Shape) क्या होता है ?

'आकार' उस क्षेत्र को कहते हैं जो आस-पास के क्षेत्रों से अलग होता है। इसे रेखा, मान, रंग या बनावट से सीमित किया जाता है। प्रायः आकार अन्य कला-तत्वों से या उनके विन्यास से निर्मित क्षेत्र होता है। आकार छोटा या बड़ा हो सकता है भौगोलिक, लम्बवत्, जैविक, या यौगिक प्रकार का हो सकता है। ऊर्ध्वमुखी, क्षैतिज या विकर्ण दिशा दर्शा सकता है। यह नियमित, अनियमित, साधारण, जटिल, मोटा या बारीक, लक्षण से युक्त होता है।

कृति या चित्र में यह कहाँ-कहाँ होता हैं ?

वास्तुकला व शिल्पकला जैसी त्रिआयामी कृति में आकार सामग्री-समूह में, उससे घिरे स्थान के आयतन तथा उससे प्रदर्शित स्थान के क्षेत्र में विद्यमान होता है। चित्रकारी जैसी द्विआयामी कृति में वह, ठोस वस्तु या समूह के आयतन युक्त बोध के रूप में या चौरस अथवा क्षेत्र के रूप में रहता है। एक दूसरे पर पड़ने वाली आकृतियाँ और आकार का विलीन होना, द्विआयामी कृति में गहराई का बोध देने वाला या सापेक्ष दूरी दिखाने वाला प्रमुख संकेत है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आकार के प्रभाव व अर्थ—पाश्चात्य कला में नियमित, भौगोलिक व सामान्य आकार, प्राय: सम्पूर्ण, स्थायी, व्यापक व तर्कसंगत रूप में पाये जाते हैं। अनियमित, जैविक या जटिल-आकार का पाश्चात्य कला में बिल्कुल भिन्न अर्थ लगाया जाता है, यह अर्थ गति या जीवन से और व्यक्तिगत भाव से जुड़े होते हैं। परन्तु कलाकृति की आकृति-योजना में फेरबदल करके यह सहायक अर्थ भी गहराई से बदले जा सकते हैं। रेखा की तरह आकृति से भी सकेत व प्रतीक बनाये जा सकते हैं।

चित्र में बुनावट (Texture) का क्या महत्व है ?

बुनावट, प्रयुक्त सामग्री का भौतिक गुण हो सकता है और बुनावट, युक्त पृष्ठ का बोध देने वाली चित्रित वस्तु या सामग्री या किसी पैटर्न का वर्णन करना भी हो सकता है। उदाहरण के लिये जब आप डॉलर बिल को हाथ में लेते हैं तो आपकी उंगलियों के पोर जो महसूस करते हैं वह कागज की वास्तविक बुनावट होती है, जो एक भौतिक गुण है। वाशिंगटन के चित्र में बालों की बुनावट दर्शाने के लिये छोटी-छोटी रेखाओं का प्रयोग करना और किनारे पर बुनावट का बोध उत्पन्न करने वाली रचना बुनावट का ही रूप है।

बुनावट के प्रभाव और कार्य—बुनावट चाहे भ्रमात्मक हो या वास्तविक, वर्णनात्मक हो या आविष्कृत वह कलाकृति को अलंकृत करती है। यह कलाकृति की सजीवता को बढ़ाती है क्योंकि वह दृष्टि व स्पर्श दोनों के लिये ग्राह्य होती है। उदाहरण के तौर पर—"वायसरॉय ऑफ सैमोथ्रेस" नामक शिल्पाकृति को देखें या परमीजियानिनो मैडोना के 'लांग नेक' पेंटिंग में चित्रित नीचे के प्रकाश का बोध देने वाले सलवटदार परदे के भ्रम से भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न किया गया है। यह भ्रामक बोधात्मक बुनावट है क्योंकि इन कृतियों का असली पृष्ठ, शरीर पर विद्यमान असली वस्त्रों से बहुत भिन्न लगता है। दूसरी तरफ रेंब्रांड की कृति 'रिटर्न ऑफ दी प्रोडिगल सन' में पेंट के वास्तविक रूखेपन से और ब्रेंकुसी की कृति 'बर्ड इन स्पेस' में कृत्रिम पॉलिश की चिकनाई से प्रभाव और बढ़ जाता है। पिकासो की कृति 'गिर्निका' में विंदुओं की आविष्कृत बुनावट कृति

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की सज्जा और जीवंतता बढ़ा देती है । क्षैतिज (low-relief) शिल्पाकृति या द्विआयामी कलाकृति (ड्राइंग, पेंटिंग) में बुनावट के पृष्ठीय विवरणों की स्पष्टता में विधिवत् फेरबदल करके गहराई का भ्रम उत्पन्न किया जा सकता है ।

बुनावट का कार्य—बुनावट इच्छाओं का दमन कर सकती है, उन्हें उत्तेजित कर सकती है । बुनावटें अपनी विषय-वस्तु के सहायक अर्थ को भी उभारती है । बेशकीमती मखमल, व रेशम जैसी मंहगी सामग्री की बुनावट, मस्तिष्क में वैभव, सम्पन्नता और उच्च स्तर की भावनाएं उजागर करती हैं ।

कलाकृति में 'स्थान' (Space) क्या होता है ?

स्थान वह है जिसे ऊँचाई, चौड़ाई, गहराई या समय के आयाम में व्यक्त किया जाता है । इसका वर्णन शून्य, अंतराल, दूरी या गहराई के रूप में किया जाता है । डॉलर बिल पर छपे वाशिंगटन के चित्र में सिर के पीछे छायांकित क्षेत्र, 'शून्य' है—जो ऋण-स्थान (negative space) का नमूना है । चेहरे और अण्डाकार चौरस के किनारे के बीच में 'अंतराल' या 'दूरी' है । आयतन का बोध देने वाला चेहरे का छायांकित स्थान 'गहराई' को दर्शाता है । यहाँ अंतराल वास्तविक स्थान है, तो गहराई भ्रामक स्थान ।

कलाकृति में स्थान का उपयोग व प्रभाव एवं शब्दावली ऋणात्मक स्थान—यह शून्य के रूप में व्यक्त स्थान होता है, स्थान, अंतराल—वस्तुओं के स्थान अवकाश व उसकी नियमितता से एक संरचना या बुनावट का बोध होता है । गहराई—इस प्रभाव को दर्शाने के लिये स्थान का प्रयोग मुख्यतः द्विआयामी कलाकृति की रचना में किया जाता है । भ्रमात्मक स्थान—जहाँ स्थान भ्रम की रचना करें । द्विआयामी पृष्ठ 'चित्र-समतल' पर अन्य कलातत्वों के प्रयोग से गहराई का भ्रम बढ़ाया जा सकता है । यह स्थान सम्बन्धी संकेत होते हैं । आयतन का भ्रम ऐसा ही एक संकेत है । आकृति को ऊर्ध्वमुखी रखना भी स्थान-सम्बन्धी संकेत है । क्योंकि जो वस्तु बहुत दूर होती है वह प्रायः व्यक्ति के दृष्टि क्षेत्र में अपेक्षाकृत ऊँचे स्थान पर होती है ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्थान सम्बन्धी संकेतों की समन्वित प्रणाली है यथार्थचित्रण (perspective) इसके दो भेद हैं—१. रेखोय यथार्थ चित्रण एवं २. वायवीय (या वातावरण का) यथार्थ चित्रण।

रेखीय यथार्थ चित्रण—यह एक गणितीय प्रणाली है। इसमें पीछे हटती रेखाएं (orthogonals) ऐसी लगती है माने वे एक क्षितिज-रेखा पर समाप्त होते एक बिन्दु की ओर जा रही हो। यह बिन्दु दृष्टिरेखा के अनुरूप होता है। इस चित्रण में वस्तु का आकार आरंभिक स्थान से दूरी के समानुपाती होता है; अर्थात् वस्तु जैसे-जैसे पीछे हटती है, उसका आकार घटता जाता है। इसमें वस्तुएं देखने में सिकुड़ती या पहले से छोटी होती जाती है।

वायवीत यथार्थचित्रण—पार्श्वभूमि से दूरी के सापेक्ष, रंग को प्रबलता, विवरण के स्तर और आकृति रेखा की स्पष्टता, लाकर एवं विषमता घटा कर गहराई का भ्रम उत्पन्न किया जा सकता है। चित्र में सुदूरवर्ती स्थान में स्थानोय रंगों को जगह मध्यम धूसर, नीला रंग प्रयुक्त होता है। (चित्र-८)

'स्थान' का प्रयोग प्रभाव एवं अर्थ

चित्र में रहस्यमयी बोध देने के लिये अथवा, एकाकीपन व विरक्ति के भाव उत्पन्न करने के लिये शून्य या ऋणात्मक स्थान का प्रयोग किया जाता है। इसके विपरीत शून्य रहित स्थान 'संतोष' के भाव उत्पन्न करता है। रम्ब्राँड के 'रिटर्न ऑफ दी प्रोडिगल सन' या डेविड के 'डेथ आफ मैटर' में आप अपनी ग्रहणशक्ति के यह अर्थ देख सकते हैं। गहरे स्थान सदा भय या गंभीरता व्यक्त करते हैं। लियोनार्दो के 'लास्ट सपर' में गहराई में यह प्रभाव विद्यमान है। जब चित्र-समतल को आरपार करने वाले सशक्त विकर्णों से गहरा स्थान रचा जाता है तो वह भावनाएं व्यक्त कर सकता है। छोटे-छोटे या उथले स्थान भी भावोत्पादक हो सकते हैं क्योंकि वे हमारा ध्यान पार्श्वभूमि पर केन्द्रित रखते हैं। दूसरी तरफ, नाटकीय उपाय कम करके, स्थान के विधिवत विन्यास को बल दिया जाए तो उत्पन्न गहराई, शांति और व्यवस्था की भावना का बोध दे सकती है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकृति की संरचना के सिद्धान्त

कलाकृति में सभी कलातत्व संरचना के भी कार्य करते हैं। यह कार्य कलाकृति में कलातत्वों के परस्पर सम्बन्धों पर निर्भर होते हैं। यह सम्बन्ध कलाकृति में बिम्ब की पहचान कराते हैं साथ ही कृति की प्रभावोत्पादकता को दिशा दे सकते हैं। संरचना के सिद्धान्त इन्हीं सम्बन्धों से जुड़े हैं यह सिद्धान्त है—सामंजस्य, विविधता, व एकता या समकक्षता इनका सरोकार कलाकृति की समूची संरचना से होता है—यह कृति के एक हिस्से से लेकर उसके सम्पूर्ण हिस्से के सम्बन्धों को नियन्त्रित करते हैं।

वैसे तो एकता में व्यवस्था या गुण होता है पर कभी-कभी दिलचस्पी कायम रखने के लिये यह कुछ विविधता भी धारण करती है। विविधता इस पर हावी हो सकती है।

संतुलन, विषमता: बल/फोकस, गति, समानुपाय/पैमाना, लय/पुनरावृत्ति, व विस्तार देना—यह सब सहायक (गौण) सिद्धान्त हैं। इनका सरोकार कृति के एक हिस्से और दूसरे हिस्से के सम्बन्ध से है। यह एकता सामंजस्य या विविधता में योगदान करते हैं।

एकता का सिद्धान्त—संगति और समन्वय को उभारने वाले पक्षों के बीच स्थित एक सम्बन्ध है। एकता में, कृति के हर पक्ष के बीच, स्थानन, आचार, समानुपात, गुण व दिशा का संतुलन मौजूद होता है।

सामजस्य व विविधता—विन्यास के सिद्धान्त

१. सामंजस्य (Harmony)—यह शान्ति का प्रभाव और स्पष्ट कथन व्यक्त करता है और संरचना के समूचे समानुपाती पक्षों के सम्बन्धों को उभारता है।

२. विविधता (Variety)—यह उत्साह, जीवंतता, व भावात्मक आकर्षण का प्रभाव लाता है और विस्तृत व बहुमुखी पूर्णता को

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उभारता है।

संरचना के सहयोगी सिद्धान्त

संतुलन—यह संरचना के पक्षों के भार, मात्रा, या बल के संतुलन को उभारने वाला सम्बन्ध है। विधिवत्, एक समान व सामान्य संतुलन सामंजस्य को बढ़ाता है। [चित्र-९]

त्रिज्या का संतुलन (Radical Balance)—इसमें संरचना के पक्षों का वितरण केन्द्र-बिन्दु के गिर्द होता है। जिस चित्र में डिजाइन के तत्व समान रूप से फैले हों, क्रिस्टलीय संतुलन कहलाता है। [चित्र-१०]

ऐसा संतुलन विविधता रचने में अधिक सहयोगी होता है जो जटिल होता है, रेखाचित्रात्मक कम होता है और परिवर्तनशील होता है। अक्षों को केन्द्र से अलग वाला बेडौल संतुलन और अनिश्चित अक्ष वाला गुप्त संतुलन दोनों ही विविधता को बढ़ाते हैं। [चित्र-११]

विषमता (Contrast)—संरचना के पक्षों का यह सम्बन्ध स्थानन, आकार, अनुपात, गुण या दिशा में सशक्त अन्तर रखने पर बल देता है, उन्हें उभारता है। [चित्र-१२]

विषमता का एक रूप बिम्बनिर्माण में भी आ सकता है। जब दो विरोधी स्थितियाँ निकट आ जाएं जैसे निर्वस्त्र या वस्त्रयुक्त बिम्ब चित्रित करना अथवा शान्ति व बेचैनी के भाव एक साथ उत्पन्न करना।

संरचना को सरल व स्पष्ट करने के लिये विषमता कम करने पर सामंजस्य बढ़ाता है। इसके विपरीत संरचना को जटिल बनाने वाला विषमता का संयोजन विविधता को सबसे अधिक बढ़ाता है।

'केन्द्रीयभूत बिन्दु' (Foralpoint) क्या है?

संरचना में आकर्षण के प्रमुख केन्द्र को 'केन्द्रीभूत बिन्दु' कहते हैं। इन्हें दर्शाने के अनेक उपाय हैं जैसे स्पष्ट व गर्मित रेखाओं से, विशेष रंगविन्यास, बुनावट या प्रकाश व्यवस्था से, विषमता के केन्द्रों से,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

या फिर संतुलन के बिन्दुओं से इन्हें दर्शाया जा सकता है। इन्हें प्राकृतिक लक्षणों से भी कायम किया जा सकता है। जैसे वस्तु के मध्य देखना, या दृष्टि-स्तर पर स्थित बिन्दु को देखना।

'लास्ट सपर' में ईसा मसीह केन्द्रीभूत बिन्दु हैं उनके दोनों तरफ तीन-तीन अग्रदूतों के चार समूहों में गौण-केंद्रीभूत बिन्दु मौजूद हैं। चित्र की सभी रेखाएं और अधिकांश संकेत उनकी ओर इशारा करते हैं उनका सिर भी छायांकित है जो पीछे स्थित खिड़की के फ्रेम से घिरा है। उसके ऊपर वास्तुकला के विन्यास की एकमात्र चाप है। उनका सिर भी चित्र समतल के ज्यामितीय केन्द्र में है।

संरचना में फैले अनेक केन्द्रबिन्दुओं से युक्त बलों का जटिल समूह विविधता को बढ़ाता है। मसलन, वेलस्क्वेज के 'मैड्स ऑफ ऑनर' या "लास मेनोनस" को देखें, इसमें चित्रित 'राजकुमारी' तो केन्द्रीभूत बिन्दु है साथ ही दरबारी बौना बायीं ओर न वेलस्क्वेज दायीं ओर अन्य केन्द्रीभूत बिन्दुओं के रूप में उपस्थित हैं। इसके अलावा हमारी नजर बौने और राजकुमारी के बीच खड़ी लड़की की ओर, फिर द्वार में स्थित आदमी के काले पार्श्व चित्र की ओर, उसके उपरान्त विचित्र रूप से प्रकाशित उस चित्र की ओर जाती है जिसमें दो चेहरे विद्यमान हैं, जो बेलस्क्वेज व राजकुमारी के बीच में हैं।

चित्र में 'गति' की रचना

गोया के 'तीन मई १८०८ का आंदोलन' शीर्षक की कृति में बायीं ओर उमड़ते गोलाबारी दस्ते के सैनिक और बायीं ओर को तनी उनकी बंदूकें, इस आंदोलन को सशक्त रूप से व्यक्त करती हैं। ब्रेंकुसी के "बर्ड इन स्पेस" में ऐसी ही चित्रकारी से ऊर्ध्वमुखी गति बतायी गयी है। गति संरचना के पक्षों का ऐसा सम्बन्ध है जो कला-कृति के आरपार या बीच की दिशाओं पर बल देता है। गति से तात्पर्य उन शक्तियों से भी है जो संरचना के पक्षों के भौतिक गुण या स्थानन में निहित होती है।

जो गति स्थिर, एक समान, संतुलित तथा विधिवत् या पुर्वानुमान योग्य होती है संरचना को शक्ति देती है व सामंजस्य को बढ़ाती

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। इसके विपरीत जो गति सशक्त लक्षण वाली, विस्तारयुक्त, असमान चाल वाली, अनिश्चित या चहुंमुखी होती है वह विविधता को बढ़ाती है।

समानुपात—यह आयाम, कृति के एक खंड से दूसरे खंड व सम्पूर्ण खंड का सापेक्ष आकार या मात्रा के रूप व्यक्त किया जाने वाला तुलनात्मक सम्बन्ध है।

इसे गणितीय रूप से व्यक्त किया जा सकता है। [चित्र-१३]

सामंजस्यपूर्ण समानुपातों का प्रयोग सम्पूर्ण संरचना में होता है। इसे बहुत कम मात्रा तक घटाया जा सकता है। यह संरचना को सर्वांगीण सम्बन्ध व मौलिक सामंजस्य प्रदान करता है।

लियोनार्दो के 'लास्ट सपर' में इस प्रकार के समानुपात का प्रदर्शन किया गया है। तीन-तीन दूतों के चार समूह, चित्रित कुल लम्बाई के एक चौथाई हिस्से का निर्माण करने वाले खिड़कियों के समूह तथा कुल लम्बाई के तृतीयांश का निर्माण करने वाली पिछली दीवार।

चित्र में अनियमित, या बेडौल रूप से फैले समानुपात, विविधता लाने में सहायक होते हैं। पिकासो के 'गुर्निका' में ऐसे ही समानुपात का प्रयोग हुआ है।

लय/पुनरावृत्ति लय—संरचनात्मक पक्षों के बीच का यह सम्बन्ध एक जैसी सशक्त बलयुक्त इकाइयों व बलरहित अन्तराल के समरूप की पुनरावृत्ति पर आधारित होता है। यह लयबद्ध क्रम में स्थित, गतियुक्त हरकत व समूहपक्षों का प्रभाव उत्पन्न करता है।

सामंजस्य लाने में ऐसी लय सहायक होती है जो सीमित लक्षणों वाली, नियमित समान बल व अन्तराल वाली होती है।

जिन लयों का लक्षण बदलता रहता है, अनियमित होता है या फिर जो लय-समूह भिन्न-भिन्न बलों वाले, असमान अन्तरालों से युक्त होते हैं और विषम लक्षण व गति की दिशा में टकराव उत्पन्न करते हैं, विविधता को बढ़ाते हैं। पिकासो की कृति 'गुर्निका' में सशक्त विषय लय का नमूना दिया गया है। कृति की संरचना में ऊर्ध्व रेखाएं देखो; उठी भुजाओं वाली आकृति की दोनों ओर की रेखाएं; दीपक लिये महिला के पीछे दूसरी रेखा; घोड़े के मुंह से उतरती रेखा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और बायीं ओर स्थित बैल के पीछे की रेखा। उनकी पुनरावृत्ति उन्हें एक लयबद्ध क्रम में रखती है, किन्तु सभी में जबरदस्त विषमता है। सभी समान्तर रेखाएं भिन्न-भिन्न लम्बाई की हैं। वे भिन्न-भिन्न अंशों व स्थानों पर टूटी हुई हैं।

विस्तार (Elaboration)

यह भी संरचनात्मक पक्षों का पुनरावृत्ति पर आधारित सम्बन्ध है। यह विशेष दृश्यमान पक्षों के परिवर्तन को उभारता है अथवा बुनावट या विवरण जैसे पृष्ठीय गुणों को बढ़ाता है। विस्तार किसी क्रम या मुद्रा के प्रतिबिम्ब को व्यक्त करता है। वह उसे, बढ़ाकर, सिकोड़कर, अतिरंजित कर, या सरल अथवा जटिल बनाकर, या विषयरूप, रूप देकर, बदल सकता है।

साधारण व गिने-चुने दृश्यमान पक्षों से युक्त विस्तार, सामंजस्य को बढ़ाते हैं। मसलन वेस्ट की कृति 'डेथ ऑफ जनरल वोल्फ' में प्रमुख आकृति की मुद्रा का विस्तार है, आकाश में छाये मेघ। इनकी आकृति मरणासन्न जनरल के शरीर के चाप को दोहराती है और उसे विशाल रूप देकर परिवर्तित भी करती है।

संरचना के पक्षों का जटिल परिवर्तन, विवरण का विस्तार जन्य विकास, या दूसरे सतही गुण विविधता को बढ़ाते हैं।

'गुर्निका' में कुछ चाप, कुछ मुद्राओं व कुछ संकेतों का विस्तार किया गया है जैसे 'चीखता हुआ मुँह'। यद्यपि विवरण व अन्य पृष्ठीय युक्तियाँ कम की गयी हैं फिर भी 'विस्तार' इस चित्र का प्रमुख लक्षण है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कलाकृति संबंधी जानकारी व उसकी समीक्षा

प्रस्तुत गद्यांश में पिकासों व उनकी कृति 'गर्निका' से सम्बन्धित तथ्य दिये गये हैं। इनके आधार पर गद्यांश की कला-इतिहास की दृष्टि से समीक्षा करें।

घनाकृतिवाद (Cubism) के विकास को पिकासों की महानतम् उपलब्धि मानना चाहिये, पर वह एक ही माध्यम में लम्बे अरसे तक काम करके कभी संतुष्ट नहीं हुये। "कृत्रिम" घनाकृतिवादी चित्रों की पेंटिंग के दौरान उन्होंने प्राचीन शिल्पकला से प्रभावित यथार्थवादी विधि से आकृति-विषयों का चित्रण भी किया था। १६२० के उत्तरार्ध में उन्होंने भँवरदार रेखाओं और उज्ज्वल रंगों से ऐसे दृश्यमान—निरूपण बनाये थे जो समकालीन चित्रों से संबंधित लगते थे। इस व्यक्तिगत शैली का चरमबिंदु उनके विशाल मित्ती चित्र 'गुर्निका' में दिखाई दिया। उन्होंने इसका चित्रण १६३७ में हुये स्पेनिश गृह-युद्ध के दौरान गुर्निका पर हुई बमबारी के विरोध में, उस वर्ष आयोजित पेरिस अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के स्पेनिश मंडप में रखने के लिये किया था। इस चित्र में उन्होंने अपने देश की दुर्दशा का चित्रण किया था, जहाँ पर नृशंस सेना कुछ समय तक जीतती हुई प्रतीत हुई थी। इसमें उन्होंने अपने घनाकृतिवादी समूचे अनुभव का प्रयोग किया है। अधिकांश रंग-कला, सफेद व धूसर, जो 'समतल' की व्याख्या के लिये उसका चमत्कारी जटिल रूप उभारते हैं। अनापेक्षित व आक्रामक रेखीय विरूपण, घटना की भयानकता व्यक्त करते हैं। मृत योद्धा, मरणासन्न अश्व और डकरते सांड की आकृतियों में पिकासों अपने देश की दुर्दशा व्यक्त करने वाले सशक्त जनप्रतीकों का निर्माण करते हैं। उनके अपने शब्दों में वह युग 'नृशंसता व अंधकार' का युग था। कलात्मक चित्र के आधुनिक स्वरूप आधुनिक समाज के मानवतावादी मूल्यों की व्याख्या का कार्य नहीं कर सकते यह धारणा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस पेंटिंग से खंडित होती है क्योंकि वे आधुनिक एकसत्तावाद के दुर्गुणों को उजागर करके अपनी यह धारणा प्रस्तुत करते हैं कि कला मनुष्य के श्रेष्ठ मूल्य की पुष्टि का सबसे प्रभावी साधन है।

गद्यांश की समीक्षा

गद्यांश से पिकासो की शैली की पृष्ठभूमि के लक्षण जानने के बाद पिकासो की कृति 'गुर्निका' पर गौर किया जाए। कला-इतिहास संबंधी इस संक्षिप्त विवेचन में शैली के विविध पक्षों को व्यक्त किया गया है जो इस पुस्तक में प्रथम खंड में वर्णित है। पुस्तक में कला की चार मूलभूत परिभाषाओं के बाद सर्वाधिक मौलिक जानकारी पर विचार किया गया था।

"उनका विशाल भित्ती चित्र गुर्निका, जो पेरिस अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के स्पेनिश मंडप के लिये बनाया गया था (१९३७)" इस तथ्य संबंधी जानकारी में पेंटिंग का कार्य भी निहित है जो था "स्पेनिश गृह-युद्ध के दौरान गुर्निका कस्बे पर बमबारी के विरोध में।"

"अपने देश की दुर्दशा के इस रूपक चित्रण में जहाँ नृशंस सेना कुछ समय तक विजयी प्रतीत होती है।" इस विवेचन में पेंटिंग की कल्पना, बिम्ब व आकृतियों पर भी वर्णनात्मक दृष्टि डाली गयी है।

"पिकासो घनाकृतिवाद से संबंधित अपने सभी अनुभवों का प्रयोग करते हैं।" इसमें घनाकृतिवाद के ज्ञान के साथ आकृतियों पर भी दृष्टिपात किया गया है। इस दृष्टिकोण को पूरा करने के लिये गद्यांश में रूप-आकृति का और आगे वर्णन किया गया है कि "अधिकांश रंग······काला, सफेद व धूसर······समतल की व्याख्या के जटिल स्वरूप चमत्कारिक रूप से उभारता है। अनापेक्षित व हिंसक रेखीय विरूपण घटना की भयानकता का परिचय देते हैं।"

"मृत योद्धा, मरणासन्न अश्व तथा डकरते सांड की आकृतियों में पिकासो अपने देश की दुर्दशा के सशक्त जनप्रतीकों का निर्माण करते हैं।" इसमें बिम्बों का वर्णन किया गया है।

इसके बाद उसकी सार्थकता पर दृष्टि डाली गयी है—चूंकि पेंटिंग में व्यक्त स्पेनिश गृह-युद्ध के बाहरी हालात की चर्चा की जा चुकी है। इसकी सार्थकता के दो और पहलू हैं—प्रथम, गुर्निका की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सार्थकता के विषय में बाद के दिनों में की गयी व्याख्या दूसरे, पेंटिंग में व्यक्त, पिकासो के मानस का प्रतिबिम्ब।'

"पिकासो आधुनिक एकसत्तावाद के दुर्गुणों को उजागर करते हैं। इसमें बाद के दिनों की, पिकासो के मनोवांछित अर्थ की विरोधी व्याख्या है।

और अंतिम बात जो गद्यांश में सुझायी गयी है, पिकासो पहले ही से मानते थे कि "कला मनुष्य के श्रेष्ठ मूल्यों की पुष्टि का सबसे प्रभावशाली साधन है।"

इस संक्षिप्त गद्यांश में चर्चित पिकासो की शैली के प्रत्येक स्तर के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता था। समीक्षा में इस पेंटिंग को पिकासो के ही द्वारा बनाये गये अन्य चित्रों से, एक ही समय व स्थान के अन्य कमतर कलाकारों की कृतियों से, और समूचे कला-इतिहास के अन्य कलाकारों की कृतियों से तुलना करके उसे और बढ़ाया जा सकता है। ऐसा करने के लिये आप परम्पराओं पर, शैली के विकास पर एवं गुर्निका के अन्य लक्षणों पर भी गौर कर सकते हैं।

इस संक्षिप्त विवेचन में, सबसे पहले देखा गया कि पेंटिंग में क्या नजर आता है? उसे एक साथ कैसे रखा गया है। उनका अर्थ निकालने में यह सब प्रमाण के रूप में काम आता है। दृश्यमान-जानकारी को अर्थ संबंधी निष्कर्ष में रूपांतरित करना बड़ा जटिल और रचनात्मक कार्य है। प्रायः कुछ न कुछ अव्यक्त रह जाता है, जैसे यहां हुआ है। किन्तु कलाकृति का विश्लेषण करने की यह कला अर्जित करना कठिन है बस सीखने की लगन चाहिये।

अभ्यास-१

क्या आप पिकासो की कृति 'गुर्निका' व शैली के विभिन्न पक्षों के बारे में दिये गये वाक्यों का मिलान कर सकते हैं।

वाक्य	शैली-पक्ष
१. ——"स्पेनिश फासीवादी फौज की नाजी बमबारी द्वारा अप्रैल १९३७ में गुर्निका के छोटे से बास्क शहर के	(अ) रूप (Forms)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विध्वंस के विरुद्ध, प्रोटेस्ट की मंशा से—”	
२. “दायीं ओर धधकते मकान से उठती आग की लपटें, टूटी छतें, दीवारों के भग्नावशेष यही था वास्तविक विनाश का शेष दृश्य——”	(ब) तथ्य व द्योतक बिम्ब
३. माँ और उसका मृत-बालक, पिएटा के वंशज हैं, चिराग धारण करने वाली महिला; स्टेच्यू ऑफ लिवर्टी की याद दिलाती है, मृत योद्धा का हाथ जो खंडित तलवार धारण किये हैं, वीरोचित प्रतीकार का प्रसिद्ध प्रतीक है।	(स) पारम्परिक बिम्ब निर्माण
४. ——“काले, सफेद, व धूसर रंग के बिखरे समतल का विस्फोट, एक विशाल पिरामिड की आकृति का आभास देता है……”	(द) मनोवैज्ञानिक सार्थकता व (अंतर्वस्तु)
५. ——“यह चित्र बीसवीं सदी में मानवता के विरुद्ध हुये समस्त अपराधों का स्मारक-चित्र है”	(क) सांस्कृतिक सार्थकता
६. ——क्रुद्ध सांड……स्पेनिश जन-अनुभव के विरोधी के रूप में, भयंकर सांड-मानव से संबंधित है, जो मनुष्य के अविवेक को साक्षर करता है…”	(ख) व्याख्यात्मक अर्थ
७. ——हम भयंकर मानव शीशधारी सांड और……मरणासन्न घोड़े के बीच विरोधाभास का अनुभव करते हैं	(ग) परम्पराएं (यहां विषय-वस्तु की)
८. ——यह भित्ती-चित्र, विश्वयद्ध-II के वर्षों पहले, फ्रेंको के स्पेन में, व	(घ) शैली का विकास (प्रभाव के अर्थ में)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हिटलर की जर्मनी में, फासीवाद के उदय को व्यक्त करता है

९. ——असहाय शरणार्थियों और निहत्थे शहरियों के नृशंस नरसंहार के विरुद्ध पिकासो के आक्रोश ने पिकासो की कल्पना को इतना भड़काया कि पहले जो बिम्ब अपने द्योतक या विशुद्ध रूप को व्यक्त करते थे, उन्हें पिकासो ने ऐसे प्रतीकों में ढाल दिया जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता था।

१०. भले ही पिकासो छत्तीस वर्ष तक बड़े उत्साह से पेंटिंग करते रहे पर उनकी अधिकांश कृतियों में उन्हीं मंतव्यों और उद्देश्यों की पुनरावृत्ति दिखाई देती है जिसका आविष्कार वे पहले कर चुके थे।

(ङ) लक्षण दृश्यमान लक्षण (Visuul Char.)

अभ्यास-२

गियोटो की कृति "लेमेंटेशन" के बारे में दिये गये कथन पढ़ो और तय करो कि वे "**शैली-जाल**" में कहाँ ठीक बैठते हैं। उपयुक्त स्थान पर कथन की संख्या रखो और पृष्ठ··· के उत्तर से मिलान करो।

१. गियोटो की कलाकृति फ्रांसिस्को आन्दोलन के प्रभावों को दर्शाती है, जिसने धार्मिक मामलों को मानवीय अनुभव के अर्थ में ग्रहण किया—धर्म के इस 'मानवीकरण' ने शनैः शनैः किन्तु प्रबलता से १४वीं सदी के समाज को प्रभावित किया।

२. यह पेंटिंग मार्डलिंग के प्रति सजगता दर्शाती है, आकृतियों को आयतन का बोध देती है और पारम्परिक सुनहली पृष्ठभूमि के स्थान पर नीले आकाश को रखकर गहराई का बोध बढ़ाती है।

३. मेरी की गोद में ईसा जो पवित्र नारियों और अनुयायियों से घिरे हैं, तथा एक वृक्ष जो ज्ञान व उस मूल पाप का प्रतीक है, जिस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाप से ईसा की मृत्यु ने मानवता को मुक्ति प्रदान की थी, इन सबके द्वारा पेंटिंग के दृश्य को त्रुटिहीन बनाया गया है।

४. गियोटो का यह भित्ति-चित्र 'लेमेंटेशन' १३०४ और १३१३ के बीच पेडुआ के एरेना गिरजाघर में चित्रित भित्त-चित्रों की शृंखला की एक कड़ी है।

५. गियोटो ने "उस युग का आरंभ किया जिसे प्रारंभिक वैज्ञानिक युग की" संज्ञा दी जा सकती थी……पश्चिमी व्यक्ति दृश्यमान जगत को ही स्वाभाविक-ज्ञान का स्रोत मानकर उसकी ओर उन्मुख हुये।"

६. चित्रित आकृतियों की मुखमुद्रा व भंगिमाएं व्यापक भाव उत्पन्न करती हैं जैसे विर्जिन मेरी का गहन दुःख का भाव और दूर दाएं खड़े दो अनुयायियों की ध्यानस्थ मुद्रा।

७. पार्श्वभूमि में हमारी ओर पीठ किये बैठी दो आकृतियां दृश्यमान व मनोवैज्ञानिक कार्य करती हैं। एक तरफ वे बायीं ओर की संरचना संबंधी गति को ग्रहण करते हैं तो दूसरी तरफ हमें अपनी गुमनामी में खोने को प्रेरित करते हैं 'लेमेंटेशन' (विलाप) में वे हमें व्यक्तिगत रूप से आकृष्ट करते हैं।

८. पार्श्वभूमि में चित्रित एक विकर्णशिला, दृष्टि को तत्काल उप-केंद्रीय बिन्दु—अर्थात् अपनी माँ की गोद में लेटे ईसा की ओर ले जाती है।

९. गियोटो की पेंटिंग में अनेक आकृतियों के सिर के गिर्द सुनहला चपटा गोल बिम्ब, १४वीं सदी के अधिकांश चित्रकारों द्वारा प्रमुक्त आभामंडल का मानक चित्र है।

१०. लेमेंटेशन सहित सम्पूर्ण चित्र-शृंखला चक्र एरेना गिरजाघर की पूरी दीवारों को ढकता है, यह चित्रावली ईसा के अथाह कष्ट के दृश्य को चित्रित करती है।

११. इकलौते वृक्ष के नीचे, अकेला चट्टान से बने प्राकृतिक दृश्य के ऊपर दस देवदूत स्थित हैं।

१२. गियोटो, दृश्य के भावात्मक गुण उभारने की स्पष्ट मंशा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाहिर करते हैं। वे अपने समकालीन कलाकारों से अधिक प्रकृति-वादी उपाय अपना कर, ईसा की मृत्यु का मानवीय अर्थ प्राप्त करना चाहते हैं।

१३. गियोटो की अधिकांश कृति में ऐसा उथला मंचनुमा स्थान पाया जाता है।

अभ्यास-३

पुस्तक के परम्पराओं के खंड दो पुनः देखें। उसके बाद अद्यतन अमरीका में प्रचलित परम्पराओं का ज्ञान देने वाले निम्नांकित कथन पढ़ें व प्रत्येक का—

(अ) रूप (Form) संबंधी परम्परा
(ब) विषय-वस्तु संबंधी परम्परा या
(स) सांस्कृतिक परम्परा के उदाहरण के रूप में चिह्नांकित करें।

उत्तर पृष्ठ……पर देखें

उदाहरण—(ब) डॉलर बिल पर जार्ज वाशिंगटन का चित्र
(अ) डॉलरबिल पर वाशिंगटन के चित्र का केंद्रीय चित्रांकन।
(स) डॉलर बिल पर चित्रित वाशिंगटन जैसे संस्थापक जनक के प्रति किया गया आदर।

१. केवल तीन उंगलियों से मिकी माउस के हाथ का आशु-चित्र बनाया
२. "सबके लिये स्वतंत्रता और न्याय" की प्रतीज्ञा
३. अमरीकी ध्वज पर प्रचार सितारे
४. टेलीविजन के मैचों में मुक्केबाजों का हाथ मिलाना
५. प्रोटेस्टेंट कार्य सिद्धांत जो शिल्पकारिता व अन्य श्रम-चिह्न प्रदान करते हैं
६. विज्ञापनों में प्रतियोगीकारों को नाटकीय दृष्टि से प्रदर्शित करना
७. AT & T का लोगो (शब्द चिह्न)
८. कैम्पबेल सूपकैन पर लाल व सफेद लेबल
९. 'प्रगति व नवीनता' का आधुनिक भाव।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अभ्यास-४

'शैली के विकास' के खंड को पुनः पढ़ें। उसके बाद इतिहास के विकास पर दिये गये संक्षिप्त निबंध को पढ़ें। इस निबन्ध के कथन उनकी पुष्टि करते हैं जिन्हें कला-इतिहासकार 'परिवर्तन' की संज्ञा देते हैं। देखें क्या आप निबन्ध के उन अंशों का मिलान दायीं ओर सूचीवद्ध 'विकास के स्तर व योजनाओं' से कर पाते हैं या नहीं। प्रत्येक अक्षर का प्रयोग मात्र एक बार करें।

उत्तर पृष्ठ······पर देखें।

आधुनिक विज्ञापन-कार्य का विकास-क्रम विगत दो शताब्दियों में विज्ञापन-कार्य का रूप बहुत अधिक बदल गया है।	विकास के स्तर व योजनाएं
१. ——१८वीं सदी में उत्पाद की उपलब्धता की मात्र उदघोषणा करने के कार्य में १९वीं सदी में उत्पाद के "वैज्ञानिक" दावों को भी शामिल किया गया। जैसे-जैसे ब्राड-नाम की अवधारणा उभरती गयी विज्ञापन कार्यों को उन सहयोगी बिम्बों की रचना के लिये अपनाया जाता रहा कम्पनी को सामाजिक व्यवस्था व ज्ञान के स्तम्भ के रूप में उन ब्रांडों के पीछे खड़ी दर्शाते हैं। हमारी अपनी सदी में विज्ञापनबाजी हमारी भावनाओं, इच्छाओं व भय के साथ खिलवाड़ करती प्रतीत होती है।	(अ) परिवर्तन की दिशा के बारे में (चित्रात्मक विकास) (ब) परिवर्तन की दिशा के बारे में (सांस्कृतिक विकास) (स) यह कथन परिवर्तन पर वातावरण के प्रभाव की पुष्टि करता है
२. ——विज्ञापन प्रवर्तकों ने ग्राहकों को ऐसा 'घातवर्धनीय' उपभोक्ता शुरू कर दिया, जिसमें जरूरत,	(द) परिवर्तन पर कार्य के प्रभाव बताता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इच्छा और भय उत्पन्न किया जा सकता था।

३. ——बाद में सघन विपणन-अनुसंधान ने विकास को और आगे बढ़ाया।

४. ——आधुनिक विज्ञापन कार्य में बिम्ब-निर्माण अत्याधुनिक व उत्पादन-कार्य दक्षतापूर्ण हो गया है।

५. ——लेकिन आजकल की नयी विज्ञापन-कला दर्शकों का ध्यान खींचने के लिए चिरकाल से स्थापित पद्धतियों के और कलात्मक सुधारों के केवल स्थूल परिवर्तन व्यक्त करती है।

६. ——खरा विज्ञापन वह है जो वस्तु को बेच सकता है, इसी बात से तय होता है कि विज्ञापन कैसा दिखता है और क्या कहता है।

७. ——किन्तु समकालीन दिनोदिन जटिल होते गये और विज्ञापन व्यवसाय को बदलते गये।

८. ——समकालीन विज्ञापन एजेंसियों द्वारा निर्मित विज्ञापन, एक सदी पहले के बदलावों और बाजार के फैले हुए रूप की प्रतिक्रिया मात्र है।

(च) परिवर्तन पर व्यक्तियों के असर के बारे में

(छ) डिजाइन में परिष्करण से पड़ने वाले प्रभाव को व्यक्त करता है

(ज) मानसिकता या दृष्टिकोण में परिवर्तन के बारे में

(झ) समस्या सुलझाने की दृष्टि से परिवर्तन के बारे में

अभ्यास-५

'लक्षण' के खंड को पुनः देखें। उसके पश्चात् समकालीन पेंटिंग के निम्नांकित कथन पढ़कर तय करो कि लेखक किसका विवेचन कर रहा है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(अ) दृश्यमान लक्षण (ब) व्यक्तिगत लक्षण (स) सांस्कृतिक लक्षण अक्षरों का एकाधिक बार प्रयोग कर सकते हैं। उत्तर पृष्ठ ......पर देखें।

द्वित्तीय विश्वयुद्ध के बाद की चित्रकारी

१.——युद्ध का आघात, 'रोंगटे खड़े' करने वाले उसके प्रभाव, परमाणु विनाशलीला का बढ़ता हुआ भयंकर भय, तमाम दुनिया में फैला मानवीय दुःखों का महासागर, लोगों में जीवन की निरर्थकता या मूल्यहीनता का भाव—इन त्रासदियों ने अत्यंत संवेदनशील कलाकारों के मन में उस मशीनी सभ्यता की विरोधी भावना को और भड़का दिया था, जिसमें निरीह व्यक्ति का कोई स्थान नहीं है।

२. ——"अभिव्यक्तिवाद और प्रबल हो गया......तथा कला दृश्यमान जगत के और अधिक क्रांतिकारी गूढ़ार्थों की रचना में डटी रही।

३. —जैसे-जैसे यूरोपी-अमरीकी सभ्यता विश्व में फैलती जा रही है, मूल्यों का संकट बढ़ता जा रहा है—पारस्परिक मूल्य तथा संगठित आधुनिक जीवन के मूल्य बुरी तरह निंदित हुये हैं, उन्हें बहुत 'गलत' बताया जाता है।

४. ——"कला के प्राचीन-वर्ग समाप्त होते जा रहे हैं। चित्रकारी शिल्पकारी एवं वास्तुकला परस्पर विलीन हो गयी हैं और ये सभी कलाएं तकनीक के विकास से सीमित होती जा रही हैं।

५. ——"द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अभिव्यक्तिवादियों ने चित्रकारों के व्यक्तित्व, पहचान व करुणामयी भावों को उत्साहपूर्वक व्यक्त किया।

६. ——"पेंटिंग क्रिया" अमरीका की गूढ़ार्थी चित्रकारी की मुख्य विधि थी (क्योंकि वहां अन्य विधियां भी मौजूद हैं), इस पेंटिंग क्रिया में अभिव्यक्ति, रंग के छूने और गिरने से अंकित कूचिका-बिम्बों व अक्षरों से होती है।

७. (पोलक के लिये), कलाकार के समूचे अंतर्मुखी अर्थ की अभिव्यक्ति रहस्यमयी मनः शक्तियों से निर्देशित होती है, अतः उनकी दृष्टि में, ऐसी पेंटिंग के स्वरूप पर "अकस्मात' की छाप लगाना गलत होगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तर

अभ्यास-१

१. द	४. अ	७. अ
२. ब	५. ख	८. क
३. ग	६. स	९. घ
		१०. ङ

अभ्यास-२

'शैली-लाल' (सामने के पृष्ठ पर)

अभ्यास-३

१. **अ** क्योंकि इसी प्रकार कुछ व्यक्त किया जाता है
२. **स** क्योंकि इसका सम्बन्ध कलाकार और कलाकृतियों का निर्माण करने वाले मूल्यों से है
३. **ब** क्योंकि यह प्रतीक चिह्न है, यह राज्यों को भी व्यक्त करता है
४. **ब** क्योंकि यह एक पारम्परिक मुद्रा है
५. **स** क्योंकि यह एक धारणा है जो कला को प्रभावित करती है
६. **अ** क्योंकि ऐसे ही कोई वस्तु प्रदर्शित की जाती है
७. **ब** क्योंकि यह एक प्रतीक है
८. **अ** क्योंकि यह पैकेज तैयार करने का एक तरीका है
९. **स** क्योंकि यह वाक्य बताता है कि आधुनिक कला क्यों बदलती है, कैसे बदलती है या किस रूप में बदलती है यह नहीं बताता।

अभ्यास-४

१. ग	३. स	५. छ	७. ब
२. च	४. अ	६. द	८. ध

अभ्यास-५

१. **स** यह वाक्य व्यक्तिगत लक्षण की अपेक्षा सांस्कृतिक लक्षणों का उल्लेख करता है क्योंकि इसका प्रथमांश हमारे जीवन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को ढालने वाले और समकालीन माहौल के विचित्र-रूप से सत्य पक्षों से संबन्धित है। आगे बताया गया है कि यह पक्ष समाज के विशिष्ट वर्ग के कलाकार को कैसे प्रभावित करते हैं। पर यह नहीं बताया गया है कि यह पक्ष किस कलाकार के लिये खास महत्व रखता है।

२. अ इस वाक्यांश का केंद्रीय भाव बताता है कि आधुनिकता-वादी झुकाव का स्वरूप कैसे बदलता है, इस प्रकार यह पहले से अधिक सत्य दृश्य-लक्षणों का वर्णन करता है।

३. स कोई वस्तु कैसे दीखती है या कोई व्यक्ति विशेष कैसा है यह वाक्य नहीं बताता। यह हमारे समय के सामान्य सत्य विचित्रता (Phenomena) को व्यक्त करता है।

४. अ यह वाक्य जहाँ एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रवृत्ति की चर्चा करता है (तकनीकी विकास) वहीं दृश्यमान (Visual) कला की प्रवृत्ति के बारे में भी बताता है, इस कथन का प्रमाण दृश्यमान प्रकृति में मौजूद है।

५. स कदाचित् आपने यहाँ 'अ' लिखा हो क्योंकि विषम 'अभि-व्यक्तिवाद' है या 'ब' लिखा हो क्योंकि यह कलाकार का मनोविज्ञान बताता है। किन्तु यहाँ पर उस प्रचलित मनोविज्ञान पर गौर किया गया है जो अनेक कलाकृतियों के पीछे मौजूद है, और अनेक कलाकारों में विद्यमान है।

६. अ इस वाक्य में जो बताया गया है उसे आप स्पष्ट देख-जान सकते हैं।

७. ब यहाँ व्यक्ति-विशेष की धारणा का वर्णन है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

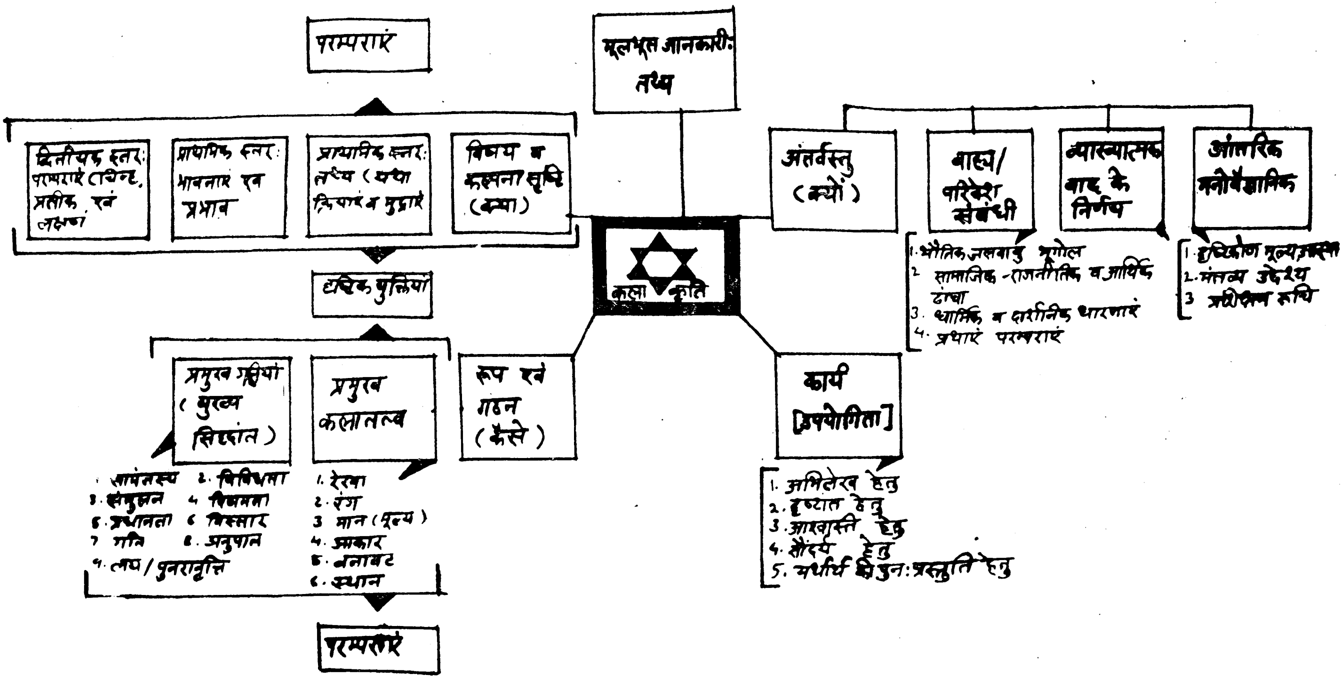

चित्र-१—चित्र में शैली व उसके अवयव दर्शाये गये हैं, ये सभी जानकारी के स्रोत हैं।

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

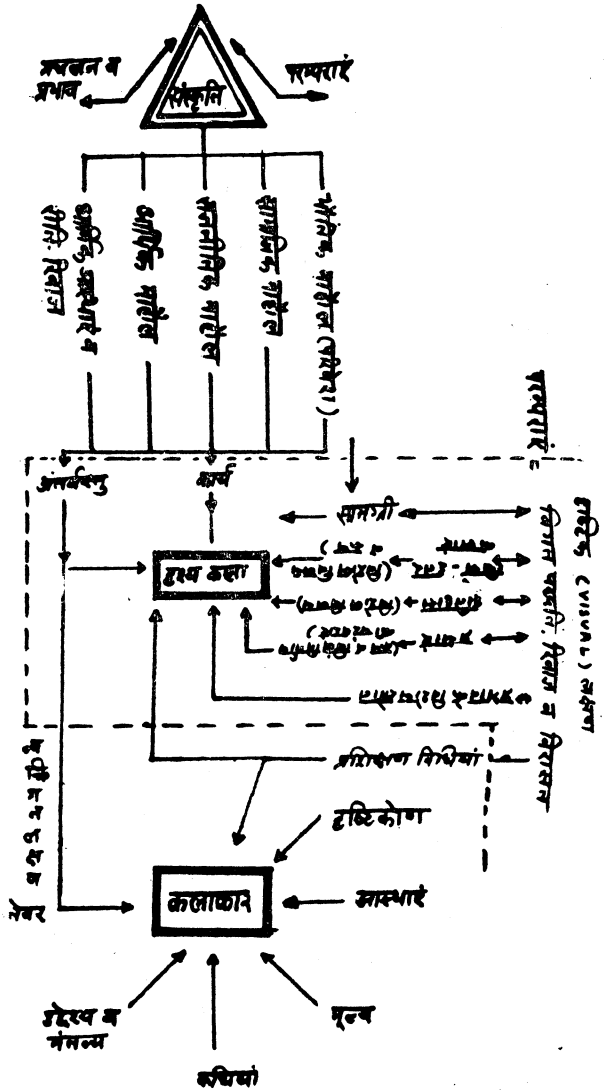

चित्र २—दृश्य, व्यक्तिगत व सांस्कृतिक लक्षणों के परिदृश्य

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

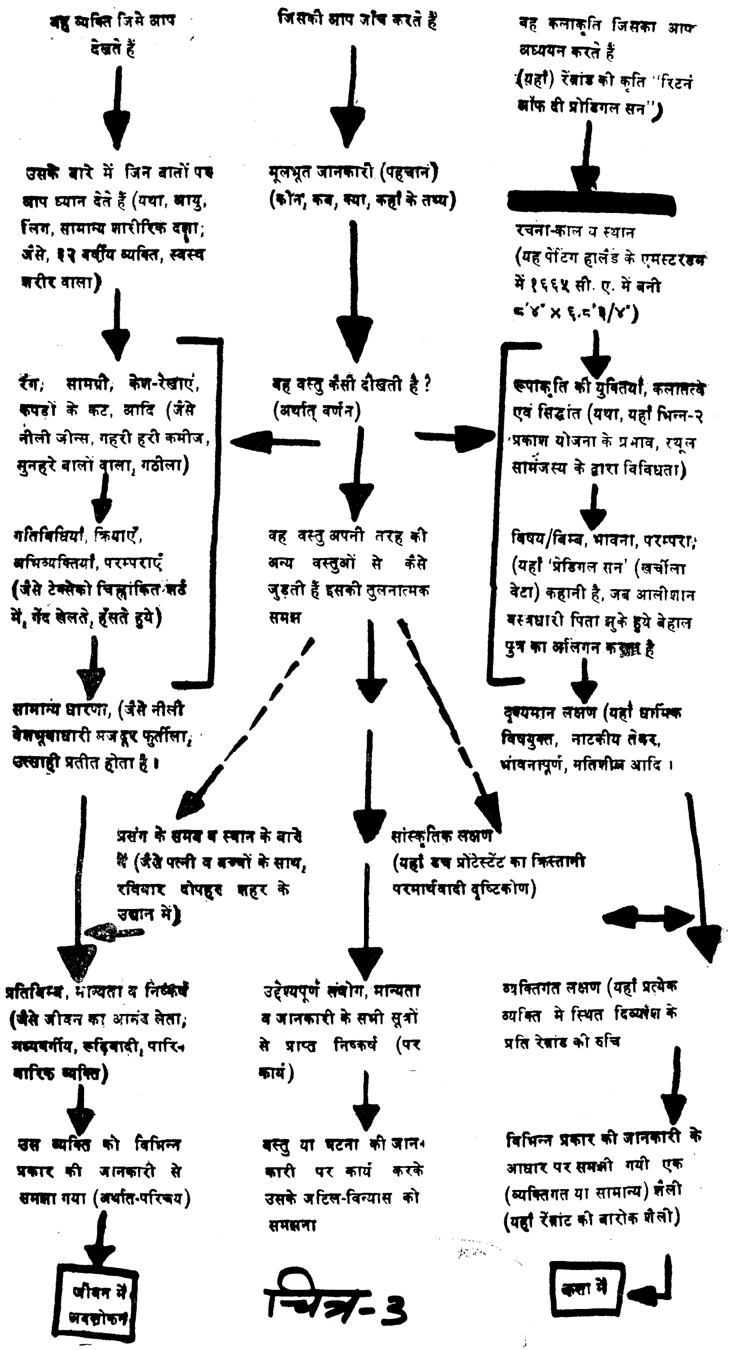

चित्र-3

कला-इतिहास की शोध-प्रक्रिया, व दैनिक अनुभव एवं विचार प्रक्रिया से सम्बन्ध

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

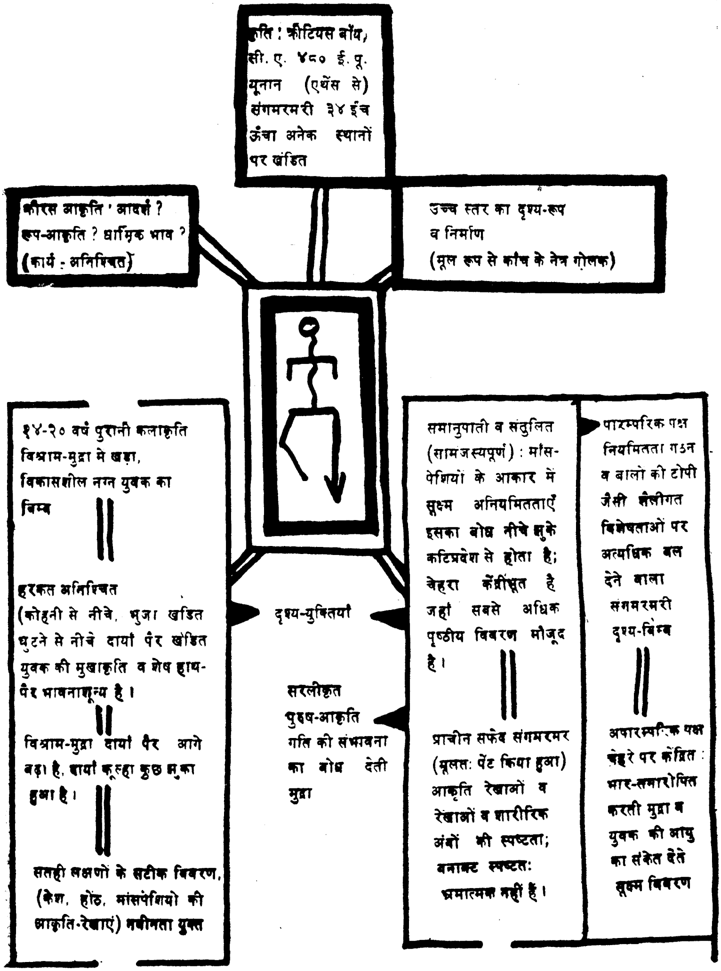

चित्र ४—कलाकृति का वर्णन करना : एक उदाहरण

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

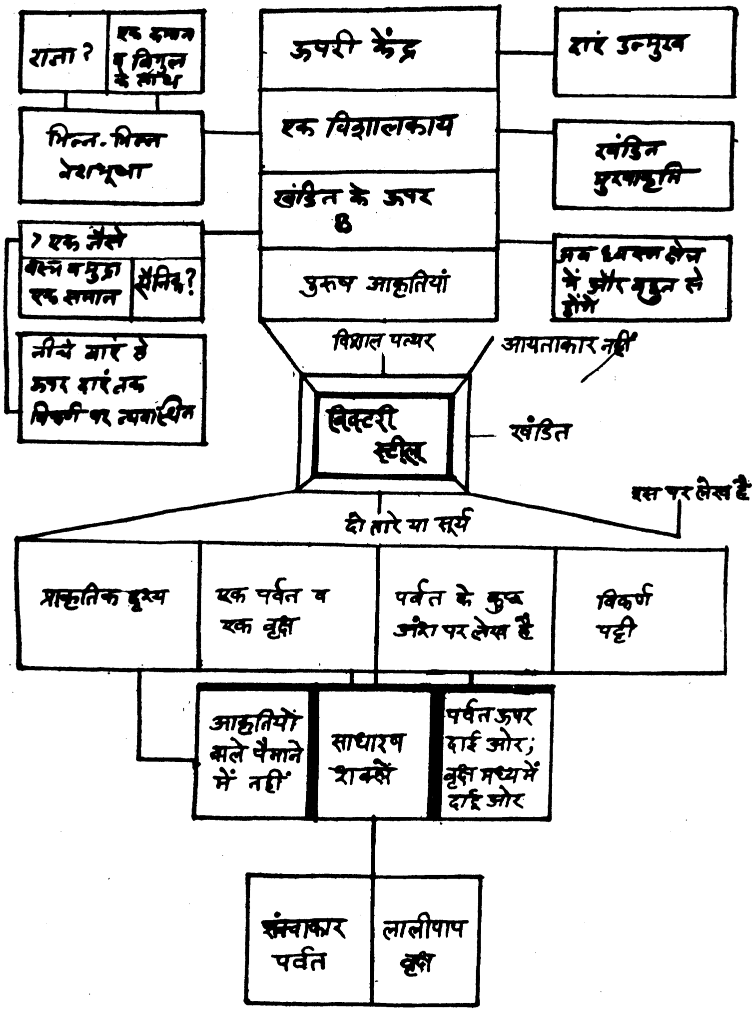

चित्र ५—'विक्टरी स्टील ऑफ नरम-सिन' का वर्णन कैसे करें ? इस प्रश्न के उत्तर हेतु 'अंशतः विकसित विषय-जाल'

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

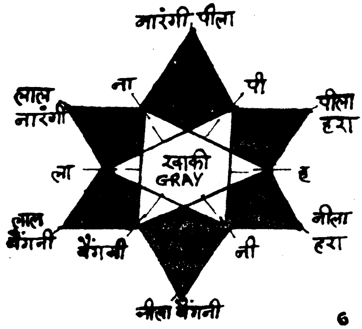

6

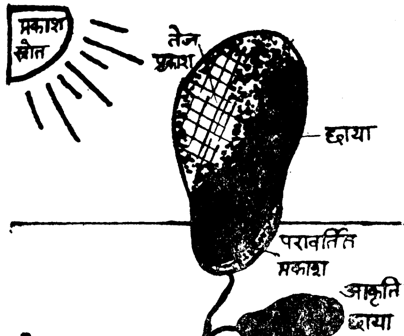

7

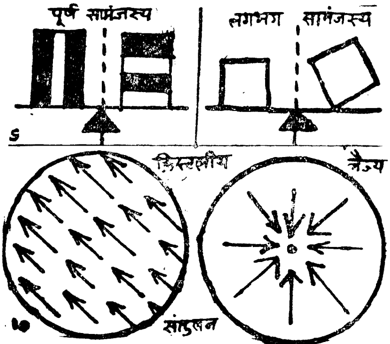

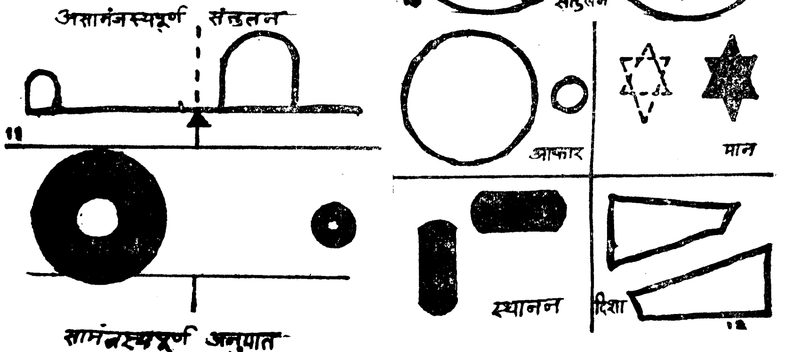

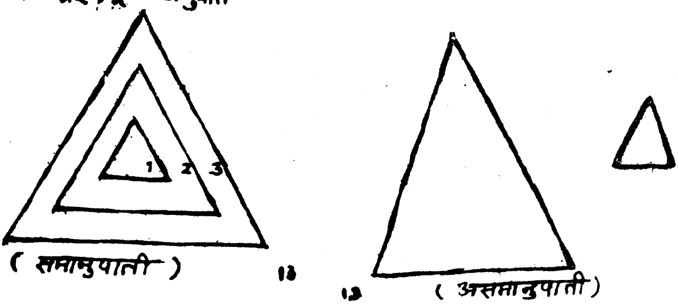

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

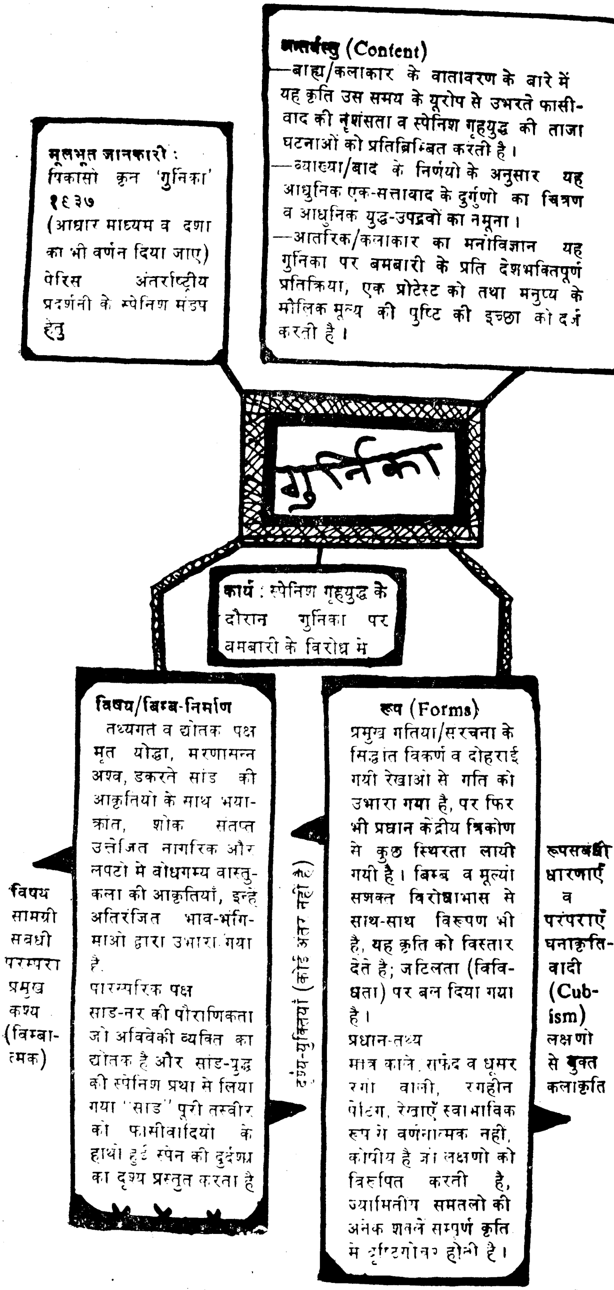

चित्र १४

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

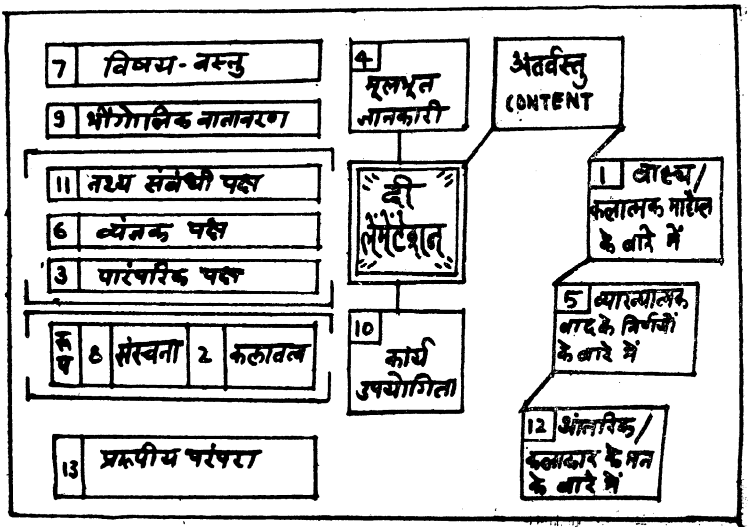

चित्र १५—'शैली-जाल' (STYLE-WEB)

(उत्तर)

●

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust